हिंदी

कक्षा 10

सत्र 2022–23

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।
विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉंच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

1. पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।
2. मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।
3. सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

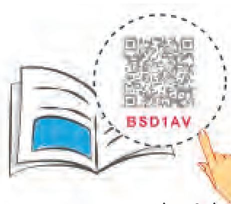

1. QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

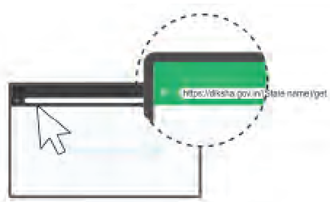

2. ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

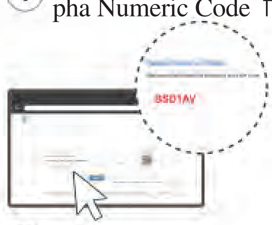

3. सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4. प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

नि:शुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष : 2022

© संचालक, एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

मार्गदर्शक : प्रो. रमा कान्त अग्निहोत्री, दिल्ली

सहयोग : विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर (राज.), अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन

समन्वयक : डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–समन्वयक : डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

लेखन समूह : दिनेश गौतम, डॉ. रचना दत्त, रामकृष्ण पुष्पकार, संजय पाण्डेय, सतीश उपाध्याय, कार्तिकेय शर्मा, पुष्पराज राणावत, अंजना राव, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

आवरण पृष्ठ एवं ले–आउट : रेखराज चौरागड़े, भवानी शंकर,

टंकण : शिवकुमार सोनी, सुरेश कुमार साहू

FZ9UB6

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा हमें बताती है कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल के बाहरी जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए। किताब और किताब के बाहर की दुनियां आपस में गुँथी हुई होनी चाहिए। आशा है कि यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जायेगा। इसी आलोक में नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर विकसित इस पुस्तक के विकास में इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि "शिक्षा का मतलब छत्तीसगढ़ के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही–सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक और प्रभावी प्रयास कर सकें तथा इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।"

इस पुस्तक में किशोरवय के शिक्षार्थियों की कल्पना शक्ति के विकास, उनकी गतिविधियों की सृजनशीलता, उनके सवाल करने और साथ–साथ मिलकर उत्तर खोजने के मौलिक अधिकार के समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गई है। निश्चय ही इसमें शिक्षार्थियों के साथ–साथ शिक्षकों के भी गहरे लगाव के साथ उतनी ही भूमिका अपेक्षित है। शिक्षार्थियों के प्रति संवेदनशीलता और समानानुभूति के साथ उन्हें पुस्तक में गहरी सक्रिय सहभागिता बरतनी होगी और इकाई परिचय, लेखकवृत्त, मूल पाठ, और उसके साथ संलग्न विविध आयाम से निर्मित प्रश्नों के सन्दर्भ में समुचित जागरूकता की दरकार स्वाभाविक है। हर पाठ के साथ अनेक तरह के अभ्यास हैं जिनसे शिक्षार्थियों की पाठ पर पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही उनके भीतर व्यापक जिज्ञासा भाव को प्रोत्साहन मिलेगा।

इस पुस्तक की परिकल्पना में अनेक महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है। भाषा और साहित्य के ढर्रे में बँधे घेरों को सकारात्मक स्तर पर तोड़ने और वृहत्तर अनुभव क्षेत्रों को उनसे जोड़ने के साथ–साथ वैविध्य पूर्ण पाठ श्रृंखला को उबाऊ होने से बचाने का प्रयत्न किया गया है। पाठ बोझिल न हों और सामयिक जीवन सन्दर्भों से जुड़कर शिक्षार्थियों के लिए रोचक बन जाएँ ताकि शिक्षार्थी उत्सुकता और आनन्द के साथ, तनाव रहित तरीके से उन्हें पढ़ते हुए विविध जानकारी प्राप्त करें और जानकारी का ज्ञान के सृजन में उपयोग कर सकें। इस प्रयत्न की सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि स्कूल शिक्षार्थियों को कल्पनाशील व रचनात्मक गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार के अवसर कितनी सहजता से उपलब्ध करा पाते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक पर काम करते हुए इस तथ्य को बार–बार ध्यान में रखा गया है कि शिक्षा के तमाम पहलुओं व अनुभवों से किनारा करते हुए पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृति से बाहर निकलने की जरूरत है। पाठगत अभ्यासों की विविधता (प्रश्नों, प्रवृतियों) से गुजरते हुए इसे महसूस किया जा सकता है साथ ही इस प्रयास को भी बल दिया जा सकता है कि किसी भी सृजन और पहल को आकार देने के लिए जरूरी है कि हम शिक्षार्थी को सीखने की हर प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार मानें और उसे प्रोत्साहित करें।

कक्षा 10 के छात्रों की उम्र उनकी रचनात्मकता, क्षमता एवं रुचि को ध्यान में रखते हुए यह प्रयास किया गया है कि इसके माध्यम से वे विविध साहित्यिक विधाओं की विशेषताओं से परिचित हों और उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी विकसित हो। यह भी प्रयत्न किया गया है कि जो साहित्यिक विधाएँ नवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित नहीं हो पाई हैं, वे इस पुस्तक में आ जाएँ। इस दृष्टि से इस पुस्तक में कविता, जीवनी, निबंध, आत्मकथा, व्यंग्य, रेखाचित्र और लघुकथा को स्थान दिया गया है। इनके अध्ययन से अपेक्षा की जाती है कि शिक्षार्थी इन विविध विधाओं की शैलीगत और भावगत विशेषताओं से परिचित होने के साथ–साथ परिवार, समाज और सांस्कृतिक परिवेश की पृष्ठभूमि पर रचित रचनाओं से भी परिचित हो सकेंगे। इन पाठों द्वारा मुख्य रूप से यह भी अपेक्षा है कि ये पाठ शिक्षार्थियों को रुचिकर लगेगी और उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाने के साथ–साथ विभिन्न जीवन मूल्यों के प्रति समझ भी उत्पन्न कर सकेगी। प्रत्येक पाठ के अंत में विविध स्वरूप में बोध–प्रश्न भी दिए गए हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से न केवल शिक्षार्थियों के बोध का मूल्यांकन हो सकेगा बल्कि पाठ में निहित विविध शैक्षणिक बिंदु भी उभरकर सामने आ सकेंगे।

इस पुस्तक के निर्माण में चयन और प्रस्तुति दोनों ही स्तरों पर यह कोशिश रही है कि हिंदी भाषा–साहित्य की शिक्षा अमूर्त न रह कर विद्यार्थी के जीवन, रुचि और अनुभव संसार का हिस्सा बन सकें। यह पुस्तक युवावस्था की दहलीज पर कदम रखते जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की संभावनाएँ तलाश रहे किशोर विद्यार्थियों के लिए बनाई गई है। हमारा प्रयास है कि भाषा–साहित्य की यह पुस्तक संभावनाएँ तलाशते शिक्षार्थियों के लिए सोच–विचार, विमर्श और अभिव्यक्ति का पुख्ता आधार तैयार करने में मदद करे।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

पुस्तक में पाठ के आरम्भ के साथ ही रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है, ताकि शिक्षार्थी रुचि लें तथा उनकी अन्य रचनाएँ खोजकर पढ़ सकें और रचनाकार के बारे में भी जानकारी हासिल कर सकें। आशा है शिक्षार्थियों की भाषिक तथा साहित्यिक रुचियों के विकास की दृष्टि से यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। शिक्षार्थी, पुस्तक और अध्यापक के बीच एक संवादात्मक रिश्ता कायम हो, पुस्तक इस दिशा में एक प्रयास है। यह प्रयास निरंतर बेहतर होता रहे इसके लिए आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझाव अपेक्षित हैं।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुक्रमणिका

इकाई / पाठ			विधा	लेखक	पृष्ठ संख्या
इकाई – 1		**प्रकृति व पर्यावरण**			**01–20**
पाठ 1.1	:	चंद्रगहना से लौटती बेर	(कविता)	केदारनाथ अग्रवाल	03–07
पाठ 1.2	:	नर्मदा का उद्गम : अमरकंटक	(लेख)	डॉ. श्रीराम परिहार	08–14
पाठ 1.3	:	बादल को घिरते देखा है	(कविता)	नागार्जुन	15–20
इकाई – 2		**समसामयिक मुद्दे**			**21–40**
पाठ 2.1	:	मैं मजदूर हूं	(आत्मकथा)	डॉ. भगवत शरण उपाध्याय	23–29
पाठ 2.2	:	जनतंत्र का जन्म	(कविता)	रामधारी सिंह दिनकर	30–35
पाठ 2.3	:	अपनी–अपनी बीमारी	(व्यंग्य)	हरिशंकर परसाई	36–40
इकाई – 3		**मानवीय अनुभूतियाँ**			**41–74**
पाठ 3.1	:	माटीवाली	कहानी	विद्यासागर नौटियाल	44–50
पाठ 3.2	:	कन्यादान	कविता	ऋतुराज	51–53
पाठ 3.3	:	घीसा	रेखाचित्र	महादेवी वर्मा	54–63
पाठ 3.4	:	पुरस्कार	कहानी	जयशंकर प्रसाद	64–74
इकाई – 4		**छत्तीसगढ़ –परिवेश, कला, संस्कृति एवं व्यक्तित्व**			**75–96**
पाठ 4.1	:	अमर शहीद वीरनारायण सिंह	जीवनवृत्त	डॉ. श्रीमती सुनीत मिश्र	77–83
पाठ 4.2	:	गृहप्रवेश	कविता	सतीश जायसवाल	84–88
पाठ 4.3	:	छत्तीसगढ़ की लोककलाएँ	लेख	दानेश्वर शर्मा	89–96
इकाई – 5		**छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य**			**97–114**
पाठ 5.1	:	ये जिनगी फेर चमक जाए	कविता	भगवती लाल सेन	99–101
पाठ 5.2	:	मरिया	कहानी	डॉ. परदेशी राम वर्मा	102–108
पाठ 5.3	:	शील के बरवै छंद	कविता	शेषनाथ शर्मा "शील"	109–114

DUHG67

इकाई – 6 जीवन–दर्शन				**115–129**
पाठ 6.1 :	जीवन का झरना	कविता	आरसी प्रसाद सिंह	117–119
पाठ 6.2 :	एक था पेड़ और एक था ठूँठ	निबंध	कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर	120–124
पाठ 6.3 :	साध	कविता	सुभद्रा कुमारी चौहान	125–128
इकाई – 7 विविध				**129–148**
पाठ 7.1 :	मध्ययुगीन काव्य			
7.1.1 :	मीरा बाई	पद	संकलित	131–133
7.1.2 :	संत दादू दयाल	पद	संकलित	134–137
पाठ 7.2 :	मैं लेखक कैसे बना	आत्मकथा	अमृतलाल नागर	138–142
पाठ 7.3 :	जेबकतरा	लघुकथा	ज्ञानप्रकाश विवेक	143–144
पाठ 7.4 :	गोधूलि	लघुकथा	एच.एच.मुनरो	145–148
इकाई – 8 हिन्दी साहित्य का इतिहास				**149–162**

bdkbZ 1 % i–fr o i;kZoj.k

ikB 1-1 % pnxguk ls ykSVrh cj

ikB 1-2 % uenk dk mnxe % vejdVd

ikB 1-3 % ckny dk f?kjrs n[kk g

b
dk
bZ

1 i–fr o i;koj.k

vkiu ikB;iLrd e *i–fr o i;koj.k* dh bdkb dk v/;;u fd;k FkkA bl bdkb e dkf'k'k dh xbZ Fkh fd ge i;koj.k d lj{k.k dh fn'kk e lkpuk 'k: dj vkj mlI {k= e viuh Hkfedk Hkh lfuf'pr djA bl o"k *i–fr o i;koj.k* e lfEefyr v/;;k;k dk ie[k mnn'; i–fr d lkUn;Z dh ljkguk o lkUn;Z ck/k fodflr djuk gA

pnxguk l ykVrh cj dfork e dfo u pnxguk uked LFkku l ykVr le; [krk e puk] lj lk o vylh dh ygygkrh Qly o vkl&ikl dh i–frd lnjrk ij eX/k gkdj mldk o.ku fd;k gA bl o.ku dh [kkfl;r ;g g fd blе i–frd n';ksa dk ekuohdj.k gvk gA tu lk/kkj.k d thou dh xgjh vkj 0;kid lonuk mudh dforkvk e e[kfjr gvk gA feVVh dh lx/k o feVVh d ifr vLFkk d Loj dfork e ;=&r= fc[kj iM gA

uenk dk mnxe % vejd.Vd ge NÙkhlx<&e/; in'k d lhekorh bykd e Qy lriMk&foU/; d ior in'k e y tkrk gA y[k e uenk d mnxe {k= o mlI tMh nUr dFkk dk cMh [kcljrh d lkFk lgt Hkk"kk e fijk;k x;k gA

i–fr d ifr ukxktu d ân; e fo'k"k vkd"k.k fo|eku FkkA **ckny dk f?kjr n[kk g** dfork e mUgku i–fr d vuie lkUn;Z dk o.ku fd;k gA ckny dk f?kjuk] iokIh if{k;k dk vkxeu] dhM&edkM pur gI vkfn d ek/;e l i–fr dk l{e fp=.k bl dfork e gvk gA ”

●●●

DV6C7U

ikB & 1·1

pUnxguk l ykVrh cj

dnkjukFk vxoky

thou ifjp;

dnkjukFk vxoky dk tUe mÙkj in'k d cknk fty d dekflu xko e lu 1911 e gvkA i'k l odhy jg dnkjukFk dk rRdkyhu lkfgfR;d vknkyuk l xgjk tMko jgkA ; ixfroknh /kkjk d ie[k dfo eku tkr gA tulkekU; dk l?k"k vkj i–fr lkn; mudh dforkvk dk e[; fo"k; jgk gA ***uhn d cknyj ;x dh xxkj Qy ugh jx cyr gj i[k vkj irokj*** *rFkk* ***dg dnkj [kjh&[kjh*** *vkfn mudh ie[k dkO;&–fr;k gA mUg lkfo;r yM ug: ijLdkj vkj lkfgR; vdkneh ijLdkj l lEekfur fd;k x;kA*

n[k vk;k pnxguk!
n[krk g n'; vc e
eM ij bl [kr dh cBk vdykA
,d chr d cjkcj
;g gjk fBxuk puk]
ck/k ejBk 'kh'k ij
NkV xykch Qy dk]
lt dj [kMk gA
ikl gh fey dj mxh g
chp e vylh gBhyh]
ng dh iryh] dej dh g yphyh]
uhy Qy Qy dk flj ij p<k dj
dg jgh g] tk N, ;g]
n ân; dk nku m ldkA
vkj ljlk dh u iNk &
gk x;h lc l l;kuh]

gkFk ihy dj fy; g]
C;kg&eMi e i/kkjh
Qkx xkrk ekl Qkxu]
vk x;k g vkt tlA
n[krk g e Lo;oj gk jgk g]
idfr dk vujkx & vpy fgy jgk g
bl fotu e]
nj 0;kikfjd uxj l
ie dh fi; Hkfe mitkÅ vf/kd gA
vkj ijk d ry g ,d ik[kj]
mB jgh bl e ygfj;k]
uhy ry e tk mxh g ?kkl Hkjh
y jgh og Hkh ygfj;kA
,d pknh dk cMk&lk xky [kEHkk
vk[k dk g pdedkrkA
g db iRFkj fdukj
ih jg pipki ikuh]
l;kl tku dc c>xh!
pi [kMk cxyk Mck, Vkx ty e]
n[kr gh ehu ppy
/;ku&funk R;kxrk g]
pV nckdj pkp e
uhp xy d Mkyrk g!
,d dky ekFk okyh prj fpfM;k
'or i[kk d >ikV ekj Qkju
VV iMrh g Hkj ty d ân; ij]
,d mtyh pVy eNyh
pkp ihyh e nck dj
nj mMrh g xxu e!
vk ;gh l &
Hkfe Åph g tgk l &
jy dh iVjh xb gA
Vu dk Vkbe ugh gA

e ;gk LoPNUn g]
tkuk ugh gA
fp=dV dh vux< pkMh
de Åph&Åph igkfM;k
nj fn'kkvk rd Qyh gA
ck> Hkfe ij
b/kj&m/kj jhok d iM
dkVnkj d:i [kM gA
lu iMrk g
ehBk&ehBk jl Vidrk
lXx dk Loj
V V V V(
lu iMrk g
ouLFkyh dk ân; phjrk]
mBrk&fxjrk]
lkjl dk Loj
fVjVk&fVjVk(
eu gkrk g &
mM tkÅ e
ij Qyk, lkjl d lx
tgk txy tkMh jgrh g
gj [kr e]
lPph ie&dgkuh lu y
pli&pliA

'kCnkFk

chr d cjkcj & ,d cfy'r dk uki ¼yxHkx 22-5 l-eh-½(**ejBk** & ixMh(**vujkx** & Lug] ie(**fotu** & futu(**vux<** & ik—frd(**pnxguk** & ,d xko dk uke(**vylh** & ,d frygu dk ik/kk(**Qkx** & gkyh d ekle e xk;k tku okyk ykdxhr(**pdedkrk** & pkf/k;krk] pdkpk/k ink djrk(**pVy** & prj] pkykd(**txy** & ;xy] nk(**jhok** & ,d iM tk ccy d tlk gkrk g(**gBhyh** & ftnhA

vH;kl

ikB ls

1- vyllh d eukHkkok dk o.ku dhft,\

2- fotu fdlh 0;kikfjd uxj ls D;k J"B g\

3- dky ekFkokyh fpfM;k fdl rjg ls eNyh idMrh g\

4- **ck/k ejBk 'kh'k ij** bl ifDr d ek/;e ls dfo D;k dguk pkgrk g\

5- **n[krk g e Lo;oj gk jgk g] i—fr dk vujkx vpy fgy jgk gA** bu ifDr;k e i—fr d fdl n'; dh vkj ldr fd;k x;k gA

6- ie dh fi; Hkfe dk vf/kd mitkÅ D;k crk;k x;k g\

7- fuEufyf[kr ifDr;k d HkkokFk fyf[k,&

¼d½ ,d pknh dk cMk&lk xky [kHkk
vk[k dk g pdedkrkA

¼[k½ lu iMrk g
ouLFkyh dk ân; phjrk
mBrk&fxjrk
lkjl dk LojA

ikB ls vkx

1- viu vkl&ikl d fdlh ik—frd LFky dk o.ku dhft,] ftld n'; vkidk bl ikB dk i<r le; ;kn vk tkr gA

2- ,d dkykgy Hkj] ?kuh vkcknh oky uxj rFkk 'kkr xkeh.k vpy dh ryuk dhft, vkj crkb, fd nkuk e dku&dku lh ckr vkidk ilnn g vkj dku&dku lh ukilnA viuh ilnxh vkj ukilnxh dk dkj.k Hkh fy[kr g, bl ,d rkfydk d ek/;e l n'kkb,A

3- *cxyk* lekt d fdl ox dk irhd g vkj mudh fdu fo'k"krkvk dk j[kkfdr djrk g\ vkt d lekt e ;g mnkgj.k fdruk iklfxd g\

Hkk"kk d ckj e

1- idfr dk vujkx & vpy fgy jgk g] tk ekuohdj.k dk mnkgj.k gA **ekuohdj.k vydkj**& tgk tM oLrvk ;k i–fr ij ekuuh; p"Vkvk dk vkjki fd;k tkrk g ogk ekuohdj.k vydkj gkrk gA ikB l ekuohdj.k vydkj d ,l gh vU; mnkgj.k fyf[k,A

DVP4B5

2- ikB e *gjk fBxuk puk*] *gBhyh vy lh*] *prj fpfM;k* vkfn fo'k"k.k;Dr 'kCnk dk i;kx fd;k x;k gA blh idkj vki viu vkl&ikl d dN ik/kk] if{k;k] Qyk ;k tho&tUrvk dk fdl rjg d fo'k"k.kk d lkFk iLrr djuk pkgxA ,l nl mnkgj.k nhft,A

ik;ktuk dk;

DVXZCS

1- i–fr d lnj fp=.k dh vU; dforkvk dk ldyu dj if<, vkj d{kk e lukb,A

2- fdlh ik–frd LFky d Hke.k dk ;kn djr g, ,d y[k r;kj dhft, vkj ml d{kk e lukb,A

3- dfo 'ke'kj cgknj flg }kjk fyf[kr dfork dk i< vkj lcg d tk n'; vkid eu e vk,] mud fp= cuk,A

m"kk

ikrr uHk Fkk cgr uhyk 'k[k tl
Hkkj dk uHk
jk[k l yhik gvk pkdk
¼vHkh xhyk iMk g½
cgr dkyh fly tjk&l yky dlj l
fd tl /ky x;h gk
LyV ij ;k yky [kfM;k pkd
ey nh gk fdlh u
uhy ty e ;k fdlh dh
xkj f>yfey ng
tl fgy jgh gkA
vkj---
tkn VVrk g bl m"kk dk vc
l;kn; gk jgk gA

ikB & 1-2

uenk dk mnxe % vejdVd

Mk- Jhjke ifjgkj

thou ifjp;

Mk- Jhjke ifjgkj dk tUe e/;in'k d [k.Mok ftyk d QQfj;k xko e lu 1952 e gvkA f'k{kk d {k= e vkiu ih-,p-Mh- ,o Mh- fyV dh mikf/k iklr dh gA lEifr& ikpk;] ek[kuyky prqosnh 'kk lqdh; Lukrdkrj dU;k egkfo|ky;] [k.Mok e dk;jr gA jk"Vh; fgUnh loh lgkCnh lEeku] lkjLor lEeku] fgekky; dyk ,o lkfgR; bR;kfn vud lEeku l vkidk lEekfur fd;k x;k gA

e[; dfr;k & *vkp vyko dh*] *v/kj e mEehn*] */ki dk volkn*] *ct rk o'kh] xt rk 'k[k*] *fBBy iy i[kjh*]*jlorh ckyk rk] *>jr Qy gjflxkj d*] glk dgk ijkru ckr*] *ckyh dk bfrgkl*] *Hk; d chp Hkjklk*] *pkdl jguk g*(*dg tx flxk(*jpukRedrk vkj mRrjijijk(*lLdfr lfyyk uenk*(*fuekMh lkfgR; dk bfrgkl] *ijEijk dk ijk[;ku*A

e/;in'k lLdr vdkneh d vke=.k ij bl ckj vejdVd dh lkjLor ;k=k dk l;kX; cukA vejdVd rk igy Hkh tkuk gvk Fkk] ij bl ckj **vk"kk<L; iFke fnol** d io nk fnu dk vk;ktu ;gk FkkA vkdk'k e e?k f?kj&f?kj dj >j jg FkA idfr ugk jgh FkhA ouLifr dh vk[kk e liu tkx jg FkA vkeouk dh dkfdy dk Loj ml o"kk e xhyk gk jgk FkkA og Loj tM&pru e Ukg&Nkg dh cn&cn Hkj jgk FkkA bu cnk d mRlo

e jl&jl vejdVd dk n[kuk fulx fufgr prU; l lk{kkRdkj djuk gA idfr d mRlo e Lo; dk mYykl dh Qgkj cuk nuk gA iFoh d egkep ij viu 0;fDrÙo dh y?kÙke bdkb d vFk [kktuk gA

ge ykx lcg&lcg i.MkjkM igpA ej fe= mn;ij fo'ofo|ky; d ikdr foHkkx d fo}ku ikè;kid Hkh bŸkQkd l ;gk fey x; tk blh vk;ktu e 'kkfey gku tk jg FkA ikuh cjl jgk FkkA ge i.MkjkM l vejdVd d fy, jokuk gkr gA i.MkjkM l vejdVd dk jkLrk l?ku ou ikUr l gkdj tkrk

gA vkj.;d lIkj e cjlr ikuh e xtjuk vPNk yx jgk FkkA ckny] ljb d Åp&Åp iMk dh Qufx;k ij :dr] ckr djr] crjl l vj.;koyh dk vkn djr vkj vkx c< tkr gA vejdVd igkM dk f'k[kj cgr nj l fn[kk;h nu yxrk gA fo/; vkj lriMk dk ;g leor foxg cMk ln'ku vkj eukgkjh gA bl edy dgr gA edy ior dh gh nkb Hk tk fo/;kpy vkj ckb lriMk gA bu nkuk iork d chp uenk fuukfnr vkj iokfgr gA fo/; vkj lriMk l cuh vtjh e uenk dk ty ygj&ygj gA bl ior dk eLrd io rd Qyk gA ;g viuh fojkVrk l lEi.k Hkkjr dk io l if'pe rd gjkiu vkj ikdfrdrk fn; g, gA

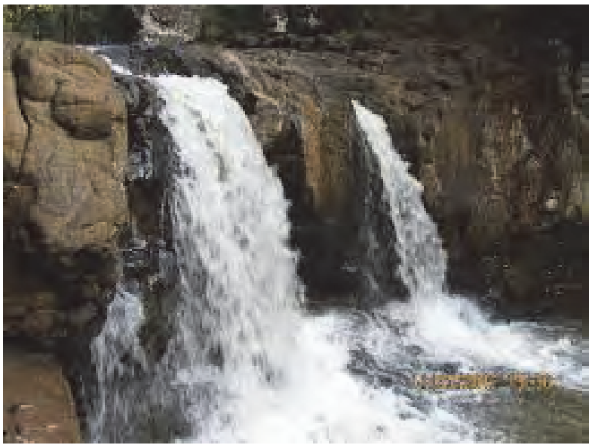

nj l nf"V iMrh g fd dkb jtr&/kkj vkdk'k l >j jgh gA pkjk rjQ gjk&Hkjk okuLifrd lIkj gA ,d ior viuh vpyrk vkj fo'okl e le) gA Åij vkleku e cknyk dh fN;kfNrkyh vkj èkekpkdMh eph gA ckny vleku gh cjl jgk gA vkj ,d ekVh ty/kkj Åij l uhp fxjr fn[kk;h n rk yxrk g /kjrh dh ikFkuk, Qyorh gku yxh gA ;g /kkjk lku dh gA ;g vejdVd dk ioh Hkkx g tk i.MkjkM l vkr le; fn[kk;h nrk gA 'kgMky ;k tcyij&fM.Mkjh ekx l vejdVd igpu ij ge bld if'pe Hkkx d ikdfrd lIkj dk n[ku dk l[k feyrk gA lku un gA lkueMk l fudydj ;g io e pyk tkrk gA xxk dh lHkh lgk;d ufn;k l vkx tkdj ;g xxk e feyrk gA lku d ty d }kjk vejdVd viuh tykTfy l; dk vkj io d len dk nrk gA uenk d ty&iokg d ek/;e l ;g viuh vknjkTfy if'pe d len dk nrk gA nkuk gh n'kk e vkj fn'kk e bld vklikl dh tehu ue gkrh gA ;g tehu dk xhykiu db&db thou dh èkMduk dk ikuh d jx n jgk gA

fdruh gh vkMh&frjNh lMd l pyr g, vejdVd igpA lku dh ;g >kj bl ekx d gj dk.k l fn[kk;h nrh gA vk[k ljb d iMk dh xk<h gfj;kyh ij vVdrh gA ou dh l?kurk ij vk'oLr gkrh gA fQj lku d lEekgu e Ql tkrh gA yEck ?kkV p<u ij ge vpkud Lo; dk vejdVd d ,dne lkfUu/; e ikr gA lku vk[kk l vk>y gk tkrk gA ckfj'k :d x;h gA vejdVd dh lery vkj jDrkHk Nfo l :c: gkr vkx c<r gA NkVh lh] fcYdy NkVh unh dk iryh /kkj d :i e NkV&l iy }kjk ikj djr gA fuxkg fdukj yx ckM ij vVd tkrh g& fy[kk g **uenk**A bruh NkVh] bruh iryh! ;gk cgr g, bl fy, fn[k jgh g fd cjlkr dk ekle gA vejdVd dk nljk gh :i lkeu vkrk gA dN edku gA efnj gA lrk d vkJe gA dk;ky; gA fuek.kk/khu tu efnj gA tu&thou gA ouokfl;k dk fu}U} thou gA Vkdfu;k e tkeu ydj ouokl h efgyk, cBh gA id vke d <j&d&<j gA ,d vtc 'kkfr gA dN feBkb dh] pk; dh ndku gA ukfj;y] i lkn] ekyk] dBh dh db ndku gA ykx xjhc gA uenk mUg lHkky g, gA vej d d.B l fudlrh ty/kkj d fdukj Hk;kud le; e c[kcj gkdj th jg gA

cl LV.M l io e ndkuk dh xyh l pyr g, vkx tku ij ,d ty d.M gA ;g uenk dk mnxe LFky gA d.M X;kjg dk.kh; gA LoPN vkj 'khry ty ygjk jgk gA d.M d pkjk vkj vklikl 20 efnj cu g, gA d.M iDdk cuk gA d.M fo'kky gA d.M d pkjk vkj iDdh lery txg cuk nh x;h gA e[; }kj Hkh fo'kky gA d.M d vklikl cu efnj e>ky vkdkj d gA d.M d io dh rjQ ,d NkVk lk efnj g ftle f'ko ifrf"Br gA vej'oj d d.B l gh uenk fudyh gA ;g d.M gh uenk dk vkfne lkr gA ty f'ko d d.B l fudydj d.M e ,df=r gkrk jgrk gA d.M d ckn uenk Hkfexr gkdj 5&6 fdykehVj nj if'pe e dfiy/kkjk d ikl idV gkrh gA uenk d.M e Mcdh yxkdj ru&eu dk rki 'keu dju dk i.; fy;k tk ldrk gA efnjk e itu&vpu] vkjrh&onu olk gh g] tlk ik;% uenk rV d vU; efnjk e gkrk gA uenk d.M dk ty vkj mldk l[knk;h Lo:i bl LFkku dk ,d egkunh dh ulfxd vkj fnO; tUe LFkyh gku dk xkjo nrk gA ;gk l jok vklen if'pe dh vkj cgrh pyh tkrh gA

jok eu e 'kk.k d fojg dk rki fy; g, if'pe dh vkj cg fudyrh gA mldh xfr e rki g vkj LoHkko e 'khryrk gA ,d ykd dFkk g& 'kk.k vkj uenk dh i.k; dFkkA tfgyk uked uenk dh l[kh u lc xMcM dj fn;kA uenk tfgyk dk nfr cukdj viuk i.k; ln'k 'kk.kHkn d ikl Hkt rh gA tfgyk 'kk.k d 0;fDrRo ij eXèk gk tkrh gA og uenk dk :i ydj lku dk oj.k dj yrh gA ;g ckr uenk dk irk pyrh g rk og ekj Økèk d mYV iko ykVdj if'pe dh vkj oxorh gkdj py iMrh gA pÍkuk dk rkMrh] igkMk dk fdukj djrh] mNyrh] mŸkky rjxk l jo djrh og cgrh gh pyh tkrh gA ihN eMdj fQj ugh n[krhA m/kj lku ¼'kk.k½ dk bl jgL; dk irk pyrk g rk og Hkh fojg lrIr gkdj vejdVd d mPp f'k[kj l Nykx yxk yrk gA io dh vkj fojg&fo/kj eu fy; cg fudyrk gA cgrk gh pyk tkrk gA dN nj tkdj tfgyk m l euk yrh gA m le fey tkrh gA m le lek tkrh gA yfdu uenk vkj lku nk ieh nk foijhr fn'kkvk e cg fudyr gA /kjrh dh d:.kk foxfyr gkdj uenk vkj lku d Lo:i e vtl cg jgh gA

ekb dh cfx;k lku vkj uenk dh cky&lyHk ØhMkvk dh Hkfe jgh gA og _f"k ekd.M; dh rikHkfe Hkh jgh gA vke rFkk ljb d iMk d vkxu e ;g cxhpk gA xycdkoyh d Qyk e ;gk uenk vkj lku dk ie vHkh Hkh f[kyk gvk gA ekb dh cfx;k e NkVk&lk tyd.M gA xycdkoyh dk {k= Hkh cgr FkkMk jg x;k gA ,d lk/k ;gk dfV;k e jgr gA rhFk ;kf=;k dh vk[kk e xycdkoyh dk vd Mkydj vk[kk dh mel nj djr gA nf"V dk /k/kydk NkVr gA yxrk g uenk vkj lku dk i.k;

xycdkoyh d Qyk d ek/;e l txr dh nf"V dh riu vHkh rd gj jgk gA thou dk rki rk nkuk viu&viu ty l 'kfer dj gh jg gA /kjrh d l[k fdukjk dk glh ckV jg gA mRlo yVk jg gA tfgyk d eu dh [kkV vkj lku l mldk fookg gku dh [kcj yxr gh uenk ekb dh cfx;k e Hkfexr gkdj if'pe fn'kk e tkdj nk&rhu fdykehVj ckn lrg ij vkrh gA dfiy /kkjk d ikl ty dk lkrk fn[kk;h nrk gA

;g ilx ekuoh; lnHk fy; g, gA ykd u ufn;k dk dgh ekuoh; vkj dgh noh x.kk l efMr fd;k gA ;g ykd dh ekuoh; nf"V vkj 0;ogkj d idfr rd Qyko dk lQy gA ijUr rVLFk :i l n[ku ij Hkh vueku yxk;k tk ldrk g fd ekb dh cfx;k l ijkru le; e tylkr cgrk jgk gkxkA og ty /kkjk gh oreku uenk d.M rd vkrh gkxhA vkj fQj if'pe fn'kk e vkx c<dj cgrh pyh x;h gkxhA le; d ifjoru vkj vejdVd dh okuLifrd lEink fojy gku l bl lkr e Hkh vUrj vk;kA ekb dh cfx;k l ydj uenk d.M rd dh /kkjk l[k x;hA uenk d.M l vkx nk rhu fdykehVj rd Hkh ;gh fLFkfr jgh gkxhA uenk d.M l vejdVd dk ,d f'k[kj vkj vklikl dh Hkfe Åph gA mlh dk ty fujUrj uenk d.M e vkrk gA vejdVd u viuh vkRek l uenk dk tUe fn;k g vkj mld ik.kk d jl l uenk e vukfn dky l] iy;dky l ty&thou fuHklr gk jgk gA vejd.Vd u uenk dk tUe ndj Hkkjr dk ojnku fn;k gA ;g vej'oj f'ko dh vejd.Vd d ek/;e l /kjrh dk feyh dik gA f'ko&dU;k uenk ty d :i e ver /kkj gA

lkueMk lku dk mnxe gA ;gk Hkh ,d NkVk&lk iDdk d.M cuk fn;k gA igy ugh FkkA d.M l iryh ty&/kkjk fudydj cg jgh g vkj ior d Åij l cgdj vkrh gb ekVh ty&/kkj e feydj lku dk un dk Lo:i nrh gA FkkMh nj tkdj ldMk QhV uhp fxjdj o{kk e vn';&lh gk tkrh gA ;g lku ij igyk iikr gA ;gh iikr nj&nj l fn[kk;h nrk gA lkueMk d d.M e J)kyqtuk }kjk Mky x; flDd iM gA lku vejd.Vd dk xo gA

blh rjg uenk d mnxe LFky ij cuk ty&d.M Hkh cgr igy iDdk ugh FkkA viu xko e cM&c<k l vkj ifjØekokfl;k l luk g fd vejd.Vd e ekb jok ckl d fHkM e l fudyh gA cMk gvk] ;gk vk;k rk ,lk dN ughA ckl d fHkM l fudyu okyh ckr vHkh Hkh ftKklk cuh gA yxrk g ;gk rc vkenj¶r ugh jgh gkxhA idfr viu fulx ij ckj&ckj fugky gkdj xo djrh jgh gkxhA lhe.V vkj ddjhV l ufn;k d mnxek dh ?kjk cUnh 'k: ugh gb gkxh] rc cgr igy ckl d fHkM ;gk jg gkxA mue l uenk dk tylkr fudyrk jgk gkxkA ckl d fHkMk dk lkQ djd d.M dk fuek.k gvk gk ;k ikdfrd fLFkfr;k d cnyu vkj ckl ouk d dVu l ckl dk fHkMk lekIr gk x;k gkA tk Hkh gk vejd.Vd d ?kj tUe ydj uenk u lf"V dk lkgj xku dk volj t :j fn;k gA uenk thou mRl dk pje vkj vej Qy gA

uenk d.M l yxHkx 6 fdykehVj nj dfiy _f"k dh riL;k Hkfe gA uenk ;gk yxHkx 150 QhV Åij l fxjrh gA ;g uenk ij igyk iikr gA fdruh vnHkr ckr g fd vejd.Vd d io vkj if'pe e lku rFkk uenk nkuk gh gA dfiy /kkjk l vkx uenk iRFkjk ij fcNyrh gb vkx c<rh gA FkkMh nj ij gh n/k /kkjk gA ;gk ij uenk vud /kkjkvk e cVdj iRFkjk ij l cgrh gA Åij l uhp dh vkj rt

cgrh gA mlds dkj.k ikuh nf/k;k gk tkrk gA ;gk l gh uenk dk ty [kEHkkr dh [kkMh rd n/k gh ekuk tkrk gA tuekul uenk dk ek ekurk g vkj mlds ikuh dk n/k dh rjg ihdj gh ikf"kr vkj thfor gA n/k /kkjk d ckn futu vkj l?ku ouikUr l uenk dh ;k=k vkjEHk gkrh gA

dfiy /kkjk d ikl Åij cBh tkeu cprh ouokl h L=h l e iNrk g fd vHkh rk Ok"kk dk ekl e g] blfy, ;gk uenk e ikuh gA iikr e ikuh fxj jgk gA D;k xeh e ;gk uenk l[k tkrh g\ mlus L=h dk lgt mŸkj Fkk & *uenk dHkh l[krh g ckcA uenk l[k tk;xh rk ge ykx dS s cp ldx\ uenk l[k tk;xh] rk lLdfr l[k tk;xhA /kjrh dk jl l[k tk;xkA idfr dk LokfHkeku [kre gk tk;xkA uenk vuojr vkj vfojke iokgeku g] blfy, lLdfr thfor gA eu"; xfre; gA yfdu dfiy /kkjk d ikl d vkdk'k ekx l rkj ij yVd&yVd dj Vkfy;k e vejd.Vd l [kfut ¼,Y;ehfu;e½ cksDlkbV dk tk jgk gA vejd.Vd dk [kk[kyk fd;k tk jgk gA uenk vkj lku d mnxe ij ;g vfoodi.k vkj v/kk igkj gA

vejd.Bh uenk dk ;g {k= nok vkj eu tk] feFkdk vkj ykddFkkvk] _f"k;k vkj oreku d jpukdkjk dk viu lUnHkk e lek; g, gA dkfynkl u bl vkedV dgk gA fdlh le; e ;g lepk ior vke r:vk l vkPNkfnr jgk gkxkA bl le; rk vke d iM ;gk fojy gh gA lkueMk vkj ekb dh cfx;k d ikl dN ?ku vke d o{k vo'; cp gA ij ;g vo'; g fd ;gk d txyk e vke vkt Hkh txy&txy ik;s tkr gA ;g Øe iokŸkj e ljxtk fty d ouk rd vkj if'pe e lriMk dh jkuh ipe<h rd pyk vk;k gA cknyk dk tk :i vejdVd e n[kk og vnHkr FkkA o"kk lcg l gh Fke x;h FkhA pkj ct d vklikl n[kr&n[kr v/kjk lk Nk x;k A ,dne ?kuk&?kuk /kvk&/kvk lk rju yxk gA uje vkj vkn :igy cknyk dh pknj u lep ou] ior vkj lcdk <d fy;kA cknyk gekj ikl vk x; gA fcLrj ij] dej e] lc txg Qy x; gA ,d Lif'kr vuHko lEiUu fdUr idM e u vku okyh vuHkfr dk rjrk lk ekj vklikl FkkA ge dejk e] nkykuk e gkr g, Hkh cknyk d leUnj e rjr g, /kjrh ij py jg FkA thou e ,lk ikjn'kh vkj jkfey ckny&vuHko igyh ckj gvkA ?ku';ke gekj ikl FkA yfdu idM l ckgj FkA ?ku';ke dgk] dc] fdldh idM e lgt vk ik; g\ lcg gkr gh ekle lkQ FkkA vejdVd Luku dj fulx dh vH;Fkuk e fujr&lk [kMk FkkA mldh vtjh dk ty uenk cudj cg jgk gA

'kCnkFk

iikr & >juk(**fulx** & i—fr@Lo:i **prU;** & lfØ;rk(**fuukfnr** & vkokt djrh gb(**jDrkHk** & yky d.k okyh(**fu}U}** & ef'dy jfgr(**lUrlr** & n%[kh(**vtl** & vuojr@fujUrj(**fu%lr** & mRiUu gkuk(**vkenj¶r** & vkuk&tkuk(**cks dk fHkMk** & cks dk >kMh leg(**jkfey** & jk,nkj(**vH;Fkuk** & fuonu djukA

vH;kl

ikB ls

1- fo/; vkj lriMk dk y[kd u fdl :i e fpf=r fd;k g\

2- ouokfl;k dk thou dlk gkrk g\

3- vej'oj d dB l gh uenk fudyh g& ;g ifDr fdl lnHk e dgh xb g\

4- **vejdVd u viuh vkRek l uenk dk tUe fn;k g** ikB d vulkj Li"V dhft,A

5- fuEukfdr dk vk'k; Li"V dhft, &

¼d½ nj l nf"V iMrh g fd dkb jtr /kkj vkdk'k l >j jgh gA pkjk rjQ gjk&Hkjk okuLifrd llkj g] ,d rjQ viuh vpyrk vkj fo'okl e le) g] Åij vkleku e cknyk dh fN;k fNrkyh vkj /kek pkdMh eph gA

¼[k½ vejdBh uenk dk ;g {k= nok vkj eutk] feFkdk vkj ykd dFkkvk] _f"k;k vkj oreku d jpukdkjk dk viu lnHkk e lek, g, gA dkfynkl u bl vkedV dgk gA

6- uenk l[k tk;xh rk ge ykx dl cp ldx\ ouoklh L=h }kjk ; ckr D;k dgh x;h\

7- fVIi.kh fyf[k,&

¼d½ lkueMk ¼[k½ vkedV ¼x½ edy ¼?k½ ekbZ dh cfx;k

ikB ls vkx

1- uenk unh ykxk d thou dk dl [k'kgky cukrh g\

2- **uenk dk mnxe ¼ vejdVd** ikB e of.kr ulfxd lkn; dk viu 'kCnk e 0;Dr dhft,A

3- **vejdVd u uenk dk tUe ndj Hkkjr dk ojnku fn;k gA** ,lk D;k dgk x;k g\ fopkj fyf[k,A

4- vfoodi.k o v/kk/k/k [kuu l vejdVd {k= d ik—frd i;koj.k dk fdl idkj dk udlku gk jgk g\ tkudkjh tVkdj fyf[k,\

Hkk"kk d ckj e

1- ikB e db txg x.kokpd fo'k"k.kk dk i;kx fd;k x;k g&

t l &ckny ljb d Åp&Åp iMk dh Qufx;k ij jgr vejdVd dh lery vkj jDrkHk Nfo l :c: gkr vkx c<r gA

ifDr e *Åp&Åp* 'kCn iMk dk x.k crk jgk g rFkk *jDrkHk* 'kCn Nfo dh fo'k"krk crk jgk gA bl idkj ikB e vk, fo'k"k.kk dk <<dj fyf[k, ¼tk 'kCn fdlh 0;fDr ;k oLr d x.k] nk"k vkfn dk ckèk djk,] x.kokpd fo'k"k.k dgykrk g½A

2- fdlh ikdfrd LFky dh fo'k"krkvk dk crkr g, viu fe= dk i= fyf[k,A

3- bu okD;k dk /;ku l if<,&

¼d½ vejdVd rk igy Hkh tkuk gvk FkkA

¼[k½ og Hkh fojg lUrIr gkdj vejdVd d mPp f'k[kj l Nykx yxk yrk gA

¼x½ vej'oj d dB l gh uenk fudyh gA

mi;Dr rhuk okD;k e i;Dr gkuoky v0;; *rk*] *Hkh* ,o *gh* 'kCn okD; e ftu 'kCnk d ckn yxr g mud vFk e fo'k"k idkj dk cy yk nr gA bu 'kCnk dk **fuikr** dgk tkrk gA

rk] *Hkh* ,o *gh* 'kCnk dk i;kx djr g, nk&nk okD; cukb,] vkj iR;d d ckj e ;g Hkh Li"V dhft, fd fdu fo'k"k vFkk e mudk i;kx gkrk gA

ik;ktuk dk;l

1- ikB e 'kk.k ,o uenk dh ykd dFkk dk mYy[k gA ,lh gh vU; ufn;k l lcf/kr ykd dFkkvk dk irk dhft, ,o viu f'k{kd l ppk dhft,!

ikB & 1-3

DX9EL1

ckny dk f?kjr n[kk g

ukxktu

thou ifjp;

fgUnh vkj efFkyh d ie[k y[kd o dfo ukxktu dk tUe 30 tu 1911 dk e/kcuh] fcgkj d lry[kk xko e gvkA mudk vlyh uke o|ukFk feJ Fkk ijr fgnh lkfgR; e mUgku ukxktu rFkk efFkyh e *;k=h* miuke l jpuk, dhA [kfrgj ifjo'k e iy&c< ukxktu dh vkjfHkd f'k{kk lL—r e gb rFkk vkx mUgku Lok/;k; i)fr l gh f'k{kk i.k dhA mUgku yxHkx lHkh fo/kkvk e fy[kkA mUgku ,d ntu dfork lxg] nk [k.M dkO; rFkk N% l vf/kd miU;kl fy[kA bue l dfork lxg& ***viu [kr e] ;xèkkjk] lrjx i[kk okyh] rkykc dh eNfy;k] jRuxHkk] miU;kl& jfrukFk dh pkph] cypuek] u;h ikèk] dHkhikd*** vkfn efFkyh jpuk,& ***fp=k] i=ghu uXu xkN*** ¼dfork lxg½] ***ikjk] uorfj;k*** ¼miU;kl½ vkfn ie[k jgh gA bld vykok cky lkfgR; o ckXyk jpuk, Hkh dkQh pfpr gA 1965 e mUg lkfgR; vdkneh ijLdkj l lEekfur fd;k x;kA 5 uoEcj 1998 dk mudh eR; gk xbA

vey /koyfxfj d f'k[kjk ij
ckny dk f?kjr n[kk gA
NkV&NkV ekrh tl
mld 'khry rfgu d.kk dk
ekul jkoj d mu Lof.ke
deyk ij fxjr n[kk g
ckny dk f?kjr n[kk gA

rx&fgeky; d d/k ij
NkVh&cMh db >hy g
mud ';key&uhy lfyy e
lery n'kk l vk&vkdj
ikol dh Åel l vkdy

frDr&e/kj fclrr [kktr
glk dk frjr n[kk g
ckny dk f?kjr n[kk gA

_r clr dk lqiHkkr Fkk
en&en Fkk vfuy cg jgk
ckyk:.k dh en fdj.k Fkh
vxy&cxy Lo.kkHk f'k[kj Fk
,d&nlj l fojfgr gk
vyx&vyx jgdj gh ftudk
lkjh jkr fcrkuh gkrh
fu'kdky d fpj&vfHk'kkfir
ccl mu pdok&pdb dk
cn gvk Ønu] fQj mue
ml egku ljoj d rhj
'kokyk dh gjh njh ij
i.k; dyg fNMr n[kk g
ckny dk f?kjr n[kk gA

nxe cQkuh ?kkVh e
'kr&lgL= QV Åpkb ij
vy[k ukfHk l mBu oky
fut d gh mUeknd ifjey
d ihN /kkfor gk&gkdj
rjy&r:.k dLrjh ex dk
viu ij fp<r n[kk gA
ckny dk f?kjr n[kk gA

'kCnkFk

vey & fuey(**/koy** & 'or(**f'k[kj** & pkVh(**rfgu** & vkl(**ckyk:.k** & Åxrk gvk lj t(**';key** & –".k o.k(**uhy lfyy** & uhy jx dk ikuh(**fclrr** & dhM&edkM(**en** & dkey(**fojfgr** & fojg l ihfMr(**vfHk'kfir** & ft l 'kki feyk gk(**Ønu** & n{[k Hkjk :nu(**nxe** & tgk dfBukb l igpk tk,(**vy[k** & ft l n[kk uk tk l d(**ifjey** & [k'kc] lx/kA

vH;kl

ikB l

1- ekuljkoj d dey dk Lof.ke dey dgu dk D;k vk'k; g\

2- *ckny dk f?kjr n[kk g* dfork d i–fr fp=.k dk viu 'kCnk e fyf[k,A

3- dfo pdok&pdb }kjk fdu eukHkkok dk dfork e crkuk pkgr g\

4- dfo u dLrjh ex dk mYy[k fdl lnHk e fd;k g\

5- Hkko Li"V dhft,&

¼d½ _r clr dk liHkkr Fkk
en&en Fkk vfuy cg jgk
ckyk:.k dh en fdj.k Fkh
vxy&cxy Lo.kkHk f'k[kj Fk

¼[k½ nxe cQkuh ?kkVh e
'kr&lgL= QV Åpkb ij
vy[k ukfHk l mBu oky
fut d gh mUeknd ifjey

ikB l vkx

1- *ckny dk f?kjr n[kk g* dfork e Åxr g, l; vkj mlls le; d ik–frd n'; dk fp=.k gvk gA mlh idkj vLr gkr l; d l/;kdkyhu n'; ij leg e cBdj pkj&N% ifDr;k dh dfork jpuk dhft,A

2- ;gk¡ l;dkr f=ikBh *fujkyk* th dh dfork *lf[k oLr vk;k* dk dN v'k fn;k tk jgk gA cl r _r e i–fr fdl idkj dk :i /kkj.k djrh g\ ifDr;k d vk/kkj ij mld lkn; dk o.ku dhft ,A

lf[k olr vk;k

Hkjk g"k ou d eu

uokRd"k Nk;kA

fdly;&oluk uoo;&yfrdk

feyh e/kj fi;&mj r:&ifrdk

e/ki&oUn cUnh

fid Loj uHk lj lk;kA

yrk&edy&gkj&xU/k&Hkkj Hkj

ogh iou cn eUn eUnrj

tkxh u;uk e ou&

;kou dh ek;kA

3- dfork e iokl h if{k;k dk mYy[k fd;k x;k gA irk dhft, ekl e d fdl cnyko d dkj.k ifro"k iokl h i{kh vudy tyok; d fy, nj n'k l vkr g\ lkFk gh ;g Kkr dhft, fd Hkkjr e iokl h i{kh dgk&dgk l vkr g] fdru le; rd Bgjr g vkj dc ykVr g\

Hkk"kk foLrkj

1- vfuy] vuy tl ;Xe 'kCn] Jfr lefHkUukFkd 'kCn dgykr gA ,l gh luu e leku ijr fHkUu vFk oky dN ;Xe 'kCn fn, tk jg g %&

v'k & fgLlk	vfHkjke & lUnj
vl & d/kk	vfojke & yxkrkj
vi{kk & bPNk	
mi{kk & fujknj	

vki Hkh ,l ;Xe 'kCn [kkst ,o mld vFk irk djA

2- dfork e *vey*] *lery*] *liHkkr*] *vfHk'kkfir*] *nxe*] *mUeknd* vkfn 'kCn vk; gA

¼d½ mi;Dr 'kCnk e fufgr milxk dk vyx dhft, ;Fkk & v $ eyA

¼[k½ bu milxk d ;kx ¼ey½ l cu ikp&ikp vU; 'kCnk dk fyf[k,A

ik;k tuk&dk;

1- fo|ky; d iLrdky; l i—fr&fp=.k dh vU; J"B dforkvk dk ldyu dhft, vkj dforkvk e fufgr i—fr d lkn;l dk viu 'kCnk e 0;Dr dhft,A

2- ek[ku yky pronh dh dfork& *nck d njckj e* e i—fr d eukje n';k dk c[kch fp=.k gvk gA bl Hkh if<;A

EA6F5V

D;k vkdk'k mrj vk;k g

nck d njckj e

uhyh Hkfe gjh gk vkb

bl fdj.kk d Tokj e

D;k n[k r:vk dk mud

Qy yky vxkj g]

ou d fotu fHk[kkjh u

ol/kk e gkFk ilkj g

uD'kk mrj x;k g] cyk

dh vyeLr tokuh dk

;) Buk] ekrh dh yfM;k l

nck d ikuh dk!

re u uR; dj mBk e;jh
nck dh gfj;kyh ij
gl rjl [kk, ml eDrk
cku oky ekyh ij
Åpkb ;k fQly iMh g
uhpkb d l;kj e
D;k vkdk'k mrj vk;k g
nck d njckj e\

cky fookg fu"k/k vf/kfu;e

cky fookg ij jkd yxku gr 1929 e ,d vf/kfu;e ikfjr gvk Fkk ft l ^'kkjnk ,DV* d uke l tkuk tkrk gA ;g vf/kfu;e iHkkoh ugh gvk vr% 1978 e bl e l'kk/ku fd;k x;k] blh l'kkf/kr vf/kfu;e dk ^'kkjnk cky fookg fujk/kd vf/kfu;e d uke l tkrk gA 2006 e ,d ckj fQj io d vf/kfu;ek l vf/kd iHkko'kkyh cky fookg fu"k/k vf/kfu;e cuk tk 01 uoEcj 2007 e ykx gvkA ;g vf/kfu;e cky&fookg dk l[rh l ifrcf/kr djrk gA bl vf/kfu;e d vuljk fookg d fy, yMdh dh me 18 o"k rFkk yMd dh me 21 o"k l de u gkA fu;e dh vogyuk gku dh fLFkfr e dBkj dk;okgh dk iko/kku gA bruk gh ugh cky&fookg gku dh fLFkfr e lcf/kr ¼cPPkk@cPph½ 0k;Ld gku d nk lky d vnj viuh bPNk l viu cky&fookg dk vo| ?kkf"kr dj ldrk g] fdUr ;g dkuu bLyke /kekoyfEc;k ij ykx ugh gkrkA

,lk ekuuk g fd cky&fookg fdlh cPp dk vPN LokLF;] ik"k.k vkj f'k{kk d vf/kdkj l ofpr djrk g] lkFk gh de me e fookg l yMd vkj yMfd;k nkuk ij 'kkjhfjd ckf)d eukoKkfud vkj Hkkoukred iHkko iMrk g] 0;fDrRo dk fodkl lgh <x l ugh gk ikrkA de me e fookg d dkj.k yMfd;k dk fglk] n0;ogkj vkj mRihMu dk lkeuk djuk iMrk gA

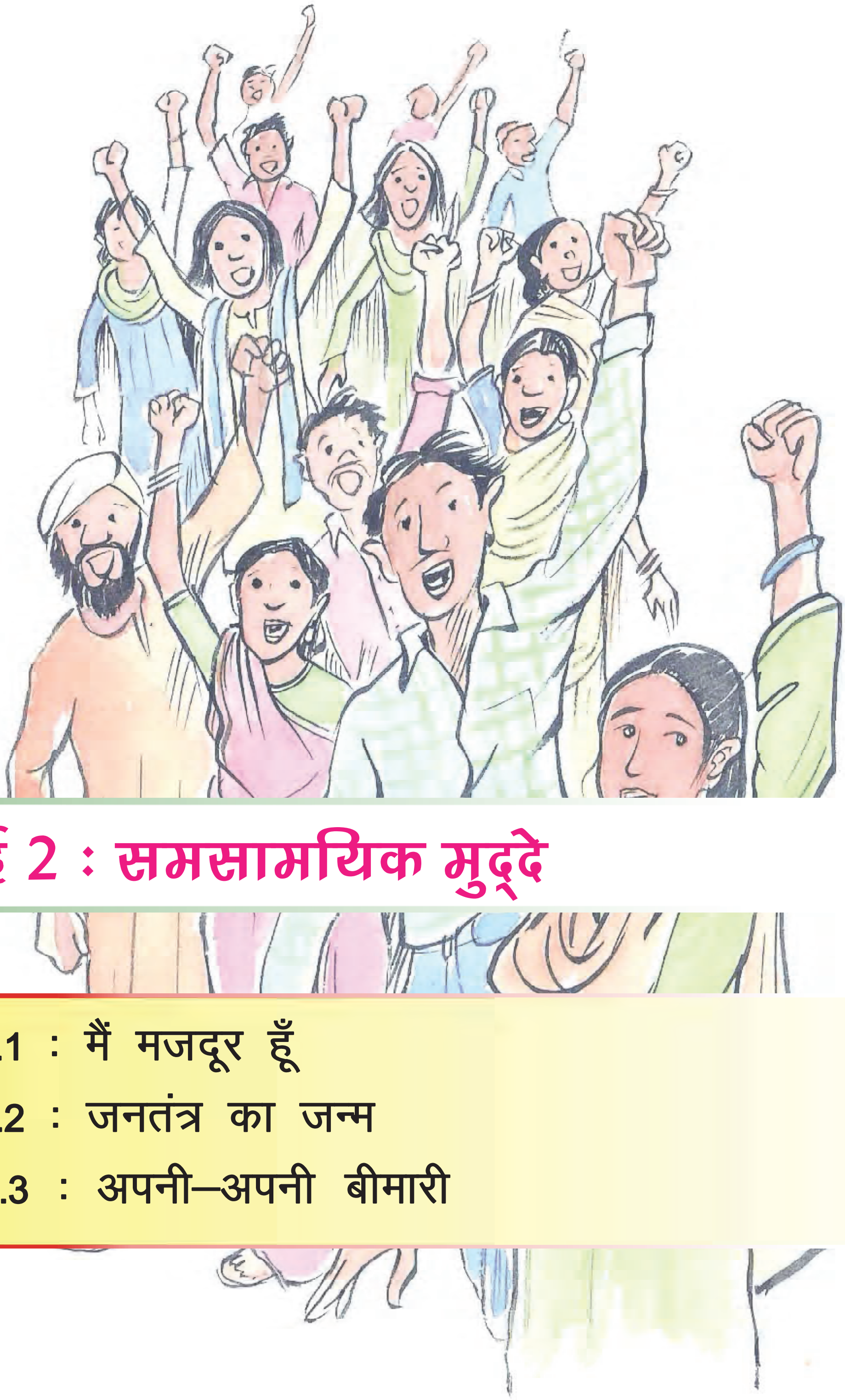

इकाई 2 : समसामयिक मुद्दे

पाठ 2.1 : मैं मजदूर हूँ

पाठ 2.2 : जनतंत्र का जन्म

पाठ 2.3 : अपनी–अपनी बीमारी

इकाई

2 समसामयिक मुद्दे

हमारे आस–पास सामाजिक–राजनैतिक क्षेत्र के ऐसे कई समसामयिक मुद्दे हैं जिन पर हमें पढ़ने, विचार विमर्श करने और एक चेतना विकसित करने की आवश्यकता है। हम रोजमर्रा में ऐसे विषयों से रूबरू होते रहते हैं और कई बार हम उनकी ओर सचेत रूप से ध्यान नहीं देते हैं या कई बार हमारे पास वह नजरिया भी नहीं होता है जिनके माध्यम से उनका विश्लेषण कर पाएँ। इस इकाई में यह प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों में वह नजरिया व समालोचनात्मक दृष्टि विकसित हो जिससे वे सामाजिक–राजनैतिक यथार्थ को समझ पाएँ।

मैं मजूदर हूँ एक विचारात्मक लेख है जिसमें लेखक ने मजदूर वर्ग की कहानी को आत्मकथात्मक शैली में लिखा है और यह बताने का प्रयास किया है कि इस दुनिया के वर्तमान स्वरुप तक विकसित होने की यात्रा में मजदूर वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन मजदूरों की अपनी जिन्दगी पहले की तरह आज भी अभावग्रस्त है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता **जनतंत्र का जन्म** 1950 में संविधान लागू होने के समय लिखी गई थी। यह कविता आमजन में निहित शक्ति से हमारा परिचय करवाती है और आमजनता के हाथ में शासन सूत्र सौंप देने का आह्वान करती है।

अपनी–अपनी बीमारी हरिशंकर परसाई जी की व्यंग्य रचना है। इस रचना में समाज में लोगों के अलग–अलग प्रकार के व्यवहार को उजागर करने का प्रयास हुआ है। समाज में ऐसे लोग भी हैं जो वास्तविक दुखों से दुखी हैं, लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो सम्पन्नता से उपजे दुखों या यह कहें कि और अधिक की लालसा से दुखी हैं और चाहते हैं कि दूसरे अपने वास्तविक दुखों को भूलकर उनके छद्म दुखों में दुखी हों।

पाठ – 2.1

EAFB7I

मैं मजदूर हूँ

डॉ. भगवत शरण उपाध्याय

जीवन परिचय

डॉ. भगवत शरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 में उत्तर प्रदेश, के बलिया जिले में उजियारपुर नामक स्थान पर हुआ। इन्होंने संस्कृत, हिन्दी साहित्य, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व का गहन अध्ययन किया। हिन्दी–साहित्य के ललित निबंधकारों में उनका स्थान महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट है। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका का संपादन किया तथा हिन्दी विश्वकोश संपादक मंडल के सदस्य भी रहे। ये मारीशस में भारत के राजदूत भी रहे। भारतीय संस्कृति पर देश–विदेश में दिए गए इनके व्याख्यान चिर–संग्रहणीय हैं। इनकी भाषा शैली तत्सम् शब्दों से युक्त साहित्यिक खड़ी बोली है। आपने विवेचनात्मक भावुकतापूर्ण, चित्रात्मक भाषा का प्रयोग तथा कहीं–कहीं रेखाचित्र शैली का प्रयोग किया है। ***विश्व साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला, कालीदास का भारत, कादम्बरी, वूंठा आम, बुद्ध वैभव, सागर की लहरों पर, इतिहास साक्षी है*** *आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।*

मैं मजदूर हूँ, जीवनबद्ध श्रम शक्ति की इकाई।

मैं मेहनतकश मजदूर हूँ। आदमी के बनैलेपन से लेकर आज की शिष्ट सभ्यता तक की सीढ़ियों पर मेरे हथौड़े की चोट है। जमाने ने करवट ली है पर मैंने कभी जमीन से पीठ नहीं लगाई, सुस्ताने के लिए कभी फावड़े नहीं टिकाये। मेरे बाजू पर ज़माना टिका है, घुटनों पर अलकस दम तोड़ती है। मेरे कंधों पर भूमंडल का भार है, उसे उठाने वाले एटलस के साथ पर मैं वो हूँ कि कभी गरदन नहीं मोड़ता, कंधे नहीं डालता, उन्हें कभी बदलता तक नहीं।

कंधे डाल दूँ तो गजब हो जाए, दुनिया लड़खड़ाकर गिर पड़े, जमाने का दौर बंद हो जाए। पर मैं कंधे नहीं डालता, न डालूँगा। मैंने निरन्तर निर्माण किया है, विध्वंस न करूँगा। यदि करना हुआ तो पुनर्निर्माण करूँगा जिसके लिए मुझे थकान नहीं महसूस होती, कभी अलकस नहीं लगती, रोआँ–रोआँ फड़कता रहता है।

मेरे निर्माण की परिधि की व्यापकता अनंत है, उदयाचल से अस्ताचल तक, क्षितिज के छोरों तक। हजारों वर्ष पहले कलयुग भी जब अभी अंतराल के गर्भ में था, मैंने नदियों के बहाव रोक दिए, बहाव जो अभी ताजा थे, प्रखर प्रकृति वेग से प्रेरित। बहाव रोक कर सविस्तृत ह्रद बनाए, जिन पर पर्जन्य विरहित भूमि की उर्वरा शक्ति

अवलंबित हुई। बढ़ते हुए समुन्दर का मैंने जल सुखाया, दलदलों को ठोस जमीन का जामा पहनाया और उन पर फसलों की हरी धानी क्यारियाँ दौड़ाई।

कश्मीर का नाम लेते ही हृदय में जो आनंद की लहरें उठने लगती हैं उसकी नम दलदल भरी भूमि किसने सौन्दर्य से रँगी? किसने झेलम के तटवर्ती आकाश को सुरभि बोझिल वायु से मदहोश किया? किसने उसके केसर की फैली क्यारियों में जादू की मिट्टी डाली? कल्हण की कलम से पूछो, किसने–किसने ?

दिन सोता था, रात सोती थी, पर मैं जागता था, जब नीलनद की धारा छाती पर चट्टान ढोती थी, दखिनी पहाड़ी में मेरी चट्टान। इन चट्टानों को मैंने नील की सबल छाती से उठाकर अपनी छाती पर रखा, अपने बाजूओं पर, कंधों पर, गरदन पर और चढ़ा दिया पाँच सौ फुट ऊपर आसमान की छाती छेद, गीजा और सक्कारा के मैदानों में, अपनी, जिन्दा छातियों से, इसलिए कि मुर्दा छातियाँ उस धूप से भूनी बालू में पिरामिडों की छाया में चिर निद्रा में सोएँ।

मैंने पहाड़ काटा, चट्टानें खोदकर ताँबा निकाला, सोना, चाँदी, लोहा, कोयला, हीरा। पाताल में घुसकर जब तपता दिन, नरक की रातों की अँधियारी लिए उन खानों में उतरता, मैं पत्थर काटता होता, अपने मालिकों के लिए था। कोलार की खानों से अमरीका की नई दुनिया तक। जमीन की छाती फाड़–फाड़कर मैंने चमकता, लोहे सा कठोर हीरा निकाला और दक्षिणी अफ्रीका में आज भी निकाले जा रहा हूँ पर उसकी चमक के नीचे मेरी काली अँधियारी जिन्दगी है।

मेरी खोदी जमीन को घेरे शेर से खूँखार कुत्ते खड़े रहते हैं, मुझे घूरते, मेरी एक–एक हरकत पर छलाँग मारते । अगर मैं अपनी जगह बुत बनकर खड़ा न रहा होता तो पीठ फेरते ही पिंडलियाँ उनके मुँह में होती और उनके घेरे से बाहर निकलते ही वह अमानुष अपमान जिससे अंतर खुलकर चमक जाए। मैं हीरा निकालता हूँ।

रोम का वह कोलोसियम, मैंने अपने हाथों खड़ा किया, जैसे कभी एथेन्स में अरीना का निर्माण किया था जहाँ मेरे–से गरीबों को श्रीमानों की दृष्टि सुख के लिए शेरों से लड़ना होता था। वैसे ही स्पेन के वे खूनी अखाड़े भी जहाँ लड़कों को साँड़ों से मौत की बाजी लगानी होती थी।

बाबा आदम के वनों को काट मैंने पत्थर की सी जमीन खोदकर नरम कर डाली। उसे जोत बोकर हरा कर दिया। विजयों से लौटे हुए रोमन जनरलों की प्रांतीय भूमि, मीलों फैले खेत मैंने बोए–काटे, सामंतों की दुनिया मैंने बसाई जिनकी गहराइयों में आदमी को भूखे शेर की भाँति कठघरों के पीछे रखा जाता था।

अफ्रीका के जंगलों से बनैली हालत में डाके, चोरी, साजिश द्वारा मैं खींच ले जाया गया एक दूर की अनजानी दुनिया में, समुंदर पार। पर मेरे लिए स्वदेश–विदेश की परिपाटी न थी। मैंने वहां भी गोरी दुनिया का पेट भरा, अपना पेट काटकर, संसार को अघा देने वाली उपज के बीच भी भूखा रहकर। फिर वहीं, उनके लिए आसमान चूमने वाली इमारतें खड़ी कीं, जहाँ एक–एक गाँव–नगर की संख्या बसी, मेरी झोपड़ियों से घृणा करने वाली दुनिया।

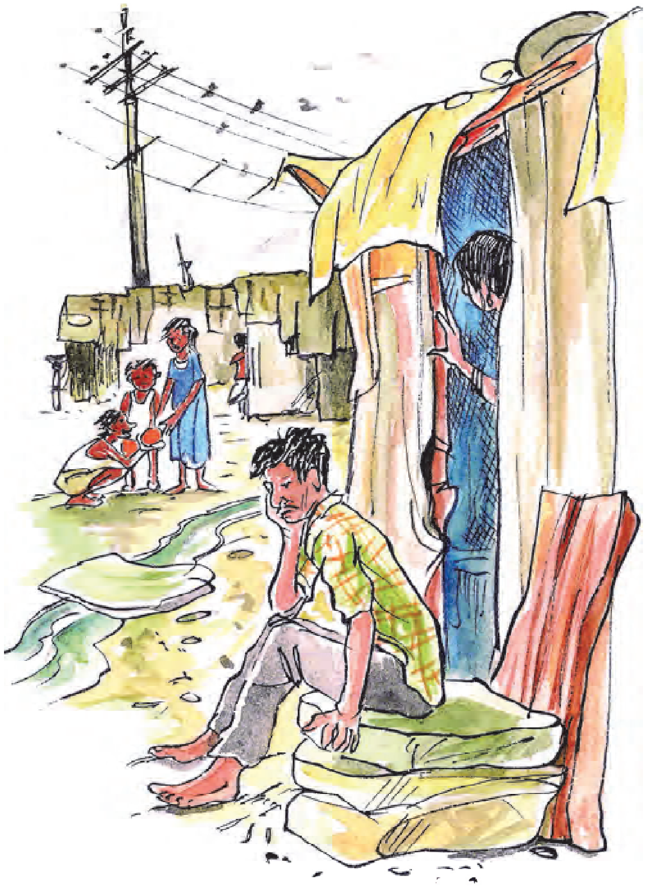

मैं ज़मीन को खोदकर, उसे जोत–बोकर सोना उगलने पर मजबूर करता था, वह सोना खुद मेरे लिए न था। मेरे लिए सोना आग था जिसे छूकर मुझे शूल की नोक पर चलना होता। मुझे उस फसल को काटकर, दा–उसाकर, राशि कर देना था पर उसका एक दाना भी छूना मेरे लिए मौत का परवाना था, तिल–तिल करने का, उन पीड़ाओं का जिनके लिए मनुष्य की मेधा ने एक से एक जतन प्रस्तुत किये थे। हाँ, मुझे उस कटे खेत की ज़मीन पर अब चिड़ियों की भाँति फिरने का अधिकार था जहाँ कभी कोड़ों की चोट सीने पर झेलते हुए मैंने अन्न की राशि खड़ी की थी कि मैं अपना आहार, मिट्टी में पड़े कणों को चुन लूँ। तब कणाद का तप मैंने पूरा किया।

हाँ, मैं उस जमीन के साथ बँधा जरूर था। उस ज़मीन की तरह मैं भी निरीह था, ज़मीन बेची जाती थी, मैं भी उसी के साथ, मय जानवरों के बिक जाता था। न ज़मीन को अपनी उपज खाने का हक था, न मुझे। प्राचीन काल से ही मेरी संज्ञा घर के मवेशियों की थी। प्राचीन ऋषि तक ने जानवरों की ही भाँति मुझ पर दया करने की ताकीद की थी। गृहिणी को ऋषि ने मेरे प्रति करूण होने की हिदायत देते हुए चौपायों के साथ रखा, उसे गृह के सभी जनों के साथ दोपायों–चौपायों की साम्राज्ञी होने का आशीर्वाद दिया–साम्राज्ञी द्विपदश्चतुष्पदः।

जंगल काटकर मैंने गाँव खड़े किए, कस्बे और नगर। मैं भूमि के साथ बिकता रहा। फिर धीरे–धीरे मैंने विशाल जनसंकुल नगर बनाए जिनमें कारखानों– मिलों का दैत्य कोलाहल के साथ धुआँ उगलने लगा। उनकी चिमनियों की छाया में रात–दिन मैं पसीना बहाता रहा। जब मशीन की चपेट में आकर मैं अपाहिज हो जाता, मेरा नाम रजिस्टर से खारिज कर दिया जाता। जब मैं उसकी चोट से गिरकर फिर न उठ पाता तब सड़क के कूड़ों में डाल दिया जाता। मेरी मृत्यु की जवाबदेही किसी की न थी, न मेरे बाल बच्चों के प्रति, न मालिकों की अपनी सरकार के प्रति। मॉन्टेस्क्यू* और मिल* लिखते ही रह गए।

मेरे बाल–बच्चे। उनके न घर थे, न द्वार। मिल की दीवारों की आड़, धुएँ के बादलों की घनी छाया और टाट–फूस–टिन से घिरी मेरी दुनिया जिसमें मैं ही सपरिवार न था, मेरे–से अनेक अभागे थे। और वहाँ का पापमय घिनौना जीवन, शर्मनाक नरक के कीड़ा का। उधर ऊँची दुनिया में, संसदों में, पाप के विरूद्ध कानून बनते रहे और कानून बनाने वालों की इधर की दुनिया में उनके कानूनों को चरितार्थ करते हम कृतकृत्य होते रहे। चारों ओर अँधेरा था, घरौंदों के पीछे, उन मकान कहलाने वाले घरौंदों के जहाँ दिन–रात की मजदूरी से थका–माँदा जीवन बिना लहराए टकराता और टकरा–टकराकर टूट जाता था और ये घरौंदे उसी तेजी से गला–पचा जीवन उगलते थे जिस तेजी से दीवारों के पीछे कारखाने में तैयार माल।

बैलगाड़ी से रथ बने, रथ से महारथ। उधर हमारी मिलों ने क्रांति की और हमने भाप से चलने वाले इंजन गढ़ दिए, इंजन जो जमीन पर दौड़ते थे, पानी पर तैरते थे। बैलगाड़ी रेल बनी और नाव–जहाज आसमान चूमती लहरों पर तूफ़ानों में नाचने लगे। पर मैं वहीं का वहीं रह गया।

मैंने जैसे मोटर–रेल से जमीन नापी थी वैसे ही अब अपने ही बनाए हवाई जहाजों से बाजों के छक्के छुड़ाने लगा पर जैसे मैं उनका कोई नहीं। भला उनके भीतर बैठने वालों से मेरा क्या वास्ता? नाव चलाने वाला मल्लाह नाव पर, उसे अपना कह दिनभर बैठ लेता है, हलवाई अपनी बनाई मिठाई को जब–तब चख लेता है पर मैं अपनी ही जोड़ी बनाई मोटर को, जहाज को, क्या अपना या उनका कह एक मिनिट को भी भोग सकता हूँ?

इनके लिए मैं पहाड़ों से लोहा, कोयला, टिन खोदता हूँ, तेल और पेट्रोल जिनके विस्फोट से अनेक बार मुझ जैसों की दुनिया पलट जाती है। जिनके लिए धर्म का झंडा फहराने वाले, जालफरेब करते हैं, कानून बनाते हैं, कानूनी शर्तनामों के नाम पर खूनी लड़ाइयाँ लड़ते हैं।

खूनी लड़ाइयाँ। इनके लिए भी मैं अपना खून–पसीना एक करता हूँ। लड़ाइयाँ धर्म की हैं, अधर्म की हैं, गुस्से और बर्दाश्त की हैं, हक और नाहक की हैं, लड़ाई और अमन की हैं, दोनों को मिटा देने की भी हैं, और कई किस्म की हैं जैसा उनकी किस्म–किस्म की परिभाषा बनाने वाले कहते है। मैं नहीं जानता उनकी परिभाषाएँ। पिस्सू और खटमल तक की जानें निकलते देख एक बार घबरा उठनेवाला मैं दानव की भाँति दिन–रात चलती मशीनों से संहार के साधन सिरजाता जा रहा हूँ क्योंकि मेरा कारखाना हथियारों का है, तोप–बंदूकों का, गोले–बारूद का, बम का।

पिस्सू–खटमल की चोट पर आँसू बहाने वाला मैं आखिर चींटी को चीनी चटाने वालों, कृपालु पिता के नाम पर सेमिनार चलाने वालों का नौकर ही तो हूँ। मुझे इससे क्या कि जिन मशीनों, बन्दुकों, तोपों, जहाजों के टुकड़े–हिस्से बनाता हूँ, वे एक दिन मुझसे ही हाड़–माँस के असंख्य जनों को उड़ा देंगे।सच, इससे मुझे क्या ? मैं तो तेली का बैल हूँ, मुझे कहीं भी नाथ दो, मैं चलता ही जाऊँगा, उन्हीं मशीनों की तरह जिन्हें चलाने वालों के इशारों पर चलना होता है।

*मॉन्टेस्क्यू : मॉन्टेस्क्यू फ्रांस के एक राजनैतिक विचारक, न्यायविद तथा उपन्यासकार थे। उन्होंने शक्तियों के पृथक्करण का सिद्धान्त दिया। वे फ्रांस में ज्ञानोदय (एनलाइटेनमेन्ट) के प्रख्यात प्रतिनिधि माने जाते हैं।

*मिल : जे.एस. मिल एक सामाजिक दार्शनिक थे। ये व्यक्तिगत अधिकारों व स्वतंत्रता के पक्षधर थे। ऑन लिबर्टी इनकी प्रमुख पुस्तक थी।

सुंदर आसमान पर पुल बाँधने वाला मैं अपनी कुव्वत आप नहीं जानता। एक बार भी मैं नहीं सोचता कि मेरे जिन हाथों में भरे मैदानों को बगैर खून बहाए सुला देने का जादू है उनमें मसीहा का भी असर है। काश, मैं इसे समझ लेता। काश, मैं इसके राज को अपने सामने बिखरे मृत्यु के इन साधनों को सिरजते इन्हीं की भाँति साफ देख लेता।

संसार आसमान के छोरों तक फैला हुआ है। धरती का विस्तार क्षितिज के पार तक वैसा ही व्यापक है, जैसा आसमान। रत्नाकर का सौन्दर्य उतना ही अमित है जितना वसुंधरा का और उनके मंथन से शहरों में समृद्धि भरी है, परन्तु वह मेरे लिए क्यों नहीं हैं? मैं पूछता हूँ। मुझमें कभी दानव की शक्ति थी मेरे इस मानव की मज्जा में, मेरी इन शिराओं में फौलाद के तारों की जकड़ थी, पर आज इतना निःसत्व मैं क्यों हूँ, इतना नगण्य और नंगा क्यों?

दुनिया में क्या नहीं? कौन–सी चीज मैंने अपने हाथों पैदा नहीं की? मेरे सहारे कारखाने अमित मात्रा में माल उगलते जा रहे है। मैं तृण से ताड़ बनाता हूँ, तिल से पहाड़, नगर को ढो सकने वाले जहाजों से लेकर सुई तक कोई महान और अदनी चीज नहीं जो मेरे स्पर्श के जादू से जीवन धारण न कर लेती हो। पर यह सब कुछ मेरे लिए क्यों नहीं? मैं इनमें से तिनका तक भी नहीं ले पाता। मैं भूखा और नंगा हूँ पर क्या ये मिलें जिनमें मैं खाने–पहनने का अपार सामान तैयार कर रहा हूँ, मेरा पेट नहीं भर सकतीं, तन नहीं ढंक सकतीं? इसका उत्तर भला कौन देगा, इन्हें जो बनाता है वह या जिनके लिए बनाता हूँ वे?

शब्दार्थ

जीवनबद्ध – जीवन से बँधा हुआ; **कंधे डालना** – पराजय स्वीकार करना; **अवलम्बित** – निर्भर; **कृत होना** – आभारी होना; **कुव्वत** – शक्ति या ताकत; **बनैलापन** – जंगलीपन; **अलकस** – आलस्य; **बुत** – मूर्ति; **कोलोसियम** – रोम का नाट्यगृह; **पर्जन्य** – बादल; **मज्जा** – हड्डी के भीतर भरा हुआ द्रव पदार्थ; **क्षितिज** – जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई दे; **कणाद** – एक ऋषि जो भूमि पर गिरे अन्न के कणों को एकत्र कर स्वयं के भोजन की व्यवस्था करते थे।

अभ्यास

पाठ से

1. मजदूरों के प्रति सहानुभूति क्यों रखनी चाहिए?
2. मजदूर के पारिवारिक जीवन का हाल कैसा होता है? पाठ के आधार पर लिखिए।
3. 'दुनिया में क्या नहीं? कौन सी चीज मैंने अपने हाथों पैदा नहीं की?' इस कथन को ध्यान में रखकर मजदूरों के द्वारा किए गए निर्माण कार्यों को अपने शब्दों में लिखिए?
4. ''दिन सोता था रात सोती थी, पर मैं जागता था।'' का आशय क्या है?

5. पाठ में से उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए जिनमें मजदूरों की विवशता दिखाई देती है?

6. निर्माण के प्रति मजदूरों की निरंतर प्रतिबद्धता किन–किन बातों में जाहिर होती है?

EAP796

पाठ से आगे

1. मजदूर नहीं होते तो हमारी दुनिया के विकास कार्यों का क्या होता? कल्पना कर अपने शब्दों में लिखिए।

2. आज भी देश–विदेशों में कई जगहों पर जानवरों की लड़ाइयों का आयोजन किया जाता है। इन लड़ाइयों में कई बार जानवरों व इंसानों की मृत्यु तक हो जाती है। क्या इस प्रकार के आयोजन उचित है? अपने विचार तर्क सहित दीजिए।

3. फैक्ट्री में काम करते हुए घायल/दुर्घटनाग्रस्त (दिव्यांग) मजदूरों के प्रति मालिकों की क्या–क्या जिम्मेदारियाँ होनी चाहिए?

4. कश्मीर का नाम सुनते ही आपके मन में उसकी क्या–क्या छवियाँ उभरती हैं? चर्चा करके लिखिए।

5. प्राचीन काल में गृहिणियों को ऋषियों द्वारा दी जाने वाली हिदायत 'साम्राज्ञी द्विपदश्चतुष्पदः' में मजदूरों (इंसानों) की साम्यता पशुओं से करना क्या सही था? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

6. 'पिस्सू और खटमल तक की जानें निकलते देखकर एक बार घबरा उठनेवाला मैं दानव की भाँति दिन–रात चलती मशीनों से संहार के साधन सिरजाता जा रहा हूँ; क्योंकि मेरा कारखाना हथियारों का है, तोप–बँदूकों का, गोले–बारूद का, बम का।''

   (क) लेखक ने इन पंक्तियों में किस वैश्विक समस्या की ओर संकेत किया है? यदि यह समस्या ऐसे ही बढ़ती रही तो उससे मानव के अस्तित्व को क्या–क्या खतरे हो सकते हैं?

   (ख) इन खतरों को दूर करने के लिए विश्व स्तर पर क्या–क्या निर्णय लेने होंगे?

EAY3AT

भाषा के बारे में

1. निम्नलिखित दोनों वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और समझिए–

   (क) मैं मेहनतकश मजदूर हूँ।

   (ख) मैंने वहाँ भी गोरी दुनिया का पेट भरा।

   वाक्य 'क' को पढ़ने से आप पायेंगे कि उसका अर्थ आसानी से समझ आता है। इस प्रकार जिस वाक्य का साधारण शाब्दिक अर्थ और भावार्थ समान हो उसे **'अभिधा' शब्द शक्ति** कहते हैं। इससे उत्पन्न भाव को 'वाच्यार्थ' भी कहते हैं।

   वाक्य 'ख' में गोरी दुनिया अर्थात् गोरी रंग की दुनिया की बात न होकर, गोरे लोगों की दुनिया अर्थात् यूरोप को लक्ष्य कर बात कही गयी है। इसमें शब्द के वाच्यार्थ या मुख्यार्थ से भिन्न उसका अन्य अर्थ प्रकट होता है। इसमें उत्पन्न भाव को **'लक्ष्यार्थ'** कहा जाता है और इस शब्द शक्ति को **'लक्षणा'** कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में किस शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है, पहचानकर लिखिए–

(क) रमेश के कान नहीं है।

(ख) सीता गीत गाती है।

(ग) मोहन बैल है।

(घ) हमारी मिलों ने क्रांति की।

(ङ) चौकन्ना रहना अच्छी बात है।

योग्यता विस्तार

1. मिस्र स्थित गीज़ा का पिरामिड संसार के सात आश्चर्यों में से एक है जिसके निर्माण के समय ज्यादा सुविधा युक्त उपकरण एवं संसाधन न होते हुए भी मजदूरों के अथाह परिश्रम का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ये सात आश्चर्य कौन–कौन से हैं? इनके बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. अपने आसपास रहने वाले किसी मजदूर से बातचीत करके उसकी पूरे दिन की दिनचर्या के बारे में पता कीजिए।
3. मजदूरों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए सरकार द्वारा क्या–क्या योजनाएँ बनाई गई है? चर्चा करके सूची तैयार कीजिए।

EB7YCG

पाठ में आए विविध स्थानों के बारे में थोड़ा और पढ़िए–

गीजा

विश्व के सात आश्चर्यों में से एक, मिस्र के पिरामिड के लिए प्रसिद्ध स्थल, गीजा के पिरामिड। सर्वाधिक प्राचीन, भव्य और अत्यधिक उन्नत तकनीक से बने इन पिरामिडों को लगभग ढ़ाई हजार वर्ष ईसा पूर्व बनाया गया था। 450 फीट की ऊँचाई तक अत्यंत विशाल पत्थरों को कैसे पहुँचाया गया होगा, यह आज भी नहीं जाना जा सका है। मानवीय श्रम का अद्भुत उदाहरण जो ऐसे युग में बना जब मशीनें नहीं हुआ करती थीं।

सक्कारा

मिस्र स्थित इस स्थल पर भी प्राचीन पिरामिडों के अवशेष हैं। सक्कारा के पिरामिड सीढ़ीदार हैं जबकि गीजा के समतल पार्श्व वाले त्रिभुजाकार हैं।

कोलोसियम

रोम के इटली शहर स्थित इस 'रंगशाला' को ईस्वी सन् 70 में रोम के शासकों ने बनाया था जो स्थापत्य कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण था। यहाँ योद्धा अपनी युद्ध कला और मल्ल विद्या का प्रदर्शन करते थे। हिंसक पशुओं से भी उनके मुकाबले आयोजित किए जाते थे। अब यह खंडहर रूप में पर्यटकों के लिए एक दर्शनीय स्थल है।

कोलार

भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित यह स्थान बैंगलोर से 60 मील की दूरी पर है। यहाँ सोने की खाने हैं।

पाठ – 2.2

EBGUE4

जनतंत्र का जन्म

रामधारी सिंह 'दिनकर'

जीवन परिचय

आधुनिक युग के वीर रस के श्रेष्ठ कवि के रूप में स्थापित रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुँगेर जिले के सिमरिया घाट में हुआ था। वे बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष रहे। उन्होंने भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार (1965 से 1971 तक) के रूप में भी कार्य किया। वे छायावादोत्तर कवियों में पहली पीढ़ी के माने जाते हैं। उनकी कविताओं में ओज, आक्रोश व क्रान्ति की पुकार है। उन्हें राष्ट्रकवि भी कहा जाता है। उनकी प्रमुख कृतियाँ ***कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, संस्कृति के चार अध्याय, परशुराम की प्रतीक्षा, आत्मजयी*** *व* ***उर्वशी*** *आदि रही हैं। उन्हें अपनी रचनाओं के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार व भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया, उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया।*

सदियों की ठंडी– बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

जनता? हाँ मिट्टी की अबोध मूरतें वही,
जाड़े– पाले की कसक, सदा सहने वाली,
जब अंग–अंग में लगे साँप हों चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द सहने वाली।

जनता? हाँ, लम्बी–बड़ी जीभ की वही कसम,
''जनता सचमुच ही बड़ी वेदना सहती है।''
सो ठीक, मगर आखिर इस पर जनमत क्या है?
है प्रश्न गूढ़; जनता इस पर क्या कहती है?

मानो, जनता हो फूल जिसे एहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;
अथवा कोई दुधमुहीं जिसे बहलाने के
जंतर–मंतर सीमित हो चार खिलौनों में।

लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटी चढ़ाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
साँसों के बल से ताज़ हवा में उड़ता है
जनता की रोके राह समय में ताब कहाँ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्त्राब्द का अंधकार
बीता, गवाक्ष अंबर के दहके जाते हैं,
यह और नहीं कोई जनता के स्वप्न अजय
चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते जाते हैं।

सबसे विराट् जनतंत्र जगत् का आ पहुँचा,
तैंतीस कोटि–हित, सिंहासन तैयार करो;
अभिषेक आज राजा का नहीं प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिए तू किसे ढूँढता है मूरख,
मंदिरों, राज प्रासादों में, तहखानों में?
देवता कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ रहे
देवता मिलेंगे, खेतों में, खलिहानों में।

फावड़े और हल राजदंड बनने को हैं,
धूसरता सोने से श्रृंगार सजाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

शब्दार्थ

नाद = आवाज, **अबोध** = अज्ञान मूर्ख, **कसक** = पीड़ा, **गूढ़** = गुप्त, छिपा हुआ **जंतर–मंतर** = यंत्र मंत्र (जादू टोना), **कोपाकुल** = क्रोध से व्याकुल, **भृकुटी** = भौहें, **काल** = मृत्य,समय **अब्दों** = वर्षों, **शताब्दियों** = सैकड़ों वर्षों, **सहस्त्राबद** = हजार वर्ष, **अंधकार** = **अंधेरा**, **गवाक्ष** = खिड़की, **दहके** = आग से जलने की क्रिया, **तिमिर** = अंधेरा, **विराट्** = बहुत बड़ा, **प्रासादों** = महलों।

अभ्यास

पाठ से

1. 'अभिषेक आज राजा का नहीं प्रजा का है' यह किस अवसर के लिए कहा गया है?
2. जब जनता की भौंहे क्रोध में तन जाती हैं तो क्या–क्या होता है?
3. बदली हुई परिस्थितियों में अब राजदण्ड किसे बनाया जाएगा और क्यों?
4. जनता की सहनशीलता के कवि ने क्या–क्या उदाहरण दिए हैं?
5. कवि ने गिट्टी तोड़नेवालों और खेतों में काम करने वालों को देवता क्यों कहा है?
6. कवि ने जनता के लिए सिंहासन खाली कर देने के लिए क्यों कहा है?
7. जगत का सबसे विराट जनतंत्र किसे कहा गया है?

पाठ से आगे

EBQQFR

1. 'अंग–अंग में लगे साँप हों चूस रहे' पंक्ति में जनता के किस प्रकार के शोषण की ओर संकेत किया गया है? आपके मत में यह शोषण किन–किन के द्वारा होता रहा होगा?

2. (क) किसी भी लोकतांत्रिक देश में नागरिकों का जागरुक होना क्यों आवश्यक है? अपने विचार लिखिए।

(ख) आपके गाँव/मोहल्ले के लोगों में किस–किस तरह की चेतना जगाने की ज़रूरत है? उदाहरण सहित लिखिए।

(ग) इन्हें जागरूक करने के लिए क्या–क्या प्रयास करने होंगे?

भाषा के बारे में

EBZLHE

1. निम्नांकित शब्दों के क्या अर्थ हैं? इन्हें ध्यान से पढ़कर उनके अर्थ लिखिए। आप इसमें शब्दकोश की भी मदद ले सकते हैं?

नाद, गूढ़, भृकुटी, बवंडर, अब्द, गवाक्ष, तिमिर, अम्बर, प्रासाद, धूसरता।

2. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) ठंडी बुझी राख का सुगबुगाना।

(ख) भृकुटी चढ़ाना।

(ग) हवा में ताज उड़ना।

(घ) सिर पर मुकुट धरना।

(ङ) आरती लिए ढूँढ़ना।

(च) सिंहासन खाली करना।

3. निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) वेदना (ख) सीमित (ग) तिमिर (घ) प्रासाद

समास

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से जब एक नया शब्द बनता है तो उसे सामासिक शब्द और इस प्रक्रिया को समास कहते हैं।

समास के प्रकार

(1) **तत्पुरुष समास** – जब किसी शब्द में पूर्व पद गौण तथा उत्तरपद प्रधान होता है तो वहाँ तत्पुरुष समास होता है। ये संज्ञा और संज्ञा के मिलने से तथा संज्ञा और क्रिया मूलक शब्दों के मिलने

से बनते हैं। जैसे– स्नानगृह (स्नान के लिए गृह) हस्तलिखित (हस्त द्वारा लिखित)। इनके समस्तपद बनते समय विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है तथा इसके विपरीत समास विग्रह करते समय विभक्ति चिह्नों– से, पर, को, द्वारा, का, के लिए आदि का प्रयोग किया जाता है।

तत्पुरुष समास के उपभेद (प्रकार) – तत्पुरुष समास के दो उपभेद हैं–

(क) कर्मधारय तथा (ख) द्विगु कर्मधारय (तत्पुरुष) समास –

(क) इसमें पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है। पूर्वपद तथा उत्तरपद में उपमेय उपमान संबंध भी हो सकता है।

विशेषण विशेष्य

जैसे– पीतांबर, महाविद्यालय, नीलगाय।

उपमेय और **उपमान** – घनश्याम, कमलनयन, चंद्रमुख।

(ख) **द्विगु समास** – द्विगु समास में भी उत्तरपद प्रधान होता है और विशेष्य होता है जबकि पूर्वपद संख्यावाची विशेषण होता है।

जैसे– पंचवटी, तिराहा, शताब्दी, चौमासा आदि।

(2) **बहुब्रीहि समास** – जिस सामासिक शब्द में आए दोनों ही पद गौण होते हैं और दोनों मिलकर किसी तीसरे पद के विषय में कुछ कहते हैं और यह तीसरा पद ही 'प्रधान' होता है।

जैसे– नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका अर्थात् शंकर

दशमुख – दश मुख वाला अर्थात् रावण

चतुर्भुज – चार भुजाएँ है जिसकी अर्थात् विष्णु

(3) **द्वंद्व समास** – जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें दोनों पद को जोड़नेवाले अव्यय – 'और', 'या' का लोप हो जाता है। जैसे–

राजा – रानी राजा और रानी

पति – पत्नी पति और पत्नी

हार – जीत हार या जीत/हार और जीत

दूध – दही दूध और दही।

(4) **अव्ययी भाव समास** – जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं।

जैसे– प्रतिदिन, यथाशक्ति, आमरण बेखटके

द्विगु और बहुब्रीहि समास में अंतर–द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद उसका विशेष्य परंतु बहुब्रीहि समास में पूरा पद ही विशेषण का काम करता है।

कई ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें दोनों समासों के अंतर्गत रखा जा सकता है। जैसे–

चतुर्भुज – चार भुजाओं का समूह (द्विगु)

चार भुजाएँ हैं जिसकी (बहुब्रीहि)

इसी तरह त्रिनेत्र, चतुर्भुख। तीन आँखों का समूह तथा चार मुखों का समूह (द्विगु समास) जबकि त्रिनेत्र – तीन नेत्र हैं अर्थात् शिव तथा चार मुख है जिनके अर्थात् ब्रह्मा (बहुब्रीहि समास) में लेंगे, यानी इनके विग्रह पर निर्भर करता है कि इन्हें किस समास के अंतर्गत रखा जाएगा।

4. पाठ में आए इन शब्दों का समास विग्रह कर समासों के नाम लिखिए–

– कोपाकुल, राजप्रासाद, जनतंत्र, कोटिहित, जनमत

– ठंडी–बुझी, जंतर–मंतर, जाड़े–पाले

– सहस्राब्द, शताब्दी

– दुधमुँही, गूढ़प्रश्न

EC9HJ2

योग्यता विस्तार

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' की कुछ अन्य रचनाएँ खोजकर पढ़िए।
2. जनतंत्र का जन्म 'ओज' गुण की कविता है। 'ओज' वीर रस का ही गुण है। वीर रस की कोई अन्य कविता ढूँढ़कर कक्षा में उसका वाचन कीजिए।
3. इन कवियों के बारे में बताइए कि ये मुख्यतः किस रस की कविता के लिए जाने जाते हैं। इस हेतु पुस्तकालय एवं अपने शिक्षक की सहायता लीजिए।

(क) सूरदास (ख) कबीरदास (ग) विद्यापति

(घ) काका हाथरसी (ङ) भूषण

पाठ – 2.3

अपनी–अपनी बीमारी

हरिशंकर परसाई

जीवन परिचय

हिन्दी साहित्य जगत के मुर्धन्य व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1924 को जमानी गाँव, जिला होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में हुआ। उन्होंने कई कॉलेजों एवं स्कूलों में अध्यापन के साथ–साथ जबलपुर से निकलने वाली साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का प्रकाशन–संपादन किया। सामाजिक व राजनैतिक विषयों पर तीखा व्यंग्य रचने वाले परसाई जी की प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ– **हँसते हैं रोते हैं, भूत के पाँव पीछे, सदाचार का ताबीज, रानी नागफनी की कहानी, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, बोलती रेखाएँ, तट की खोज, माटी कहे कुम्हार से, विकलांग श्रद्धा का दौर** आदि है।

हम उनके पास चंदा माँगने गए थे। चंदे के पुराने अभ्यासी का चेहरा बोलता है। वे हमें भाँप गए। हम भी उन्हें भाँप गए। चंदा माँगवानेवाले और देनेवाले एक–दूसरे के शरीर की गंध बखूबी पहचानते हैं। लेनेवाला गंध से जान लेता है कि यह देगा या नहीं। देनेवाला भी माँगनेवाले के शरीर की गंध से समझ लेता है कि यह बिना लिए टल जाएगा या नहीं। हमें बैठते ही समझ में आ गया कि ये नहीं देंगे। वे भी शायद समझ गए कि ये टल जाएंगे। फिर भी हम दोनों पक्षों को अपना कर्तव्य तो निभाना ही था। हमने प्रार्थना की तो वे बोले– आपको चंदे की पड़ी है, हम तो टैक्स के मारे मर

रहे हैं। सोचा, यह टैक्स की बीमारी कैसी होती है। बीमारियाँ बहुत देखी हैं– निमोनिया, कालरा, कैंसर; जिनसे लोग मरते हैं। मगर यह टैक्स की कैसी बीमारी है जिससे वे मर रहे थे! वे पूरी तरह से स्वस्थ और प्रसन्न थे। तो क्या इस बीमारी में मजा आता है? यह अच्छी लगती है जिससे बीमार तगड़ा हो जाता है। इस बीमारी से मरने में कैसा लगता होगा?

अजीब रोग है यह। चिकित्सा–विज्ञान में इसका कोई इलाज नहीं है। बड़े से बड़े डॉक्टर को दिखाइए और कहिए– यह आदमी टैक्स से मर रहा है। इसके प्राण बचा लीजिए। वह कहेगा– इसका हमारे पास कोई इलाज नहीं है। लेकिन इसके भी इलाज करनेवाले होते हैं मगर वे एलोपैथी या होमियोपैथी पढ़े नहीं होते। इसकी चिकित्सा पद्धति अलग है। इस देश में कुछ लोग टैक्स की बीमारी से मरते हैं और काफी लोग भुखमरी से।

टैक्स की बीमारी की विशेषता यह है कि जिसे लग जाए वह कहता है– हाय, हम टैक्स से मर रहे हैं। और जिसे न लगे वह कहता है– हाय, हमें टैक्स की बीमारी ही नहीं लगती। कितने लोग हैं जिनकी महत्त्वाकांक्षा होती है कि टैक्स की बीमारी से मरें पर मर जाते हैं निमोनिया से। हमें उन पर दया आई। सोचा, कहें कि प्रापर्टी समेत यह बीमारी हमें दे दीजिए। पर वे नहीं देते। यह कमबख्त बीमारी ही ऐसी है कि जिसे लग जाए उसे प्यारी हो जाती है।

मुझे उनसे ईर्ष्या हुई। मैं उन जैसा ही बीमार होना चाहता हूँ। उनकी तरह ही मरना चाहता हूँ। कितना अच्छा होता अगर शोक–समाचार यों छपता– 'बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हिंदी के व्यंग्य लेखक हरिशंकर परसाई टैक्स की बीमारी से मर गए। वे हिंदी के प्रथम लेखक हैं जो इस बीमारी से मरे। इस घटना से समस्त हिंदी संसार गौरवान्वित है। आशा है आगे भी लेखक इसी बीमारी से मरेंगे। मगर अपने भाग्य में यह कहाँ? अपने भाग्य में तो टुच्ची बीमारियों से मरना लिखा है।

उनका दुख देखकर मैं सोचता हूँ, दुख भी कैसे–कैसे होते हैं। अपना–अपना दुख अलग होता है। उनका दुख था कि टैक्स मारे डाल रहा है। अपना दुख है कि प्रापर्टी नहीं है जिससे अपने को भी टैक्स से मरने का सौभाग्य प्राप्त हो। हम कुल 50 रुपये चंदा न मिलने के दुख में मरे जा रहे थे।

मेरे पास एक आदमी आता था जो दूसरों की बेईमानी की बीमारी से मरा जाता था। अपनी बेईमानी प्राणघातक नहीं होती बल्कि संयम से साधी जाए तो स्वास्थ्यवर्द्धक होती है। वह आदर्श प्रेमी आदमी था। गांधीजी के नाम से चलनेवाले किसी प्रतिष्ठान में काम करता था। मेरे पास घंटों बैठता और बताता कि वहाँ कैसी बेईमानी चल रही है। कहता, युवावस्था में मैंने अपने को समर्पित कर दिया था। किस आशा से इस संस्था में गया और क्या देख रहा हूँ। मैंने कहा– भैया, युवावस्था में जिनने समर्पित कर दिया वे सब रो रहे हैं। फिर तुम आदर्श लेकर गए ही क्यों? गांधीजी दुकान खोलने का आदेश तो मरते–मरते दे नहीं गए थे। मैं समझ गया उसके कष्ट को। गांधीजी का नाम प्रतिष्ठान में जुड़ा होने के कारण वह बेईमानी नहीं कर पाता था और दूसरों की बेईमानी से बीमार था। अगर प्रतिष्ठान का नाम कुछ और हो जाता तो वह भी औरों जैसा करता और स्वस्थ रहता। मगर गांधीजी ने उसकी जिंदगी बरबाद की थी। गांधीजी विनोबा जैसों की जिंदगी बरबाद कर गए। बड़े–बड़े दुख हैं। मैं बैठा

हूँ। मेरे साथ 2–3 बंधु बैठे हैं। मैं दुखी हूँ! मेरा दुख यह है कि मुझे बिजली का 40 रुपये का बिल जमा करना है और मेरे पास इतने रुपए नहीं हैं।

तभी एक बंधु अपना दुख बताने लगता है। उसने 8 कमरों का मकान बनाने की योजना बनाई थी। 6 कमरे बन चुके हैं। 2 के लिए पैसे की तंगी आ गई है। वह बहुत–बहुत दुखी है। वह अपने दुख का वर्णन करता है। मैं प्रभावित नहीं होता। मगर उसका दुख कितना विकट है कि मकान को 8 कमरों का नहीं रख सकता। मुझे उसके दुख से दुखी होना चाहिए पर नहीं हो पाता। मेरे मन में बिजली के बिल के 40 रुपये का खटका लगा है।

दूसरे बंधु पुस्तक–विक्रेता हैं। पिछले साल 50 हजार की किताबें पुस्तकालयों को बेची थीं। इस साल 40 हजार की बिकीं। कहते हैं– बड़ी मुश्किल है। सिर्फ 40 हजार की किताबें इस साल बिकीं। ऐसे में कैसे चलेगा? वे चाहते हैं, मैं दुखी हो जाऊँ पर मैं नहीं होता। इनके पास मैंने अपनी 100 किताबें रख दी थीं। वे बिक गईं। मगर जब मैं पैसे माँगता हूँ तो वे ऐसे हँसने लगते हैं जैसे मैं हास्यरस पैदा कर रहा हूँ। बड़ी मुसीबत है व्यंग्यकार की। वह अपने पैसे माँगे तो उसे भी व्यंग्य–विनोद में शामिल कर लिया जाता है। मैं उनके दुख से दुखी नहीं होता।

मेरे मन में बिजली कटने का खटका लगा हुआ है। तीसरे बंधु की रोटरी मशीन आ गई। अब मोनो मशीन आने में कठिनाई आ गई है। वे दुखी हैं। मैं फिर दुखी नहीं होता। अंततः मुझे लगता है कि अपने बिजली के बिल को भूलकर मुझे इन सबके दुख में दुखी हो जाना चाहिए। मैं दुखी हो जाता हूँ। कहता हूँ– क्या ट्रेजडी हैं मनुष्य–जीवन की कि मकान कुल 6 कमरों का रह जाता है। और कैसी निर्दय यह दुनिया है कि सिर्फ 40 हजार की किताबें खरीदती है। कैसा बुरा वक्त आ गया है कि मोनो मशीन ही नहीं आ रही है।

वे तीनों प्रसन्न हैं कि मैं उनके दुःखों से आखिर दुखी हो ही गया। तरह–तरह के संघर्ष में तरह–तरह के दुख हैं। एक जीवित रहने का संघर्ष है और एक संपन्नता का संघर्ष है। एक न्यूनतम जीवन–स्तर न कर पाने का दुख है, एक पर्याप्त संपन्नता न होने का दुख है। ऐसे में कोई अपने टुच्चे दुखों को लेकर कैसे बैठे?

मेरे मन में फिर वही लालसा उठती है कि वे सज्जन प्रापर्टी समेत अपनी टैक्सों की बीमारी मुझे दे दें और मैं उससे मर जाऊँ। मगर वे मुझे यह चांस नहीं देंगे। न वे प्रापर्टी छोड़ेंगे, न बीमारी, और मुझे अंततः किसी ओछी बीमारी से ही मरना होगा।

अभ्यास

पाठ से

1. 'बीमारी' शब्द को लेखक ने किन–किन संदर्भों में प्रयोग किया है?
2. पाठ में दिया गया शोक समाचार – ''बड़ी प्रसन्नता की बात है... से क्यों शुरू हुआ है?'' अपना तर्क दीजिए।

3. ''गांधीजी विनोबा जैसों की जिन्दगी बरबाद कर गए'' इस पंक्ति का आशय क्या है? लिखिए।

4. टैक्स को 'बीमारी' के रूप में देखने का क्या आशय है?

5. लेखक टैक्स की बीमारी को क्यों अपनाना चाहता है?

पाठ से आगे

ECS9HC

1. 'सबका दुख अलग–अलग होता है', किस–किस तरह के दुख के अनुभव आपने किए हैं? उन्हें लिखिए।

2. अपने परिवार के सभी लोगों से उनके दु:ख पूछिए और लिखिए। यह भी बताइए कि आप उनके लिए क्या कर सकते हैं कि उनके दुख दूर हों।

3. अक्सर लोग अपनी बुनियादी जरूरतों के रहते हुए भी और ज्यादा की चाह करते रहते हैं। पाठ में भी एक–दो ऐसे दुखी लोगों के उदाहरण दिए हुए हैं। आपके अपने अनुभव में भी कुछ उदाहरण होंगे। उनके बारे में लिखिए।

भाषा के बारे में

ED25NZ

1. कई बार किसी बात को सीधे न कहकर कुछ इस अंदाज में प्रस्तुत किया जाता है कि अर्थ सीधे उस वाक्य में न होकर कहीं और होता है। जैसे इस पाठ में ही 'टैक्स के मारे मर रहे हैं;' 'बेइमानी की बीमारी से मर रहे हैं;' वाक्य आए हैं। इनका अर्थ अगर सीधे शब्दों से लें तो अनर्थ हो सकता है। यहाँ 'मर रहे हैं' का अर्थ मृत्यु न होकर दुखी व विचलित होना है।

इस पाठ से ऐसे अंश ढूँढिए जिनके सामान्य अर्थ और समझे जाने वाले वाक्य अर्थ में अंतर है।

वाक्य	वाक्य अर्थ

2. किसी अखबार से समाचार, विज्ञापन, शोक संदेश, लेख व संपादकीय की एक–एक कतरन निकालिए। और उसे भाषा, वाक्य संरचना, शब्द चयन और अर्थ की दृष्टि से पढ़िए। शिक्षक की मदद से उनके फर्क पहचानिए एवं अपने विश्लेषण को सारणी के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

प्रायोजना–कार्य

1. टैक्स क्या होता है? यह क्यों लगाया जाता है? इसके निर्धारण के क्या आधार हैं एवं एक सामान्य व्यक्ति को किस–किस प्रकार के टैक्स अदा करने पड़ते हैं? सामाजिक विज्ञान (अर्थशास्त्र) के शिक्षक के सहयोग से इसके बारे में जानने–समझने का प्रयास करें।

EDB1QH

इकाई 3 : मानवीय अनुभूतियाँ

पाठ :– 3.1 माटीवाली

पाठ :– 3.2 कन्यादान

पाठ :– 3.3 घीसा

पाठ :– 3.4 पुरस्कार

इ
का
ई

3 मानवीय अनुभूतियाँ

इस इकाई में मानव जीवन के अनुभव, मानवीय भावनाएँ जैसे प्रेम, करुणा त्याग, सहृदयता, सहानुभूति आदि से विद्यार्थियों को अनुभव कराने का प्रयास किया गया है। उम्मीद यह भी है कि इसमें शामिल साहित्य की विविध विधाएँ, मानवीय अनुभूतियों से उपजे मूल्यों, मूल्यों के संक्रमण, उनमें टकराव, अंतर्द्वंद्व जैसे भावबोधों को समझने, उन्हें महसूस करने को प्रोत्साहित करेंगी। जिससे इन मनोभावों से गुजरते हुए एक सहज– सरल व्यक्ति के रूप में विद्यार्थियों का विकास हो सके और इस प्रकार के साहित्य को पढ़ने, समझने, रचने और चुनाव करने के प्रति रुचियों का विकास कर पाएँ।

इकाई की पहली रचना 'माटीवाली' एक कहानी है। इस कहानी में विस्थापन की समस्या से उपजी पीड़ा व प्रताड़ना को प्रभावशाली तरीके से रखा गया है। जीवकोपार्जन के लिए घर–घर माटी पहुँचाने को विवश वृद्ध स्त्री गरीबी से संघर्ष करते हुए अपनी संवेदनशीलता का परिचय पूरी कहानी में देती ही है, गृहस्थी के बोध और बोझ को भी समझती है। पति की मृत्यु उस संघर्षशील वृद्ध स्त्री को उतना नहीं तोड़ती, जितना यह जवाब कि "बुढ़िया मुझे जमीन का कागज चाहिए रोजी का नहीं" और "बाँध बनने के बाद मैं खाऊँगी क्या साब।" पूरी कहानी में यह मार्मिकता अपने चरम रूप में दिखती है जो संवेदनशील मन को कचोटने वाली है, जब वह कर्मशील वृद्ध स्त्री यह कहती है "गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए।"

ऋतुराज की कविता 'कन्यादान" समाज में स्त्रियों के लिए नियत किए गए परम्परागत मान्यताओं के प्रति विरोध का स्वर उठाती है। इसमें एक माँ अपनी बेटी को यह बताती है कि स्त्रियों को सुन्दरता के आवरण और भुलावे में बाँध कर समाज उसकी कमजोरी का उपहास करता है और उपयोग भी। माँ अपने दीर्घ जीवन–अनुभवों

से संचित पीड़ा, उपेक्षा और उपयोग के आधार पर अपनी बेटी को आगाह करती है कि वह नए जीवन में प्रवेश करते हुए कोमलता से भ्रमित और कमजोर होने के बजाय जीवन के यथार्थ को समझे और मजबूती से उनका सामना कर पाए।

जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध ऐतिहासिक कहानी 'पुरस्कार' उत्कट प्रेम को अभिव्यक्त करने वाली एक सशक्त रचना है। इसमें नायिका मधुलिका के माध्यम से नारी के प्रेम जनित अंतर्द्वंद, कर्तव्य और भावनाओं के टकराव और उत्कष्ट राष्ट्र–प्रेम को व्यक्त किया गया है। मधुलिका जहाँ एक ओर प्रेम की पूर्णता के लिए अपने प्रियतम अरुण के साथ अपने जीवन का भी बलिदान देने को प्रस्तुत हो जाती है वहीं दूसरी ओर राष्ट्र के प्रति अपने उत्कट प्रेम को वैयक्तिक प्रेम पर न्यौछावर कर देती है। यह भावना पाठक के मन पर अमिट प्रभाव छोड़ जाती है और पाठ को बार–बार पढ़ने व संदर्भ को समझने की अपेक्षा करती है।

छायावादी चतुष्टयी की प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी के गद्य अपनी संवेदनशीलता और मार्मिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ प्रस्तुत 'घीसा' एक चर्चित रेखाचित्र है ,जिसमें महादेवी का एक संवेदनशील और सहज सा अध्यापकीय व्यत्तित्व उभर कर सामने आता है। इसमें वंचित समाज के पितृविहीन और कुपोषित शिष्य 'घीसा 'और गुरु 'महादेवी' के रागात्मक सबंधों के एहसास को देखा जा सकता है। घीसा के जीवन में सुधार और उमंग के भाव एक साथ दिखाई देते हैं, जो अल्पकालिक साबित होते हैं। पेड़ के नीचे लगनेवाली पाठशाला को लीपना, झाड़ना–बुहारना, गुरु जी के आने की राह तकना, खुद को साफ –सुथरा रखना, उनके आदेशों का समुचित निर्वहन, उन्हें भी कुछ देने की प्रबल इच्छा और साहस आदि ऐसे संदर्भ हैं जो संबंधों की भावविह्वलता की कहानी को जीवंत रूप में कहते हैं जिसे महादेवी इस रचना की शुरुआत में मार्मिक रूप में इस प्रकार रखती हैं –"वर्तमान की कौन सी अज्ञात प्रेरणा हमारे अतीत की किसी भूली हुई कथा को सम्पूर्ण मार्मिकता के साथ दोहरा जाती है, यह जान लेना सहज होता तो मैं भी आज गाँव के उस मलिन सहमें नन्हें से विद्यार्थी की सहसा याद आ जाने का कारण बता सकती, जो एक छोटी लहर के समान ही मेरे जीवन –तट को अपनी सारी आर्द्रता से छूकर अनंत जल राशि में विलीन हो गया।''

EPPA77

पाठ – 3.1

माटीवाली

विद्यासागर नौटियाल

जीवन परिचय

जाने माने साहित्यकार विद्यासागर नौटियाल का जन्म 20 सितम्बर] 1933 में टिहरी के मालीदेवल गाँव में हुआ। 13 साल की उम्र में शहीद नागेन्द्र सकलानी से प्रभावित होकर सामंतवाद विरोधी प्रजामंडल से जुड़ गए। रियासत ने उन्हें टिहरी के आज़ाद होने तक जेल में रखा। वे वन आंदोलन, चिपको आंदोलन के साथ पहली कविता 'भैस का कट्या' 1954 में इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्रिका कल्पना में प्रकाशित हुई। उन्होंने उपन्यासों, कहानियों के साथ ''मोहन गाता'' जाएगा जैसा आत्मकथ्य भी लिखा। अब तक उनके छह उपन्यास और तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। ''यमुना के बागी बेटे'' शीर्षक से आया उनका उपन्यास एक नये विषय के साथ गम्भीर प्रयोग है।

शहर के सेमल का तप्पड़ मोहल्ले की ओर बने आखिरी घर की खोली में पहुँचकर उसने दोनों हाथों की मदद से अपने सिर पर धरा बोझा नीचे उतारा। मिट्टी से भरा एक कंटर। माटी वाली। टिहरी शहर में शायद ऐसा कोई घर नहीं होगा जिसे वह न जानती हो या जहाँ उसे न जानते हों, घर के कुल निवासी, बरसों से वहाँ रहते आ रहे किराएदार, उनके बच्चे तलक। घर–घर में लाल मिट्टी देते रहने के उस काम को करने वाली वह अकेली है। उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं। उसके बगैर तो लगता है, टिहरी शहर के कई एक घरों में चूल्हों का जलना तक मुश्किल हो जाएगा। वह न रहे तो लोगों के सामने रसोई और भोजन कर लेने के बाद अपने चूल्हे–चौके की लिपाई करने की समस्या पैदा हो जाएगी। भोजन जुटाने और खाने की तरह रोज की एक समस्या। घर में साफ, लाल मिट्टी तो हर हालत में मौजूद रहनी चाहिए। चूल्हे–चौकों को लीपने के अलावा साल–दो साल में मकान के कमरे, दीवारों की गोबरी–लिपाई करने के लिए लाल माटी की जरूरत पड़ती रहती है। शहर से अन्दर कहीं माटाखान है नहीं। भागीरथी और भीलांगना, दो नदियों के तटों पर बसे हुए शहर की मिट्टी इस कदर रेतीली है कि उससे चूल्हों की लिपाई का काम नहीं किया जा सकता। आने वाले नए–नए किराएदार भी एक बार अपने घर के आँगन में उसे देख लेते हैं तो अपने आप माटी वाली के ग्राहक बन जाते हैं। घर–घर जाकर माटी बेचने वाली नाटे कद की एक बुढ़िया–माटीवाली।

शहरवासी सिर्फ माटी वाली को नहीं, उसके कंटर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं। रद्दी कपड़े को मोड़कर बनाए गए एक गोल डिल्ले के ऊपर लाल, चिकनी मिट्टी से छुलबुल भरा कनस्तर टिका रहता है। उसके ऊपर

किसी ने कभी कोई ढक्कन लगा हुआ नहीं देखा। अपने कंटर को इस्तेमाल में लाने से पहले वह उसके ऊपरी ढक्कन को काटकर निकाल फेंकती है। ढक्कन के न रहने पर कंटर के अन्दर मिट्टी भरने और फिर उसे खाली करने में आसानी रहती है। उसके कंटर को जमीन पर रखते–रखते सामने के घर से नौ–दस साल की एक छोटी लड़की कामिनी दौड़ती हुई वहाँ पहुँची और उसके सामने खड़ी हो गई।

''मेरी माँ ने कहा है, जरा हमारे यहाँ भी आ जाना।''

''अभी आती हूँ।''

घर की मालकिन ने माटी वाली को अपने कंटर की माटी कच्चे आँगन के एक कोने पर उड़ेल देने को कह दिया।

''तू बहुत भाग्यवान है। चाय के टैम पर आई है हमारे घर। भाग्यवान आए खाते वक्त।''

वह अपनी रसोई में गई और दो रोटियाँ लेती आई। रोटियाँ उसे सौंपकर वह फिर अपनी रसोई में घुस गई।

माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का वक्त नहीं था। घर की मालकिन के अंदर जाते ही माटी वाली ने इधर–उधर तेज निगाहें दौड़ाई। हाँ, इस वक्त वह अकेली थी। उसे कोई देख नहीं रहा था। उसने .फौरन अपने सिर पर धरे डिल्ले के कपड़े के मोड़ों को हड़बड़ी में एक झटके में खोला और उसे सीधा कर दिया। फिर इकहरा खुल जाने के बाद वह एक पुरानी चादर के एक फटे हुए कपड़े के रूप में प्रकट हुआ।

मालकिन के बाहर आँगन में निकलने से पहले उसने चुपके से अपने हाथ में थामी दो रोटियों में से एक रोटी को मोड़ा और उसे कपड़े पर लपेटकर गाँठ बाँध दी। साथ ही अपना मुँह यों ही चलाकर खाने का दिखावा करने लगी। घर की मालकिन पीतल के एक गिलास में चाय लेकर लौटी। उसने वह गिलास बुढ़िया के पास जमीन पर रख दिया।

''ले, सद्दा–बासी, साग कुछ है नहीं अभी। इसी चाय के साथ निगल जा।''

माटी वाली ने खुले कपड़े के एक छोर से पूरी गोलाई में पकड़कर पीतल का वह गरम गिलास हाथ में उठा लिया। अपने होंठों से गिलास के किनारे को छुआने से पहले, शुरू–शुरू में उसने उसके अन्दर रखी गरम चाय को ठंडा करने के लिए सू–सू करके, उस पर लंबी–लंबी फूँकें मारीं। तब रोटी के टुकड़ों को चबाते हुए धीरे–धीरे चाय सुड़कने लगी।

''चाय तो बहुत अच्छा साग हो जाती है ठकुराइनजी।''

''भूख तो अपने में एक साग होती है बुढ़िया। भूख मीठी कि भोजन मीठा?''

''तुमने अभी तक पीतल के गिलास सँभालकर रखे हैं। पूरे बाजार में और किसी घर में अब नहीं मिल सकते ये गिलास।''

''इनके खरीदार कई बार हमारे घर के चक्कर काटकर लौट गए। पुरखों की गाढ़ी कमाई से हासिल की गई चीजों को हराम के भाव बेचने को मेरा दिल गवाही नहीं देता। हमें क्या मालूम कैसी तंगी के दिनों में अपनी जीभ पर कोई स्वादिष्ट, चटपटी चीज़ रखने के बजाय मन मसोसकर दो–दो पैसे जमा करते रहने के बाद खरीदी होंगी उन्होंने ये तमाम चीजें, जिनकी हमारे लोगों की नज़रों में अब कोई कीमत नहीं रह गई है। बाज़ार में जाकर पीतल का भाव पूछो ज़रा, दाम सुनकर दिमाग चकराने लगता है। और ये व्यापारी हमारे घरों से हराम के भाव इकट्ठा कर ले जाते हैं, तमाम बर्तन–भाँड़े। काँसे के बरतन भी गायब हो गए हैं, सब घरों से।''

''इतनी लंबी बात नहीं सोचते बाकी लोग। अब जिस घर में जाओं वहाँ या तो स्टील के भाँडे दिखाई देते हैं या फिर काँच और चीनी मिट्टी के।''

''अपनी चीज का मोह बहुत बुरा होता है। मैं तो सोचकर पागल हो जाती हूँ कि अब इस उमर में इस शहर को छोड़कर हम जाएँगे कहाँ।''

''ठकुराइन जी, जो जमीन–जायदादों के मालिक हैं, वे तो कहीं न कहीं ठिकाने पर जाएँगे ही। पर मैं सोचती हूँ मेरा क्या होगा! मेरी तरफ देखने वाला तो कोई भी नहीं।''

चाय खत्म कर माटी वाली ने एक हाथ में अपना कपड़ा उठाया, दूसरे में खाली कंटर और खोली से बाहर निकलकर सामने के घर में चली गई।

उस घर में भी 'कल हर हालत में मिट्टी ले आने' के आदेश के साथ उसे दो रोटियाँ मिल गईं। उन्हें भी उसने अपने कपड़े के एक–दूसरे छोर में बाँध लिया। लोग जानें तो जानें कि वह ये रोटियाँ अपने बुड्ढे के लिए ले जा रही है। उसके घर पहुँचते ही अशक्त बुड्ढा कातर नज़रों से उसकी ओर देखने लगता है। वह घर में रसोई बनने का इंतजार करने लगता है। आज वह घर पहुँचते ही तीन रोटियाँ अपने बुड्ढे के हवाले कर देगी। रोटियों को देखते ही चेहरा खिल उठेगा बुड्ढे का।

साथ ही ऐसा ही बोल देगी, ''साग तो कुछ है नहीं अभी।''

और तब उसे जवाब सुनाई देगा, ''भूख मीठी कि भोजन मीठा ?''

उनका गाँव शहर के इतना पास भी नहीं हैं। कितना ही तेज चलो फिर भी घर पहुँचने में एक घंटा तो लग ही जाता है। रोज़ सुबह निकल जाती है वह अपने घर से। पूरा दिन माटाखान में मिट्टी खोदने, फिर विभिन्न स्थानों में फैले घरों तक उसे ढोने में बीत जाता है। घर पहुँचने से पहले रात घिरने लगती है। उसके पास अपना कोई खेत नहीं । जमीन का एक भी टुकड़ा नहीं। झोपड़ी, जिसमें वह गुजारा करती है, गाँव के एक ठाकुर की जमीन पर खड़ी है। उसकी जमीन पर रहने की एवज में उस भले आदमी के घर पर भी माटी वाली को कई तरह के कामों की बेगार करनी होती है।

नहीं, आज वह एक गठरी में बदल गए अपने बुड्ढे को कोरी रोटियाँ नहीं देगी। माटी बेचने से हुई आमदनी से उसने एक पाव प्याज़ खरीद लिया। प्याज़ को कूटकर वह उन्हें जल्दी–जल्दी तल लेगी। बुड्ढे को पहले रोटियाँ दिखाएगी ही नहीं। सब्जी तैयार होते ही परोस देगी उसके सामने दो रोटियाँ। अब वह दो रोटियाँ भी नहीं खा सकता। एक ही रोटी खा पाएगा या हद से हद डेढ़। अब उसे ज़्यादा नहीं पचता। बाकी बची डेढ़ रोटियों से माटी वाली अपना काम चला लेगी। एक रोटी तो उसके पेट में पहले ही जमा हो चुकी है। मन में यह सब सोचती, हिसाब लगाती हुई वह अपने घर पहुँच गई।

उसके बुड्ढे को अब रोटी की कोई ज़रूरत नहीं रह गई थी। माटीवाली के पाँवों की आहट सुन कर हमेशा की तरह आज वह चौंका नहीं। उसने अपनी नजरें उसकी ओर नहीं घुमाईं। घबराई हुई माटी वाली ने उसे छूकर देखा। वह अपनी माटी को छोड़कर जा चुका था।

टिहरी बाँध पुनर्वास के साहब ने उससे पूछा कि वह रहती कहाँ है?

''तुम तहसील से अपने घर का प्रमाणपत्र ले आना।''

''मेरी जिनगी तो इस शहर के तमाम घरों में माटी देते हुए गुज़र गई साब।''

''माटी कहाँ से लाती हो ?''

''माटाखान से लाती हूँ माटी।''

''वह माटाखान चढ़ी है तेरे नाम ? अगर है तो हम तेरा नाम लिख देते हैं।''

''माटाखान तो मेरी रोज़ी है साहब।''

''बुढ़िया हमें जमीन का कागज़ चाहिए, रोजी का नहीं।''

''बाँध बनने के बाद मैं क्या खाऊँगी साब ?''

''इस बात का फैसला तो हम नहीं कर सकते। वह बात तो तुझे खुद ही तय करनी पड़ेगी।''

टिहरी बाँध की दो सुरंगों को बंद कर दिया गया है। शहर में पानी भरने लगा है। शहर में आपाधापी मची है। शहरवासी अपने घरों को छोड़कर वहाँ से भागने लगे हैं। पानी भर जाने से सबसे पहले कुल श्मशान घाट डूब गए हैं।

माटी वाली अपनी झोपड़ी के बाहर बैठी है। गाँव के हर आने–जाने वाले से एक ही बात कहती जा रही है – ''गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए।''

शब्दार्थ

कंटर – कनस्तर; **डिल्ले** – सिर पर बोझा ढोने के लिए कपड़े से बनाई गई गद्दी; (गुँडरी) **माटाखान** – लिपाई–पुताई के लिए मिट्टी निकालने वाली जगह; **तंगी** – अभाव, गरीबी; **एवज** – बदले; **पुनर्वास** – पुनः बसाना; **अशक्त** – असहाय/कमजोर; **आपाधापी** – भागदौड़/हलचल; **बेगार** – बिना पैसों के काम करना।

अभ्यास

पाठ से

1. माटीवाली के बिना टिहरी शहर के कई घरों में चूल्हों तक का जलना क्यों मुश्किल हो जाता था?
2. माटीवाली का कंटर किस प्रकार का था?
3. माटीवाली का एक रोटी छिपा देना उसकी किस मनःस्थिति की ओर संकेत करता है?
4. घर की मालकिन ने पीतल के गिलासों को अभी तक संभालकर क्यों रखा था?
5. माटीवाली और मालकिन के संवाद में व्यापारियों की कौन सी प्रवृत्ति का उल्लेख किया गया था?
6. कहानी के अंत में लोग अपने घरों को छोड़कर क्यों जाने लगे थे?

पाठ से आगे

1. (क) बाँध, सड़क व अन्य सरकारी निर्माण कार्य होने पर स्थानीय लोगों को किस–किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है? चर्चा करके लिखिए।

   (ख) इस प्रकार के विकास कार्यों के क्या–क्या फायदे होते हैं? अपने विचार लिखिए।
2. पहले के जमाने में मिट्टी का उपयोग किन–किन कामों में होता था तथा वर्तमान समय में इसका उपयोग आप कहाँ–कहाँ देखते हैं ? अंतर बताते हुए लिखिए ।
3. बाँध बन जाने के बाद माटीवाली का शेष जीवन कैसे बीता होगा? कल्पना करके लिखिए।
4. माटीवाली की तरह और भी कई लोग हैं जिनके पास रहने के लिए अपनी जगह नहीं होती और न ही पेट भरने के लिए पर्याप्त भोजन। ऐसे लोगों के लिए सरकार को क्या–क्या उपाय करने चाहिए, शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।
5. ऐसा क्यों होता जा रहा है कि आजकल पीतल, काँसे, एल्यूमिनियम के बर्तनों की बजाय घरों में ज्यादातर काँच, चीनी मिट्टी, मेलामाईन और प्लास्टिक से बने बर्तनों का इस्तेमाल होने लगा है? स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं रोजगार आदि की दृष्टि से इसके नुकसान व फायदों पर अपने विचार लिखिए।
6. 'मृणशिल्प कला' अर्थात मिट्टी से कलाकृतियाँ बनाना

   (क) आप अपने आसपास इस तरह की कलाकृतियाँ कहाँ–कहाँ देखते हैं? तथा ये भी पता कीजिए कि इस कला की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?

   (ख) आपके शहर, राज्य के कुछ ऐसे कलाकारों के नाम बताइए जिन्होंने मृणशिल्प कला के क्षेत्र में प्रदेश को पहचान दिलाई हो।

EPY68U

भाषा के बारे में

1. 'ई', 'इन' और 'आइन' प्रत्ययों का इस्तेमाल प्रायः स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए किया जाता है। निम्न उदाहरणों को समझते हुए तालिका में निम्न प्रत्ययों से बने अन्य शब्द लिखिए–

	'ई' प्रत्यय	**'इन' प्रत्यय**	**'आइन' प्रत्यय**
उदा0	लड़की	मालकिन	पंडिताइन

EQ82AH

2. पाठ में आए निम्न मुहावरों के अर्थ लिखते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) दिल गवाही नहीं देता।

(ख) मन मसोसकर रह जाना।

(ग) कातर नज़रों से देखना।

(घ) चेहरा खिल उठना।

(ङ) दिमाग चकराने लगना।

3. (क) निम्नांकित तीनों वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

(अ) मिट्टी से भरा एक कंटर।

(ब) उस काम को करनेवाली वह अकेली है।

(स) उसका प्रतिद्वन्द्वी कोई नहीं।

आप पाएँगे कि– इनके पढ़ने मात्र से ही इनका (प्रचलित) अर्थ आसानी से समझ में आता है।

इसे शब्द की अभिधा शक्ति के नाम से जाना जाता है।

(ख) नीचे दिए गए इन वाक्यों को भी पढ़िए–

(अ) भूख तो अपने में एक 'साग' होती है।

(ब) वह अपनी 'माटी' को छोड़कर जा चुका था।

(स) गरीब आदमी का 'श्मशान' नहीं उजड़ना चाहिए।

उपरोक्त तीनों वाक्यों में साग, माटी और श्मशान से तात्पर्य क्रमशः खाद्य सामग्री, पंचतत्व से बने शरीर और 'घर' से है।

इस प्रकार इन वाक्यों को पढ़कर उनके अर्थ पर यदि हम विचार करें तो पाते हैं कि वाक्य के वाच्यार्थ या मुख्यार्थ से भिन्न अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) प्रकट होते हैं। इसे 'लक्षणा' शक्ति के नाम से जाना जाता है।

सहपाठियों के साथ बैठकर अभिधा और लक्षणा शक्ति के पाँच–पाँच वाक्यों को पाठ्यपुस्तक से ढूँढ़कर लिखिए एवं स्वयं भी रचना कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. अपने आस–पास रहने वाले किसी ऐसे व्यक्ति अथवा कलाकार से मिलिए जो मिट्टी के बर्तन या मूर्तियाँ आदि बनाने का कार्य करता है। उससे साक्षात्कार करके निम्न बिन्दुओं के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए–
    - ये लोग कच्ची सामग्री कहाँ से जुटाते हैं?
    - कलाकृति/बर्तन बनाने से पूर्व मिट्टी तैयार करने की क्या प्रक्रिया अपनाते हैं?
    - एक कलाकृति तैयार करने की पूरी प्रक्रिया (बनाना, पकाना, रँगना इत्यादि) क्या–क्या होती है?
    - निर्मित सामग्री को वे कहाँ–कहाँ बेचते हैं?
    - इस व्यवसाय से प्राप्त आय, क्या उनके जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त है या नहीं?
    - उन्हें किस–किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
2. गंगा नदी को ''भागीरथी'' कहे जाने के पीछे जो प्रचलित पौराणिक कथा है, उसे अपने शिक्षक या बड़ों से जानने का प्रयास कीजिए और लिखिए।

EQGXC5

पाठ – 3.2

कन्यादान

EQQTDS

ऋतुराज

जीवन परिचय

ऋतुराज का जन्म सन् 1940 में भरतपुर में हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से उन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया। उनकी अब तक आठ कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें 'एक मरणधर्मा और अन्य', 'पुल पर पानी', 'सुरत निरत' और 'लीला मुखारविंद' प्रमुख है। उन्हें सोमदत्त, परिमल सम्मान, मीरा पुरस्कार, पहल सम्मान तथा बिहारी पुरस्कार मिल चुके हैं। मुख्य धाराओं से अलग समाज के हाशिए के लोगों की चिंताओं को ऋतुराज ने अपने लेखन का मुख्य विषय बनाया है। उनकी कविताओं में दैनिक जीवन के अनुभवों का यथार्थ है और वे अपने आस–पास रोजमर्रा में घटित होने वाले सामाजिक शोषण और विडम्बनाओं पर निगाह डालते हैं। यही कारण है कि उनकी भाषा अपने परिवेश और लोक जीवन से जुड़ी हुई है।

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो।

लड़की अभी सयानी नहीं थी,
अभी इतनी भोली, सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था।
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की,
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना।
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है,
जलने के लिए नहीं।

वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के।

माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

शब्दार्थ

कन्यादान – कन्या का दान, **प्रामाणिक** – प्रमाण पर आधारित; **आभास** – लगना, महसूस होना; **लयबद्ध** – लय में बँधी हुई; **शाब्दिक** – शब्द से संबंधित; **रीझना** – मोहित होना।

अभ्यास

पाठ से

1. इस कविता में किसके–किसके मध्य संवाद हो रहा है?
2. लड़की को दान देते वक्त माँ को अंतिम पूँजी देने जैसा दुःख क्यों हो रहा है?
3. '' पानी में झाँककर कभी अपने चेहरे पर मत रीझना'' इस पंक्ति के माध्यम से माँ, बेटी को क्या सीख देना चाहती है?
4. कविता में माँ के अनुभवों की पीड़ा किन–किन पंक्तियों में उभरकर आई है?
5. ''लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना'' में किस–प्रकार के आदर्शों को छोड़ने और किन–किन आदर्शों को अपनाने की बात कही गई है?
6. ''पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की, कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की'' से कवि का क्या अभिप्राय है?

पाठ से आगे

1. कविता में एक माँ द्वारा अपनी बेटी को जिस तरह की सीख दी गई है, वह वर्तमान में कितनी प्रासंगिक और औचित्यपूर्ण है? समूह में विचार–विमर्श कर लिखिए।
2. विवाह में कन्या के दान की परंपरा चली आ रही है। क्या वास्तव में 'कन्या' दान की वस्तु होती है? कक्षा में चर्चा कर प्राप्त विचार को लिखिए।

EQZPFF

3. कन्यादान के साथ ही वर पक्ष को धन, कीमती वस्तुएँ आदि भी भेंट स्वरूप दी जाती हैं, जिससे दहेज नामक सामाजिक बुराई को आश्रय मिलता है। इसकी वजह से कन्या के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है साथ ही न केवल कन्या अपितु उसके माता–पिता को भी नाना तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कक्षा में उक्त समस्या पर सार्थक चर्चा का आयोजन कर उसका लेखन कीजिए।
4. 'महिलाओं को आदर्श छवि में बने रहने की परंपरागत हिदायत देना वास्तव में उन्हें कमजोर बनाए रखना होता है।' इस कथन के पक्ष–विपक्ष में अपने तर्क दीजिए।
6. स्वयं को सबल बनाने हेतु नारी को अपनी भूमिका में किस प्रकार के बदलाव की आवश्यकता है?
7. एक बेटे, भाई अथवा लड़की की स्वयं क्या भूमिका हो जिससे एक समाज में स्त्री के प्रति लोगों का स्वस्थ नजरिया हो।

भाषा के बारे में

ER9KH3

1. समाज में विवाह से जुड़ी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, उम्र, रंग–रूप आदि आधारों पर तमाम रुढ़िवादी भ्रांतियाँ एवं व्यवहार आज भी प्रचलन में हैं। इन्हीं मुद्दों को रेखांकित करते हुए एक आलेख तैयार कीजिए।
2. एक ऐसी कविता की रचना कीजिए जिसमें आपकी चाहत, महत्वाकांक्षा परिलक्षित (मुखरित) होती हो।
3. अपनी बड़ी बहन के विवाह की तैयारियों संबंधी जानकारी देते हुए अपनी सहेली/दोस्त को पत्र लिखिए।
4. मुख्यमंत्री कन्यादान योजना का लाभ उठाने हेतु मुख्यमंत्री कार्यालय को आवेदन पत्र लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. बेटी–बचाओ, बेटी बढ़ाओ, 'नारी शिक्षा', कन्या–भ्रूण हत्या आदि विषयों पर चर्चा कर चार्ट पेपर पर लेखन कीजिए।
2. 'स्त्री सम्माननीया है' इस आशय के श्लोक, दोहे आदि को पुस्तकालय से ढूँढ़कर पढ़िए और किन्हीं पाँच का लेखन कीजिए।
3. स्त्री को सबला बनाने हेतु विचार संबंधी दस स्लोगन बनाइए एवं उनका लेखन कीजिए।
4. (क) विवाह में 'कन्यादान' की रस्म क्यों होती है? घर के बड़ों से पता करके लिखिए।
   (ख) क्या सभी समुदायों में विवाह की रस्में समान होती हैं? अपने उत्तर के पक्ष में दो अलग–अलग समुदाय से जुड़े लोगों से जानकारी प्राप्त कीजिए और उन रस्मों के बारे में लिखिए।

ERIGIQ

पाठ – 3.3

ERSCKD

घीसा

महादेवी वर्मा

जीवन परिचय

लेखिका और कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद में हुआ था। इन्होंने सन् 1932 में प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। गद्य और पद्य दोनों पर ही इन्हें समानाधिकार प्राप्त था। गद्य साहित्य में संस्मरणों और रेखाचित्र लेखन को प्रारंभ करने का श्रेय इन्हें ही जाता है। इनके संस्मरणों में कोमल मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति बहुत ही हृदयस्पर्शी एवं मार्मिकता के साथ हुई है। उनके पात्र प्रायः अनाथ, स्नेह से वंचित, गरीब समाज द्वारा प्रताड़ित किंतु ईमानदार व्यक्ति अथवा पशु–पक्षी होते हैं। इन्होंने नारी की समस्याओं को भी बहुत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया है। इनकी भाषा विशुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है, किन्तु आवश्यकतानुरूप देशज शब्दों का प्रयोग भी इनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'यामा' तथा 'दीपशिखा' इनके काव्य संग्रह हैं। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'श्रृंखला की कड़ियाँ', 'मेरा परिवार', 'पथ के साथी', 'क्षणदा' आदि इनकी गद्य रचनाएँ हैं। इनका गद्य साहित्य, समाज का जीता–जागता एलबम है।

इनकी रचना 'यामा' को मंगला प्रसाद पारितोषक तथा काव्य संकलन 'नीरजा' को सेक्सरिया पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन्हें 'पद्म भूषण' अलंकार, 'भारतीय ज्ञानपीठ', 'साहित्य अकादमी' एवं 'भारत–भारती' पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इन्हें आधुनिक युग की मीरा की उपाधि प्रदान की गई है।

वर्तमान की कौन सी अज्ञात प्रेरणा हमारे अतीत की किसी भूली हुई कथा को सम्पूर्ण मार्मिकता के साथ दोहरा जाती है यह जान लेना सहज होता, तो मैं भी आज गाँव के उस मलिन, सहमे, नन्हें से विद्यार्थी की सहसा याद आ जाने का कारण बता सकती, जो एक छोटी लहर के समान ही मेरे जीवन तट को अपनी सारी आर्द्रता से छूकर अनंत जलराशि में विलीन हो गया है।

गंगा पार झूँसी के खंडहर और उसके आस–पास के गाँवों के प्रति मेरा जैसा अकारण आकर्षण रहा है, उसे देख कर ही संभवतः लोग जन्म–जन्मान्तर के संबंध का व्यंग्य करने लगे हैं। है भी तो आश्चर्य की बात !

जिस अवकाश के समय को लोग ईष्ट मित्रों से मिलने, उत्सवों में सम्मिलित होने तथा अन्य आमोद–प्रमोद के लिए सुरक्षित रखते हैं, उसी को मैं इस खंडहर और उसके क्षत–विक्षत चरणों पर पछाड़ें खाती हुई भागीरथी के तट पर काट ही नहीं, सुख से काट देती हूँ।

दूर–पास बसे हुए, गुड़ियों के बड़े–बड़े घरौंदों के समान लगने वाले कुछ लिपे–पुते, कुछ जीर्ण–शीर्ण घरों से स्त्रियों का झुण्ड पीतल–ताँबे के चमचमाते मिट्टी के नए लाल और पुराने भदरंग घड़े लेकर गंगाजल भरने आता है, उसे भी मैं पहचान गई हूँ। उनमें कोई बूटेदार लाल, कोई सफेद और कोई मैल और सूत में अद्वैत स्थापित करने वाली, कोई कुछ नई और कोई छेदों से चलनी बनी हुई धोती पहने रहती हैं। किसी की मोम लगी पाटियों के बीच में एक अंगुल चौड़ी सिंदूर रेखा अस्त होते हुए सूर्य की किरणों में चमकती रहती है और किसी के कड़वे तेल से भी अपरिचित रूखी जटा बनी हुई छोटी–छोटी लटें मुख को घेर कर उसकी उदासी को और अधिक केंद्रित कर देती है। किसी की साँवली गोल कलाई पर शहर की कच्ची नगदार चूड़ियों के नग रह–रहकर हीरे से चमक जाते हैं और किसी के दुर्बल काले पहुँचे पर लाख की पीली मैली चूड़ियाँ काले पत्थर पर मटमैले चंदन की मोटी लकीरें जान पड़ती हैं। कोई अपने गिलट के कड़े युक्त हाथ घड़े की ओट में छिपाने का प्रयत्न सा करती रहती है और कोई चाँदी के पछेली–ककना की झनकार के साथ ही बात करती है। किसी के कान में लाख की पैसे वाली तरकी धोती से कभी–कभी झाँक भर लेती है और किसी की ढारें लंबी जंजीर से गला और गाल एक करती रहती है। किसी के गुदना गुदे गेंहुए पैरों में चाँदी के कड़े सुडौलता की परिधि से लगते हैं और किसी की फैली उँगलियों और सफेद एड़ियों के साथ मिली हुई स्याही राँगे और काँसे के कड़ों को लोहे की साफ की हुई बेड़ियाँ बना देती हैं।

वे सब पहले हाथ–मुँह धोती हैं, फिर पानी में कुछ घुसकर घड़ा भर लेती हैं– तब घड़ा किनारे रख, सिर पर इंडुरी ठीक करती हुई मेरी ओर देखकर कभी मलिन, कभी उजली कभी दुःख की व्यथा–भरी, कभी सुख की कथा–भरी मुस्कान से मुस्करा देती हैं। अपने – मेरे बीच का अंतर उन्हें ज्ञात है, तभी कदाचित् वे इस मुस्कान के सेतु से उसका वार–पार जोड़ना नहीं भूलतीं।

ग्वालों के बालक अपनी चरती हुई गाय–भैंसों में से किसी को उस ओर बहकते देखकर ही लकुटी लेकर दौड़ पड़ते, गड़रियों के बच्चे अपने झुंड की एक भी बकरी या भेड़ को उस ओर बढ़ते देखकर कान पकड़कर खींच ले जाते हैं और व्यर्थ दिन भर गिल्ली–डंडा खेलनेवाले निठल्ले लड़के भी बीच–बीच में नजर बचाकर मेरा रुख देखना नहीं भूलते।

उस पार शहर में दूध बेचने जाते या लौटते हुए ग्वाले, किले में काम करने जाते या घर आते हुए मजदूर, नाँव बाँधते या खोलते हुए मल्लाह, कभी–कभी 'चुनरी त रंगाउस लाल मजीठी हो' गाते–गाते मुझ पर दृष्टि पड़ते ही अचकचा कर चुप हो जाते हैं। कुछ विशेष सभ्य होने का गर्व करने वालों को मुझे एक सलज्ज नमस्कार भी प्राप्त हो जाता है।

कह नहीं सकती, अब और कैसे मुझे उन बालकों को कुछ सिखाने का ध्यान आए पर जब बिना कार्यकारिणी के निर्वाचन के, बिना पदाधिकारियों के चुनाव के, बिना भवन के, बिना चंदे की अपील के और सारांश यह कि बिना किसी चिर–परिचित समारोह के, मेरे विद्यार्थी पीपल के पेड़ की घनी छाया में मेरे चारों ओर एक् हो गए, तब मैं बड़ी कठिनाई से गुरु के उपयुक्त गंभीरता का भार वहन कर सकी।

और वे जिज्ञासु कैसे थे सो कैसे बताऊँ ! कुछ कानों में बालियाँ और हाथों में कड़े पहने, धुले कुरते और ऊँची धोती में नगर और ग्राम का सम्मिश्रण जान पड़ते थे, कुछ अपने बड़े भाई का पाँव तक लम्बा कुरता पहने खेत में डराने के लिए खड़े किए हुए नकली आदमी का स्मरण दिलाते थे, कुछ उभरी पसलियों, बड़े पेट और टेढ़ी दुर्बल टाँगों के कारण अनुमान से ही मनुष्य संतान की परिभाषा में आ सकते थे और कुछ अपने दुर्बल, रूखे और मलिन मुखों की करुण सौम्यता और निष्प्रभ पीली आँखों में संसार भर की उपेक्षा बटोर बैठे थे; पर घीसा उनमें अकेला ही रहा और आज भी मेरी स्मृति में अकेला ही आता है।

वह गोधूली मुझे अब तक नहीं भूली। संध्या के लाल सुनहली आभा वाले उड़ते हुए दुकूल पर रात्रि ने मानों छिपकर अंजन की मूठ चला दी थी। मेरा नाव वाला कुछ चिंतित सा लहरों की ओर देख रहा था ; बूढ़ी भक्तिन मेरी किताबें, कागज–कलम, आदि संभाल कर नाव पर रख कर बढ़ते अंधकार पर खिजलाकर बुदबुदा रही थी, या मुझे कुछ सनकी बनाने वाले विधाता पर, यह समझना कठिन था। बेचारी मेरे साथ रहते–रहते दस लंबे वर्ष काट आई है, नौकरानी से अपने आपको एक प्रकार की अभिभाविका मानने लगी है;

परंतु मेरी सनक का दुष्परिणाम सहने के अतिरिक्त उसे क्या मिला है ? सहसा ममता से मेरा मन भर आया परन्तु नाव की ओर बढ़ते हुए मेरे पैर, फैलते हुए अंधकार में से एक स्त्री–मूर्ति को अपनी ओर आता देख ठिठक गए। साँवले कुछ लंबे से मुखड़े में पतले स्याह ओठ कुछ अधिक स्पष्ट हो रहे थे। आँखें छोटी पर व्यथा से आर्द्र थीं। मलिन, बिना किनारी की गाढ़े की धोती ने उसके सलूका रहित अंगों को भलीभाँति ढँक लिया था; परंतु तब भी शरीर की सुडौलता का आभास मिल रहा था। कंधे पर हाथ रखकर वह जिस दुर्बल अर्धनग्न बालक को अपने पैरों से चिपकाए हुए थी, उसे मैंने संध्या के झुटपुटे में ठीक से नहीं देखा।

स्त्री ने रुक–रुककर कुछ शब्दों और कुछ संकेत में जो कहा, उससे मैं केवल यह समझ सकी कि उसके पति नहीं है, दूसरों के घर लीपने–पोतने का काम करने वह चली जाती है और उसका अकेला लड़का ऐसे ही घूमता रहता है। मैं इसे भी और बच्चों के साथ बैठने दिया करूँ, तो यह कुछ तो सीख सके।

दूसरे इतवार को मैंने उसे सबसे पीछे अकेले एक ओर दुबक कर बैठे हुए देखा। पक्का रंग, पर गठन में विशेष सुडौल, मलिन मुख जिसमें दो पीली, पर श्वेत आँखें जड़ी सी जान पड़ती थीं। कस कर बंद किए हुए पतले होठों की दृढ़ता और सिर पर खड़े हुए छोटे–छोटे रूखे बालों की उग्रता उसके मुख की संकोच भरी कोमलता से विद्रोह कर रही थी। उभरी हड्डियों वाली गर्दन को सँभाले हुए झुके कंधो से रक्तहीन मटमैली हथेलियों और टेढ़े–मेढ़े कटे हुए नाखूनों युक्त हाथों वाली पतली बाँहे ऐसी झूलती थीं, जैसे ड्रामा में विष्णु बनने वाले की दो नकली भुजाएँ। निरंतर दौड़ते रहने के कारण उस लचीले शरीर में दुबले पैर ही विशेष पुष्ट जान पड़ते थे। बस ऐसा ही था वह, न नाम में कवित्व की गुंजाइश, न शरीर में।

पर उसकी सचेत आँखों में न जाने कौन सी जिज्ञासा भरी थी। वे निरंतर घड़ी की तरह खुली मेरे मुख पर टिकी ही रहती थीं। मानो मेरी सारी विद्या बुद्धि को सीख लेना ही उनका ध्येय था।

लड़के उससे कुछ खिंचे–खिंचे से रहते थे। इसलिए नहीं कि वह कोरी था वरन् इसलिए कि किसी की माँ, किसी की नानी, किसी की बुआ आदि ने घीसा से दूर रहने की नितांत आवश्यकता उन्हें कान पकड़–पकड़ कर समझा दी थी। यह भी उन्होंने बताया और बताया घीसा के सबसे अधिक कुरूप नाम का रहस्य। बाप तो जन्म से पहले ही नहीं रहा घर में कोई देखने भालने वाला न होने के कारण माँ उसे बँदरिया के बच्चे के समान चिपकाए फिरती थी। उसे एक ओर लिटाकर जब वह मजदूरी के काम में लग जाती थी, तब पेट के बल घिसट–घिसटकर बालक संसार के प्रथम अनुभव के साथ–साथ इस नाम की योग्यता को भी सार्थक करता जाता था।

फिर धीरे–धीरे अन्य स्त्रियाँ भी मुझे आते–जाते रोककर अनेक प्रकार की भाव भंगिमा के साथ एक विचित्र सांकेतिक भाषा में घीसा की जन्मजात अयोग्यता का परिचय देने लगीं। क्रमशः मैंने उसके नाम के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं जाना।

उसका बाप बड़ा ही अभिमानी था और भला आदमी बनने का इच्छुक। डलिया आदि बुनने का काम छोड़कर वह थोड़ी बढ़ईगिरी सीख आया और केवल इतना ही नहीं, एक दिन चुपचाप दूसरे गाँव से युवती वधू लाकर उसने अपने गाँव की सब सजातीय सुंदरी बालिकाओं को उपेक्षित और उनके योग्य माता–पिता को निराश कर डाला। मनुष्य इतना अन्याय सह सकता है; परन्तु ऐसे अवसर पर भगवान् की असहिष्णुता प्रसिद्ध ही है। इसी से जब गाँव के चौखट किवाड़ बनाकर और ठाकुरों के घरों में सफेदी करके उसने कुछ ठाट–बाट से रहना आरंभ किया, तब अचानक हैजे के बहाने वह वहाँ बुला लिया गया, जहाँ न जाने का बहाना न उसकी बुद्धि सोच सकी, न अभिमान। पर स्त्री भी कम गर्वीली न निकली। बिना स्वर–ताल के आँसू गिराकर, बाल खोलकर, चूड़ियाँ फोड़कर और बिना किनारे की धोती पहनकर जब उसने बड़े घर की विधवा का स्वाँग भरना आरंभ किया, तब तो सारा समाज क्षोभ के समुद्र में डूबने उतराने लगा उस पर घीसा बाप के मरने के बाद हुआ है। हुआ तो वास्तव में छः महीने बाद, परन्तु उस समय के संबंध में क्या कहा जाए, जिसका कभी एक क्षण वर्ष बीतता है और कभी एक वर्ष क्षण हो जाता है। इसी से यदि वह छः मास का समय रबर की तरह खिंचकर एक साल की अवधि तक पहुँच गया, तो इसमें गाँव वालों का क्या दोष ?

यह कथा अनेक क्षेपकोमय विस्तार के साथ सुनाई तो गई थी मेरा मन फेरने के लिए और मन फिरा भी; परन्तु किसी सनातन नियम से कथावाचक की ओर न फिरकर कथा के नायकों की ओर फिर गया और इस प्रकार घीसा मेरे और अधिक निकट आ गया। वह अपना जीवन संबंधी अपवाद कदाचित् पूरा नहीं समझ पाया था; परंतु

अधूरे का भी प्रभाव उस पर कम न था, क्योंकि वह सब को अपनी छाया से इस प्रकार बचाता रहता था मानो उसे कोई छूत की बीमारी हो।

पढ़ने, उसे सबसे पहले समझने, उसे व्यवहार के समय स्मरण रखने, पुस्तक में एक भी धब्बा न लगाने, स्लेट को चमचमाती रखने और अपने छोटे से छोटे काम का उत्तरदायित्व बड़ी गंभीरता से निभाने में उसके समान कोई चतुर न था। इसी से कभी–कभी मन चाहता था कि उसकी माँ से उसे माँग ले जाऊँ और अपने पास रखकर उसके विकास की उचित व्यवस्था कर दूँ – परन्तु उस उपेक्षिता, पर मानिनी विधवा का वही एक सहारा था। वह अपने पति का स्थान छोड़ने पर प्रस्तुत न होगी, वह भी मेरा मन जानता था और उस बालक के बिना उसका जीवन कितना दुर्वह हो सकता है, यह भी मुझसे छिपा न था। फिर नौ साल के कर्तव्यपरायण घीसा की गुरुभक्ति देखकर उसकी मातृभक्ति के संबंध में कुछ संदेह करने का स्थान ही नहीं रह जाना था और इस तरह घीसा वहीं और उन्हीं कठोर परिस्थितियों में रहा, जहाँ क्रूरतम नियति ने केवल अपने मनोविनोद के लिए उसे रख दिया था।

शनिश्चर के दिन वह अपने छोटे दुर्बल हाथों से पीपल की छाया को गोबर–मिट्टी से पीला चिकनापन दे आता था। फिर इतवार को माँ के मजदूरी पर जाते ही एक मैले, फटे कपड़े में बँधी मोटी–रोटी और कुछ नमक या थोड़ा चबेना और डली गुड़ बगल में दबाकर पीपल की छाया को एक बार फिर झाड़ने बुहारने के पश्चात् वह गंगा के तट पर आ बैठता और अपनी पीली सतेज आँखों पर क्षीण साँवले हाथ की छाया कर दूर–दूर तक दृष्टि को दौड़ाता रहता जैसे ही उसे मेरी नीली सफेद नाव की झलक दिखाई पड़ती वैसे ही वह अपनी पतली टाँगों पर तीर के समान उड़ता और बिना नाम लिए हुए भी साथियों को सुनाने के लिए गुरु साहब कहता हुआ फिर पेड़ के नीचे पहुँच जाता था न जाने कितनी बार दुहराए–तिहराए हुए कार्यक्रम की एक अंतिम आवृत्ति आवश्यक हो उठती। पेड़ की नीची डाल पर रखी हुई मेरी शीतलपाटी उतार कर बार–बार झाड़–पोंछकर बिछाई जाती, कभी काम न आने वाली सूखी स्याही से काली कच्चे काँच की दवात, टूटे निब और उखड़े हुए रंग वाले भूरे, हरे कलम के साथ पेड़ के कोटर से निकालकर यथास्थान रख दी जाती और तब इस विचित्र पाठशाला का विचित्र मंत्री और निराला विद्यार्थी कुछ आगे बढ़कर मेरे सप्रणाम स्वागत के लिए प्रस्तुत हो जाता।

महीने में चार दिन ही मैं वहाँ पहुँच सकती थी और कभी–कभी काम की अधिकता से एक आधे छुट्टी का दिन और भी निकल जाता था; पर उस थोड़े से समय और इने–गिने दिनों में भी मुझे उस बालक के हृदय का जैसा परिचय मिला, वह चित्र के एल्बम के समान निरंतर नवीन सा लगता है।

मुझे आज भी वह दिन नहीं भूलता जब मैंने बिना कपड़ों का प्रबंध किए हुए ही उन बेचारों को सफाई का महत्व समझाते–समझाते थका डालने की मूर्खता की। दूसरे इतवार को सब जैसे–के–तैसे ही सामने थे– केवल कुछ गंगाजी में मुँह इस तरह धो आए थे कि मैल अनेक रेखाओं में विभक्त हो गया था, कुछ के हाथ पाँव ऐसे घिसे थे कि शेष मलिन शरीर के साथ वे अलग जोड़े हुए से लगते थे और कुछ 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी' की कहावत चरितार्थ करने के लिए कीट मैले फटे कुरते घर ही छोड़कर ऐसे अस्थिपंजरमय रुप में आ उपस्थित हुए थे, जिसमें उनके प्राण,'रहने का आश्चर्य है, पर घीसा गायब था। पूछने पर लड़के काना–फूसी करने का या एक साथ सभी उसकी अनुपस्थिति का कारण सुनाने को आतुर होने लगे। एक–एक शब्द जोड़–तोड़कर समझना पड़ा कि घीसा माँ से कपड़ा धोने के साबुन के लिए तभी से कह रहा था– माँ को मजदूरी के पैसे मिले नहीं और दुकानदार ने अनाज लेकर साबुन दिया नहीं। कल रात को माँ को पैसे मिले और आज सवेरे वह सब काम छोड़कर पहले साबुन लेने गई। अभी लौटी है, अतः घीसा कपड़े धो रहा है, क्योंकि गुरु साहब ने कहा था कि नहा–धोकर

साफ कपड़े पहनकर आना। और अभागे के पास कपड़े ही क्या थे किसी दयावती का दिया हुआ एक पुराना कुरता जिसकी एक आस्तीन आधी थी और एक अँगोछा जैसा फटा टुकड़ा। जब घीसा नहाकर गीला अँगोछा लपेटे और आधा भीगा कुरता पहने अपराधी के समान मेरे सामने आ खड़ा हुआ तब आँखें ही नहीं मेरा रोम–रोम गीला हो गया। उस समय समझ में आए कि द्रोणाचार्य ने अपने भील शिष्य से अँगूठा कैसे कटवा लिया था। एक दिन न जाने क्या सोच कर मैं उन विद्यार्थियों के लिए 5–6 सेर जलेबियाँ ले गई; पर कुछ तोलने वाले की सफाई से, कुछ तुलवाने वाले की समझदारी से और कुछ वहाँ की छीना–झपटी के कारण प्रत्येक को पाँच से अधिक न मिल सकीं। एक कहता था– मुझे एक कम मिली; दूसरे ने बताया मेरी अमुक ने छीन ली। तीसरे को घर में सोते हुए छोटे भाई के लिए चाहिए, चौथे को किसी और की याद आ गई। पर इस कोलाहल में अपने हिस्से की जलेबियाँ लेकर घीसा कहाँ खिसक गया, यह कोई नहीं जान सका। एक नटखट अपने साथी से कह रहा था '' सार एक ठो पिलवा पाले हैं, ओही का देय बरे गा होई'' पर मेरी दृष्टि से संकुचित होकर चुप रह गया और तब तक घीसा लौटा ही। उसका सब हिसाब ठीक था– जलखई वाले छन्ने में दो जलेबियाँ लपेटकर वह माई के लिए छप्पर में खोंस आया है, एक उसने अपने पाले हुए, बिना माँ के कुत्ते के पिल्ले को खिला दी और दो स्वयं खा लीं। 'और चाहिए' पूछने पर उसकी संकोच भरी आँखें झुक गईं–ओठ कुछ हिले। पता चला कि पिल्ले को उससे कम मिली है। दें तो गुरु साहब पिल्ले को ही एक और दे दें।

और होली के पहले की एक घटना तो मेरी स्मृति में ऐसे गहरे रंगों से अंकित है जिसका भूल सकना सहज नहीं। उन दिनों हिन्दू–मुस्लिम वैमनस्य धीरे–धीरे बढ़ रहा था और किसी दिन उसके चरम सीमा तक पहुँच जाने की पूर्ण संभावना थी। घीसा दो सप्ताह से ज्वर से पड़ा था– दवा मैं भिजवा देती थी; परन्तु देख–भाल का कोई ठीक प्रबंध न हो पाता था। दो–चार दिन उसकी माँ स्वयं बैठी रही। फिर एक अंधी बुढ़िया को बैठा कर काम पर जाने लगी।

इतवार की साँझ को मैं बच्चों को विदा दे, घीसा को देखने चली; परन्तु पीपल के पचास पग दूर पहुँचते–पहुँचते उसी को डगमगाते पैरों से गिरते–पड़ते अपनी ओर आते देख मेरा मन उद्विग्न हो उठा। वह तो इधर पन्द्रह दिन से उठा ही नहीं था; अतः मुझे उसके सन्निपातग्रस्त होने का ही संदेह हुआ। उसके सूखे शरीर में विद्युत सी दौड़ रही थी, आँखें और भी सतेज और मुख ऐसा था, जैसे हल्की आँच में धीरे–धीरे लाल होने वाला लोहे का टुकड़ा।

पर उसके वात–ग्रस्त होने से भी अधिक चिंताजनक उसकी समझदारी की कहानी निकली। वह प्यास से जाग गया था; पर पानी पास मिला नहीं और मनिया की अंधी आजी से माँगना ठीक न समझकर वह चुपचाप कष्ट सहने लगा। इतने में मुल्लू के कक्का ने पास से लौटकर दरवाजे से ही अंधी को बताया कि शहर में दंगा हो रहा है और तब उसे गुरु साहब का ध्यान आया। मुल्लू के कक्का के हटते ही वह ऐसे हौले–हौले उठा कि बुढ़िया को पता ही न चला और कभी दीवार, कभी पेड़ का सहारा लेता–लेता इस ओर भागा। अब वह गुरु साहब के गोड़ धर कर यहीं पड़ा रहेगा; पर पार किसी तरह भी न जाने देगा।

तब मेरी समस्या और भी जटिल हो गई। पार तो मुझे पहुँचाना था ही; पर साथ ही बीमार घीसा को ऐसे समझा कर, जिससे उसकी स्थिति और गंभीर न हो जाए। पर सदा के संकोची, नम्र, और आज्ञाकारी घीसा का इस दृढ़ और हठी बालक में पता ही न चलता था। उसने पारसाल ऐसे ही अवसर पर हताहत दो मल्लाह देखे थे और कदाचित् इस समय उसका रोग से विकृत मस्तिष्क उन चित्रों में गहरा रंग भरकर मेरी उलझन को और

उलझा रहा था। पर उसे समझाने का प्रयत्न करते–करते अचानक ही मैने एक ऐसा तार छू दिया, जिसका स्वर मेरे लिए भी नया था। यह सुनते ही कि मेरे पास रेल में बैठकर दूर–दूर से आए हुए बहुत से विद्यार्थी हैं जो अपनी माँ के पास साल भर में एक बार ही पहुँच पाते हैं और जो मेरे न जाने से अकेले घबरा जाएँगे, घीसा का सारा हठ, सारा विरोध ऐसे बह गया जैसे वह कभी था ही नहीं। और तब घीसा के सामने समान तर्क की क्षमता किसमें थी। जो साँझ को अपनी माई के पास नहीं जा सकते, उनके पास गुरु साहब को जाना ही चाहिए। घीसा रोकेगा, तो उसके भगवान् जी गुस्सा हो जाएँगे, क्योंकि वे ही तो घीसा को अकेला बेकार घूमता देखकर गुरु साहब को भेज देते हैं आदि–आदि, उसके तर्कों का स्मरण कर आज भी मन भर आता है। परन्तु उस दिन मुझे आपत्ति से बचाने के लिए अपने बुखार से जलते हुए अशक्त शरीर को घसीट लाने वाले घीसा को जब उसकी टूटी खटिया पर लिटाकर मैं लौटी, तब मेरे मन में कौतुहल की मात्रा ही अधिक थी।

इसके उपरांत घीसा अच्छा हो गया और धूल और सूखी पत्तियों को बाँधकर उन्मत्त के समान घूमने वाली गर्मी की हवा से उसका रोज संग्राम छिड़ने लगा–झाड़ते–झाड़ते ही वह पाठशाला धूल–धूसरित होकर भूरे, पीले और कुछ हरे पत्तों की चार में छिप कर तथा कंकालशेषी शाखाओं में उलझते, सूखे पत्तों को पुकारते वायु की संतप्त सरसर से मुखरित होकर उस भ्रांत बालक को चिढ़ाने लगती। तब मैंने तीसरे पहर से संध्या समय तक वहाँ रहने का निश्चय किया; परन्तु पता चला, घीसा किसकिसाती आँखों को मलता और पुस्तक से बार–बार धूल झाड़ता हुआ दिन भर वहीं पेड़ के नीचे बैठा रहता है मानो वह किसी प्राचीन युग का तपोव्रती अनागरिक ब्रह्मचारी हो, जिसकी तपस्या भंग के लिए ही लू के झोंके आते हैं।

इस प्रकार चलते–चलते समय ने जब दाई छूने के लिए दौड़ते हुए बालक के समान झपटकर उस दिन पर उँगली धर दी, जब मुझे उन लोगों को छोड़ देना था, तब तो मेरा मन बहुत ही अस्थिर हो उठा। कुछ बालक उदास थे और कुछ खेलने की छुट्टी से प्रसन्न ! कुछ जानना चाहते थे कि छुट्टियों के दिन चूने की टिपकियाँ रखकर गिने जाएँ, या कोयले की लकीरें खींचकर। कुछ के सामने बरसात में चूते हुए घर में आठ पृष्ठ की पुस्तक बचा रखने का प्रश्न था और कुछ कागजों पर चूहे के आक्रमण की ही समस्या का समाधान चाहते थे। ऐसे महत्वपूर्ण कोलाहल में घीसा न जाने कैसे अपना रहना अनावश्यक समझ लेता था, अतः सदा के समान आज भी मैं उसे न ,खोज पाई। जब मैं कुछ चिंतित–सी वहाँ से चली, तब मन भारी–भारी हो रहा था, आँखों में कोहरा सा घिर–घिर आता था। वास्तव में उन दिनों डाक्टरों को मेरे पेट में फोड़ा होने का संदेह हो रहा था– ऑपरेशन की संभावना थी। कब लौटूँगी या नहीं लौटूँगी, यही सोचते–सोचते मैंने फिर कर चारों ओर जो आर्द्र दृष्टि डाली वह कुछ समय तक उन परिचित स्थानों से भेंट कर वहीं उलझ रही।

पृथ्वी के उच्छ्वास के समान उठते हुए धुँधलेपन में वे कच्चे घर आकंठ मग्न हो गए थे – केवल फूस के मटमैले और खपरैले के कत्थई और काले छप्पर वर्षा में बढ़ी गंगा के मिट्टी जैसे जल में पुरानी नावों के समान जान पड़ते थे। कछार की बालू में दूर तक फैले तरबूज और खरबूज के खेत अपने सिरकी और फूस के टट्टियों, और रखवाली के लिए बनी पर्णकुटियों के कारण जल में बसे किसी आदिम द्वीप का स्मरण दिलाते थे। उनमें एक–दो दिए जल चुके थे, तब मैंने दूर पर एक छोटा–सा काला धब्बा आगे बढ़ता देखा। वह घीसा ही होगा। यह मैंने दूर से ही जान लिया। आज गुरु साहब को उसे बिदा देना है, यह उसका नन्हा हृदय अपनी पूरी संवेदना शक्ति से जान रहा था, इसमें संदेह नहीं था। परन्तु उस उपेक्षित बालक के मन में मेरे लिए कितनी सरल ममता और मेरे विछोह की कितनी गहरी व्यथा हो सकती है, यह जानना मेरे लिए शेष था।

निकट आने पर देखा कि उस धूमिल गोधूली में बादामी कागज पर काले चित्र के समान लगने वाला नंगे बदन घीसा एक बड़ा तरबूज दोनों हाथों में सम्हाले था, जिसमें बीच के कटे भाग में से भीतर की ईषत–लक्ष्य ललाई चारों ओर के गहरे हरेपन में कुछ खिले कुछ बंद गुलाबी फूल–जैसी जान पड़ती थी।

घीसा के पास न पैसा था न खेत– तब क्या वह इसे चुरा लाया है! मन का संदेह बाहर आया ही और तब मैंने जाना कि जीवन का खरा सोना छिपाने के लिए उस मलिन शरीर को बनाने वाला ईश्वर उस बूढ़े आदमी से भिन्न नहीं, जो अपनी सोने की मोहर को कच्ची मिट्टी की दीवार में रखकर निश्चिंत हो जाता है। घीसा गुरु साहब से झूठ बोलना भगवान जी से झूठ बोलना समझता है। वह तरबूज कई दिन पहले देख आया था। माई के लौटने में जाने क्यों देर हो गई, तब उसे अकेले ही खेत पर जाना पड़ा। वहाँ खेतवाले का लड़का था, जिसकी उसके नए कुरते पर बहुत दिन से नजर थी। प्रायः सुना–सुना कर कहता रहता था कि जिनकी भूख जूठी पत्तल से बुझ सकती है, उनके लिए परोसा लगाने वाले पागल होते हैं। उसने कहा– पैसा नहीं है, तो कुरता दे जाओ। और घीसा आज तरबूज न लेता, तो कल उसका क्या करता। इससे कुरता दे आया; पर गुरु साहब को चिंता करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि गर्मी में वह कुरता पहनता ही नहीं और जाने–आने के लिए पुराना ठीक रहेगा। तरबूज सफेद न हो, इसलिए कटवाना पड़ा– मीठा है या नहीं यह देखने के लिए उँगली से कुछ निकाल भी लेना पड़ा।

गुरु साहब न लें, तो घीसा रात भर रोएगा– छुट्टी भर रोएगा। ले जाएँ तो वह रोज नहा–धोकर पेड़ के नीचे पढ़ा हुआ पाठ दोहराता रहेगा और छुट्टी के बाद पूरी किताब पट्टी पर लिखकर दिखा सकेगा।

और तब अपने स्नेह में प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चल हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परन्तु उस दक्षिणा के सामने संसार के अब तक सारे आदान–प्रदान फीके जान पड़े।

फिर घीसा के सुख का विशेष प्रबंध कर मैं बाहर चली गई और लौटते–लौटते कई महीने लग गए। इस बीच में उसका कोई समाचार न मिलना ही संभव था। जब फिर उस ओर जाने का मुझे अवकाश मिल सका, तब घीसा को उसके भगवानजी ने सदा के लिए पढ़ने से अवकाश दे दिया था– आज वह कहानी दोहराने की मुझ में शक्ति नहीं है; पर संभव है आज के कल, कल के कुछ दिन, दिनों के मास और मास के वर्ष बन जाने पर मैं दार्शनिक के समान धीर–भाव से उस छोटे जीवन का उपेक्षित अंत बता सकूँगी। अभी मेरे लिए इतना ही पर्याप्त हैं कि मैं अन्य मलिन मुखों में उसकी छाया ढूँढ़ती रहूँ।

शब्दार्थ

{kr &fo{kr – कटा–फटा; **अद्वैत** – एकाधिक ना होना; **असहिष्णुता** – सहनशीलता का अभाव; **क्षेपक** – मूलबात में अपनी बात जोड़ते हुए कहना, **नियति** विधान या होनी; **शीतलपाटी** – एक प्रकार के घास से बनी चटाई; **जैसे के तैसे** – यथावत; **सन्निपातग्रस्त** – लकवाग्रस्त; **प्रगल्भ** – वाचाल; **भावातिरेक** – भावनाओं की अधिकता; **दुर्वह** – कठिन; **हताहत** – घायल; **ईषत लक्ष्य** – अभीष्ट अथवा लक्ष्य। **इंडुरी** = गुडरी (घड़े को स्थिर रखने के लिए सिर पर गोल रखा गया कपड़ा)

अभ्यास

पाठ से

1. पहली बार जब घीसा कक्षा में आया तब वह कैसा दिखाई पड़ता था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
2. घीसा का नाम घीसा कैसे पड़ा?
3. घीसा कक्षा लगने के पूर्व क्या तैयारी करता था?
4. बच्चे साफ–सफाई का पाठ पढ़ने के बाद अगली कक्षा में किस–प्रकार तैयार होकर आए थे?
5. घीसा को देखकर ''आँखें ही नहीं मेरा रोम–रोम गीला हो गया'' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?
6. लेखिका ने ईश्वर की तुलना बूढ़े आदमी से क्यों की है?
7. महादेवी वर्मा अक्सर अपनी छुट्टियाँ कैसे बिताया करती थीं?
8. भक्तिन कौन थी? महादेवी वर्मा को ऐसा क्यों लगता था कि वो (भक्तिन) अपने आपको उनकी अभिभाविका मानने लगी थी?
9. घीसा ने अंत में गुरु साहिबा को क्या भेंट दी? यह भेंट सामग्री उसने कैसे जुटाई?
10. महादेवी वर्मा को अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा घीसा ही क्यों याद रहा?

पाठ से आगे

1. ''संध्या के लाल सुनहली आभा वाले उड़ते हुए दुकूल पर रात्रि ने मानो छिपकर अंजन की मूठ चला दी थी।'' इस पंक्ति में प्रकृति के जिस दृश्य का वर्णन किया गया है उसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
2. ''यह कथा अनेक क्षेपकोमय विस्तार के साथ सुनाई तो गई थी मेरा मन फेरने के लिए, और मन फिरा भी; परन्तु किसी सनातन नियम से कथावाचक की ओर न फिरकर कथा के नायकों की ओर फिर गया और इस प्रकार घीसा मेरे और अधिक निकट आ गया।'' उपरोक्त पंक्तियों में लोगों की किस मनोवृत्ति व लेखिका के किस व्यक्तित्व की ओर संकेत किया गया है?
3. अन्य बच्चों की माँ, बुआएँ तथा दादी–नानी उन्हें घीसा से दूर रहने की हिदायत क्यों देती थी? आज के संदर्भ में क्या ऐसा व्यवहार करना उचित है ? अपने विचार लिखिए।
4. गर्मी की छुट्टियाँ लगने पर प्रायः सबके मन में खुशी और दुःख के मिले–जुले भाव होते हैं, छुट्टियाँ होने पर आप एवं आपके साथी कैसा महसूस करते हैं? आपस में बातचीत करके लिखें।
5. निम्नांकित पंक्तियों में निहित भाव को स्पष्ट करें–

ES28H1

(क) ''तब मैंने जाना कि जीवन का खरा सोना छिपाने के लिए उस मलिन शरीर को बनाने वाला ईश्वर उस बूढ़े आदमी से भिन्न नहीं, जो अपने सोने की मोहर को कच्ची मिट्टी की दीवार में रखकर निश्चिंत हो जाता है।''

(ख) ''जिनकी भूख जूठी पत्तल से बुझ सकती है, उनके लिए परोसा लगाने वाले पागल होते हैं।''

6. पाठ के आरंभ में पानी भरती महिलाओं का चित्रण और घीसा की देहयष्टि का इस प्रकार वर्णन किया गया है कि हमारे मन मस्तिष्क में तस्वीर साकार हो जाती है। लेखन शैली में इस विधा को रेखाचित्र के नाम से जाना जाता है।
आप भी अपने सूक्ष्म अवलोकन के आधार पर किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा दृश्य का चित्रण एक अनुच्छेद में कीजिए।

भाषा के बारे में

ESB4NN

1. हमारे शरीर के विविध अंगों के नाम का प्रयोग, कुछ का स्त्रीलिंग में तो कुछ का पुल्लिंग में होता है यथा सिर, गला, हाथ आदि पुल्लिंग होते हैं तो आँखें, नाक, मूँछ स्त्रीलिंग में होती हैं। शरीर के सभी अंगों का निम्नांकित सारणी के अनुसार शिक्षक की मदद से वाक्यों में प्रयोग करते हुए उनके लिंगों का निर्धारण कीजिए इसमें आप अपने सहपाठियों या शिक्षक की भी मदद ले सकते हैं।

अंगों का नाम	लिंग	वाक्य

2. महादेवी जी ने घीसा नामक इस रेखाचित्र के वर्णन में विशेषण–विशेष्यों का बहुतायत से प्रयोग किया है। कक्षा में समूह में बँटकर पाठ के अलग–अलग हिस्सों/अनुच्छेदों में आए विशेषण एवं विशेष्यों की सूची तैयार कीजिए। उन विशेषणों को अन्य उपयुक्त विशेष्यों के साथ भी जोड़ने का प्रयास कीजिए।
3. वाक्य संरचना करते समय यदि वाक्य में कर्त्ता के साथ 'ने' विभक्ति हो परन्तु कर्म के साथ 'को' विभक्ति न हो तो क्रिया, कर्म के अनुसार होगी। यथा– मैंने पुस्तक पढ़ी। मोहन ने रोटी खाई। सीता ने बताशा खाया। मीरा ने फल खाए।
इस पाठ में भी ऐसे प्रयोग कई स्थल पर देखे जा सकते हैं, जैसे– दुकानदार ने अनाज लेकर साबुन दिया नहीं। सदा के समान आज भी मैं उसे न खोज पाया। रात्रि ने मानो छिपकर अंजन की मूठ चला दी थी। मैंने फिरकर चारों ओर जो आर्द्र दृष्टि डाली। आप भी इस प्रकार के कुछ और वाक्यों का निर्माण कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. गुरु दक्षिणा की परंपरा आज प्रचलन में नहीं है किन्तु इससे संबंधित बहुत सारी कहानियाँ प्रचलित हैं जैसे एकलव्य की कथा, आरुणि की कथा आदि। अपने बड़ों से उन्हें सुनिए और लिखिए।
2. ''घीसा'' की ही तरह महादेवी जी द्वारा लिखित अन्य रेखाचित्र यथा भक्तिन, सोना, गिल्लू रामा आदि को भी पुस्तकालय से लेकर पढ़िए।

ESJZQB

पाठ – 3.4

पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद

जीवन परिचय

छायावाद के जन्मदाता एवं आधार स्तंभ श्री जयशंकर प्रसाद जी का जन्म संवत् 1946 अर्थात् सन् 1889 ईसवीं को काशी में हुआ था। उनमें काव्य रचना की प्रतिभा जन्मजात थी। वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे जिनका प्रमाण विविध–विधाओं में सृजित उनकी साहित्यिक रचनाएँ हैं। वे हिन्दी के प्रसिद्ध गीतकार भी थे। उनकी रचनाओं का मुख्य विषय प्रेम एवं आनंद रहा है, साथ ही प्रकृति चित्रण उनकी रचनाओं की महत्वपूर्ण विशेषता है। तत्सम शब्दों की बहुलता उनकी भाषा में देखी जा सकती है। प्रतीकात्मकता तथा बिंब विधान उनकी शैली की विशिष्टता है। छोटे–छोटे वाक्यों में गंभीर भाव भरना, उनमें संगीत और लय का विधान करना उनकी शैली को सरस, स्वाभाविक, प्रभावपूर्ण, ओजमयी और चुटीली बना है।

'कामायनी', 'आँसू', 'झरना', 'लहर', 'प्रेम–पथिक', 'कानन कुसुम' उनके प्रमुख काव्य हैं। उन्होंने 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त' और 'अजातशत्रु' नाटक लिखे हैं। उपंयास 'कंकाल', 'तितली','इरावती' के अतिरिक्त कहानी संग्रह के रूप में 'आँधी', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप' और 'देवरथ' की भी इन्होंने रचना की है।

महाकाव्य कामायनी के कारण इन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। हिन्दी साहित्य जगत इनका सदैव ऋणी रहेगा।

आर्द्रा नक्षत्र; आकाश में काले–काले बादलों की घुमड़, जिसमें देव–दुंदुभि का गंभीर घोष। प्राची के एक निरभ्र कोने से स्वर्ण पुरुष झाँकने लगा था, दिखने लगी महाराज की सवारी। शैलमाला के अंचल में समतल उर्वरा भूमि से सोंधी बास उठ रही थी। नगर–तोरण से जयघोष हुआ, भीड़ में गजराज का चामरधारी शुण्ड उन्नत दिखाई पड़ा। हर्ष और उत्साह का समुद्र हिलोर भरता हुआ आगे बढ़ने लगा।

प्रभात की हेम किरणों से अनुरंजित नन्हीं नन्हीं बूँदों का एक झोंका स्वर्ण मल्लिका के समान बरस पड़ा। मंगल सूचना से जनता ने हर्ष ध्वनि की।

रथों, हाथियों और अश्वारोहियों की पंक्ति थी। दर्शकों की भीड़ भी कम न थी। गजराज बैठ गया, सीढ़ियों से महाराज उतरे। सौभाग्यवती और कुमारी सुंदरियों के दो दल, आम्रपल्लवों से सुशोभित मंगल कलश और फूल, कुंकुम तथा खीलों से भरे थाल लिए, मधुर गान करते हुए आगे बढ़े।

महाराज के मुख पर मधुर मुस्कान थी। पुरोहित वर्ग ने स्वस्त्ययन किया। स्वर्ण रंजित हल की मूठ पकड़कर महाराज ने जुते हुए सुन्दर पुष्ट बैलों को चलने का संकेत किया। बाजे बजने लगे। किशोरी कुमारियों ने खीलों और फूलों की वर्षा की।

कोशल का यह उत्सव प्रसिद्ध था। एक दिन के लिए महाराज को कृषक बनना पड़ता। उस दिन इन्द्र पूजन की धूम–धाम होती; गोठ होती। नगर–निवासी उस पहाड़ी भूमि में आनंद मनाते। प्रतिवर्ष कृषि का यह महोत्सव उत्साह से सम्पन्न होता; दूसरे राज्यों से भी युवक राजकुमार इस उत्सव में बड़े चाव से आकर योग देते।

मगध का एक राजकुमार अरुण अपने रथ पर बैठा बड़े कुतूहल से यह दृश्य देख रहा था। बीजों का एक थाल लिए कुमारी मधुलिका महाराज के साथ थी। बीज बोते हुए महाराज जब हाथ बढ़ाते, तब मधुलिका उनके सामने थाल कर देती। यह खेत मधुलिका का था, जो इस साल महाराज की खेती के लिए चुना गया था; इसलिए बीज देने का सम्मान मधुलिका को ही मिला। वह कुमारी थी, सुंदरी थी। कौशेय वसन उसके शरीर पर इधर–उधर लहराता हुआ स्वयं शोभित हो रहा था। वह कभी उसे सँभालती और कभी अपनी रूखी अलकों को। कृषक बालिका के शुभ्र भाल पर श्रमकणों की भी कमी न थी, वे सब बरौनियों में गुँथे जा रहे थे किन्तु महाराज को बीज देने में उसने शिथिलता नहीं की। सब लोग महाराज का हल चलाना देख रहे थे– विस्मय से, कुतुहल से। और अरुण देख रहा था कृषक कुमारी मधुलिका को। आह! कितना भोला सौंदर्य! कितनी सरल चितवन!

उत्सव का प्रधान कृत्य समाप्त हो गया। महाराज ने मधुलिका के खेत को पुरस्कृत किया, थाल में कुछ स्वर्णमुद्राएँ। वह राजकीय अनुग्रह था। मधुलिका ने थाली सिर से लगा ली; किन्तु साथ ही उन स्वर्णमुद्राओं को महाराज पर न्यौछावर करके बिखेर दिया। मधुलिका की उस समय की ऊर्जस्वित मूर्ति लोग आश्चर्य से देखने लगे! महाराज की भृकुटी भी जरा चढ़ी थी कि मधुलिका ने सविनय कहा– ''देव ! यह मेरे पितृ पितामहों की भूमि है। इसे बेचना अपराध है इसलिए मूल्य स्वीकार करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है।'' महाराज के बोलने के पहले ही वृद्ध मंत्री ने तीखे स्वर से कहा – ''अबोध ! क्या बक रही है? राजकीय अनुग्रह का तिरस्कार! तेरी भूमि से चौगुना मूल्य है; फिर कोशल का तो यह सुनिश्चित राष्ट्रीय नियम है। तू आज से राजकीय रक्षण पाने की अधिकारिणी हुई, इस धन से अपने को सुखी बना।''

''राजकीय रक्षण की अधिकारिणी तो सारी प्रजा है मंत्रिवर! महाराज को भूमि समर्पण करने में तो मेरा कोई विरोध न था और न है; किन्तु मूल्य स्वीकार करना असम्भव है''– मधुलिका उत्तेजित हो उठी थी।

महाराज के संकेत करने पर मंत्री ने कहा '' देव! वाराणसी युद्ध के अन्यतम वीर सिंहमित्र की एक मात्र कन्या है।'' महाराज चौंक उठे– ''सिंह मित्र की कन्या! जिसने मगध के सामने कोशल की लाज रख ली थी, उसी वीर की मधुलिका कन्या है ?''

''हाँ, देव!'' मंत्री ने सविनय कहा।

''इस उत्सव के परंपरागत नियम क्या हैं, मंत्रिवर?''– महाराज ने पूछा।

''देव! नियम तो बहुत साधारण हैं। किसी भी अच्छी भूमि को इस उत्सव के लिए चुनकर नियमानुसार पुरस्कार स्वरूप उसका मूल्य दे दिया जाता है। वह भी अत्यंत अनुग्रहपूर्वक अर्थात् भू–संपत्ति का चौगुना मूल्य उसे मिलता है। उस खेती को वही व्यक्ति वर्ष भर देखता है। वह राजा का खेत कहा जाता है।''

महाराज को विचार संघर्ष से विश्राम की अत्यंत आवश्यकता थी। महाराज चुप रहे। जयघोष के साथ सभा विसर्जित हुई। सब अपने–अपने शिविरों मे ंचले गए, किन्तु मधुलिका को उत्सव में फिर किसी ने न देखा। वह अपने खेत की सीमा पर विशाल मधूक–वृक्ष के चिकने हरे पत्तों की छाया में अनमनी चुपचाप बैठी रही।

000

रात्रि का उत्सव अब विश्राम ले रहा था। राजकुमार अरुण उसमें सम्मिलित नहीं हुआ। वह अपने विश्राम भवन में जागरण कर रहा था, आँखों में नींद न थी। प्राची में जैसी गुलाली खिल रही थी, वही रंग उसकी आँखों में था। सामने देखा तो मुँडेर पर कपोती एक पैर पर खड़ी पंख फैलाए अँगड़ाई ले रही थी। अरुण उठ खड़ा हुआ। द्वार पर सुसज्जित अश्व था। वह देखते–देखते नगरतोरण पर जा पहुँचा। रक्षक गण ऊँघ रहे थे, अश्व के पैरों के शब्द से चौंक उठे।

युवक कुमार तीर सा निकल गया। सिंधु देश का तुरंग प्रभात के पवन से पुलकित हो रहा था। घूमता–घूमता अरुण उसी मधूक वृक्ष के नीचे पहुँचा, जहाँ मधुलिका अपने हाथ पर सिर धरे हुए खिन्न निद्रा का सुख ले रही थी।

अरुण ने देखा, एक छिन्न माधवी लता वृक्ष की शाखा से च्युत् होकर पड़ी है। सुमन मुकुलित, भ्रमर निस्पंद थे। अरुण ने अपने अश्व को मौन रहने का संकेत किया, उस सुषमा को देखने के लिए; परंतु कोकिल बोल उठी। जैसे उसने अरुण से प्रश्न किया– छि! कुमारी के सोए हुए सौंदर्य पर दृष्टिपात करने वाले धृष्ट, तुम कौन? मध्ुालिका की आँखे खुल पड़ीं। उसने देखा, एक अपरिचित युवक। वह संकोच से उठ बैठी। ''भद्रे ! तुम्हीं न कल के उत्सव की संचालिका रही हो ?''

''उत्सव ! हाँ, उत्सव ही तो था।''

''कल उस सम्मान ....''

''क्यों आपको कल का स्वप्न सता रहा है? भद्र! आप क्या मुझे इस अवस्था में संतुष्ट न रहने देंगे?''

''मेरा हृदय तुम्हारी उस छवि का भक्त बन गया है, देवि।''

''मेरे उस अभिनय का, मेरी विडंबना का। आह! मनुष्य कितना निर्दय है, अपरिचित! क्षमा करो, जाओ अपने मार्ग।''

''सरलता की देवी! मैं मगध का राजकुमार, तुम्हारे अनुग्रह का प्रार्थी हूँ, मेरे हृदय की भावना अवगुंठन में रहना नहीं जानती। उसे अपनी ....।''

''राजकुमार! मैं कृषक बालिका हूँ। आप नंदनबिहारी और मैं पृथ्वी पर परिश्रम करके जीनेवाली। आज मेरी स्नेह की भूमि पर से मेरा अधिकार छीन लिया गया है। मैं दुःख से विकल हूँ; मेरा उपहास न करो।''

''मै कौशल नरेश से तुम्हारी भूमि तुम्हें दिलवा दूँगा।''

''नहीं, वह कोशल का राष्ट्रीय नियम है। मैं उसे बदलना नहीं चाहती, चाहे उससे मुझे कितना ही दुःख हो।''

''तब तुम्हारा रहस्य क्या है?''

''यह रहस्य मानव हृदय का है, मेरा नहीं। राजकुमार, नियमों से यदि मानव हृदय बाध्य होता, तो आज मगध के राजकुमार का हृदय किसी राजकुमारी की ओर न खिंचकर एक कृषक बालिका का अपमान करने न आता।'' मधुलिका उठ खड़ी हुई।

चोट खाकर राजकुमार लौट पड़ा। किशोर किरणों में उसका रत्नकिरीट चमक उठा। अश्व वेग से चला जा रहा था और मधुलिका निष्ठुर प्रहार करके क्या स्वयं आहत न हुई ? उसके हृदय में टीस सी होने लगी। वह सजल नेत्रों से उड़ती हुई धूल देखने लगी।

000

मधुलिका ने राजा का प्रतिपादन, अनुग्रह नहीं लिया। वह दूसरे खेतों में काम करती और चौथे पहर रूखी–सूखी खाकर पड़ी रहती। मधूक वृक्ष के नीचे छोटी–सी पर्णकुटीर थी। सूखे डंठलों से उसकी दीवार बनी थी। मधुलिका का वही आश्रम था। कठोर परिश्रम से जो रूखा–सूखा अन्न मिलता, वही उसकी साँसों को बढ़ाने के लिए पर्याप्त था।

दुबली होने पर भी उसके अंग पर तपस्या की कांति थी। आसपास के कृषक उसका आदर करते। वह एक आदर्श बालिका थी। दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष बीतने लगे।

000

शीतकाल की रजनी, मेघों से भरा आकाश, जिसमें बिजली की दौड़–धूप। मधुलिका का छाजन टपक रहा था। ओढ़ने की कमी थी। वह ठिठुरकर एक कोने में बैठी थी। मधुलिका अपने अभाव को आज बढ़ाकर सोच रही थी। जीवन से सामंजस्य बनाए रखनेवाले उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं; परन्तु उनकी आवश्यकता और कल्पना भावना के साथ बढ़ती–घटती रहती है। आज बहुत दिनों बाद उसे बीती हुई बात स्मरण हुई–दो, नहीं–नहीं तीन वर्ष हुए होंगे, इसी मधूक के नीचे प्रभात में, तरुण राजकुमार ने क्या कहा था?

वह अपने हृदय से पूछने लगी – उन चाटुकारी शब्दों को सुनने के लिए उत्सुक–सी वह पूछने लगी–क्या कहा था? दुखदग्ध हृदय उन स्वप्न सी बातों को स्मरण रख सकता था! और स्मरण ही होता, तो भी कष्टों की इस काली निशा में वह कहने का साहस करता? हाय री विडंबना!

आज मधुलिका उस बीते हुए क्षण को लौटा लेने के लिए विकल थी। दारिद्रय की ठोकरों ने उसे व्यथित और अधीर कर दिया है। मगध की प्रासाद– माला के वैभव का काल्पनिक चित्र–उन सूखे डंठलों के रंध्रों से, नभ में बिजली के आलोक में नाचता हुआ दिखाई देने लगा। खिलाड़ी शिशु जैसे – श्रावण की संध्या में जुगनू को पकड़ने के लिए हाथ लपकता है, वैसे ही मधुलिका मन ही मन कह रही थी। अभी वह निकल गया। ''वर्षा ने भीषण रूप धारण किया। गड़बड़ाहट बढ़ने लगी, ओले पड़ने की संभावना मधुलिका अपनी जर्जर झोपड़ी के लिए काँप उठी। सहसा बाहर कुछ शब्द हुआ–

''कौन है यहाँ? पथिक को आश्रय चाहिए।''

मधुलिका ने डंठलों का कपाट खोल दिया। बिजली चमक उठी। उसने देखा, एक पुरुष घोड़े की डोर पकड़े खड़ा है। सहसा वह चिल्ला उठी – 'राजकुमार!'

'मधुलिका?' – आश्चर्य से युवक ने कहा।

एक क्षण के लिए सन्नाटा छा गया। मधुलिका अपनी कल्पना को सहसा प्रत्यक्ष देखकर चकित हो गई– ''इतने दिनों के बाद आज फिर!''

अरुण ने कहा –''कितना समझाया मैंने –परन्तु......''

मधुलिका अपनी दयनीय अवस्था पर संकेत करने देना नहीं चाहती थी। उसने कहा– ''और आज आपकी यह क्या दशा है?''

सिर झुकाकर अरुण ने कहा– ''मै, मगध का विद्रोही, निर्वासित, कोशल में जीविका खोजने आया हूँ।''

मधुलिका उस अंधकार में हँस पड़ी। मगध के विद्रोही राजकुमार का स्वागत करे एक अनाथिनी कृषक बालिका, यह भी एक विडंबना है, तो भी मैं स्वागत के लिए प्रस्तुत हूँ।''

000

शीतकाल की निस्तब्ध रजनी, कुहरे से चाँदनी, हाड़ कँपा देने वाला समीर, तो भी अरुण और मधुलिका पहाड़ी गह्वर के द्वार पर वटवृक्ष के नीचे बैठे हुए बातें कर रहे हैं। मधुलिका की वाणी में उत्साह था; किन्तु अरुण जैसे अत्यंत सावधान होकर बोलता।

मधुलिका ने पूछा–''जब तुम इतनी विपन्न अवस्था में हो तो फिर इतने सैनिकों को साथ रखने की क्या आवश्यकता है?''

''मधुलिका! बाहुबल ही तो वीरों की आजीविका है। ये मेरे जीवन–मरण के साथी हैं, भला मैं इन्हें कैसे छोड़ देता? और करता ही क्या?''

क्यों? हम लोग परिश्रम से कमाते और खाते हैं तो तुम ......।''

''भूल न करो; मैं अपने बाहुबल पर भरोसा करता हूँ। नए राज्य की स्थापना कर सकता हूँ, निराश क्यों हो जाऊँ? अरुण के शब्दों में कंपन था, वह जैसे कुछ कहना चाहता था, पर कह न सकता था।

''नवीन राज्य! ओहो! तुम्हारा उत्साह तो कम नहीं। भला कैसे? कोई ढंग बताओ तो मैं भी कल्पना का आनंद ले लूँ।

कल्पना का आनंद नहीं मधुलिका, मैं तुम्हें राजारानी के समान सिंहासन पर बिठाऊँगा! तुम अपने छिने हुए खेत की चिंता करके भयतीत हो।''

एक क्षण में सरल मधुलिका के मन में प्रमाद का अंधड़ बहने लगा, द्वंद्व मच गया। उसने सहसा कहा– ''आह मैं सचमुच आज तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती थी, राजकुमार!''

अरुण ढिठाई से उसके हाथों को दबाकर बोला– ''तो मेरा भ्रम था, तुम सचमुच मुझे प्यार करती हो?''

युवती का वक्षस्थल फूल उठा, वह हाँ भी नहीं कह सकी, ना भी नहीं। अरुण ने उसकी अवस्था का अनुभव कर लिया। कुशल मनुष्य के समान उसके अवसर को हाथ से न जाने दिया। तुरंत बोल उठा– तुम्हारी इच्छा हो

तो प्राणों से पण लगाकर मैं तुम्हें इस कोशल सिंहासन पर बिठा दूँ। मधुलिके। अरुण के खड्ग का आतंक देखोगी?'' ''मधुलिका एक बार काँप उठी। वह कहना चाहती थी– नहीं; किन्तु उसके मुँह से निकला–''क्या?''

''सत्य मधुलिका, कोशल नरेश तभी से तुम्हारे लिए चिंतित हैं। यह मैं जानता हूँ, तुम्हारी साधारण–सी प्रार्थना वे अस्वीकार न करेंगे। और मुझे यह भी विदित है कि कोशल के सेनापति अधिकांश सैनिकों के साथ पहाड़ी दस्युओं का दमन करने के लिए बहुत दूर चले गए हैं।''

मधुलिका की आँखों के आगे बिजलियाँ हँसने लगीं। दारुण भावना से उसका मस्तक झंकृत हो उठा। अरुण ने कहा, ''तुम बोलती नहीं हो?''

''जो कहोगे वह करूँगी ।'' मंत्रमुग्ध–सी मधुलिका ने कहा।

000

स्वर्णमंच पर कोशल नरेश अर्द्धनिद्रित अवस्था में आँखें मुकुलित किए हैं। एक चामरधारिणी युवती पीछे खड़ी अपनी कलाई बड़ी कुशलता से घुमा रही है। चामर के शुभ्र आंदोलन उस कोष्ठ में धीरे–धीरे संचालित हो रहे हैं। तांबूल वाहिनी प्रतिमा के समान दूर खड़ी है।

प्रतिहारी ने आकर कहा– ''जय हो देव! एक स्त्री कुछ प्रार्थना करने आई है।''

आँखें खोलते हुए महाराज ने कहा–''स्त्री ! प्रार्थना करने आई है ? आने दो।''

प्रतिहारी के साथ मधुलिका आई। उसने प्रणाम किया। महाराज ने स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखा और कहा – 'तुम्हें कहीं देखा है?'

''तीन बरस हुए देव! मेरी भूमि खेती के लिए ली गई थी।''

''ओह! तो तुमने इतने दिन कष्ट में बिताए, आज उसका मूल्य माँगने आई हो, क्यों?

अच्छा–अच्छा तुम्हें मिलेगा। प्रतिहारी!''

''नहीं महाराज, मुझे मूल्य नहीं चाहिए।''

''मूर्ख! फिर क्या चाहिए?''

''उतनी ही भूमि, दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप की जंगली भूमि, वहीं मैं अपनी खेती करुँगी। मुझे एक सहायक मिल गया है। वह मनुष्यों से मेरी सहायता करेगा, भूमि को समतल भी तो बनाना होगा।''

महाराज ने कहा– ''कृषक बालिके! वह बड़ी ऊबड़–खाबड़ भूमि है। तिस पर वह दुर्ग के समीप एक सैनिक महत्व रखती है।''

''तो फिर निराश लौट जाऊँ?''

''सिंहमित्र की कन्या! मैं क्या करूँ? तुम्हारी यह प्रार्थना ....''

''देव! जैसी आज्ञा हो!''

''जाओ, तुम श्रवजीवियों को उसमें लगाओ। मैं अमात्य को आज्ञापत्र देने का आदेश करता हूँ।'' '

जय हो देव! – कहकर प्रणाम करती हुई मधुलिका राज मंदिर के बाहर आई।

दुर्ग के दक्षिण, भयावने नाले के तट पर, घना जंगल है। आज मनुष्यों के पद संचार से शून्यता भंग हो रही थी। अरुण के छिपे हुए मनुष्य स्वतंत्रता से इधर–उधर घूमते थे। झाड़ियों को काटकर पथ बन रहा था। नगर दूर था, फिर उधर यों ही कोई नहीं आता था। फिर अब तो महाराज की आज्ञा से वहाँ मधुलिका का अच्छा–सा खेत बन रहा था। तब इधर की किसको चिंता होती?

एक घने कुंज में अरुण और मधुलिका एक–दूसरे को हर्षित नेत्रों से देख रहे थे। संध्या हो चली थी। उस निविड़ वन में उन नवागत मनुष्यों को देखकर पक्षीगण अपने नीड़ को लौटते हुए अधिक कोलाहल कर रहे थे।

प्रसन्नता से अरुण की आँखें चमक उठीं। सूर्य की अंतिम किरणें झुरमुट में घुसकर मधुलिका के कपोलों से खेलने लगीं। अरुण ने कहा–''चार प्रहर और विश्राम करो, प्रभात में ही इस जीर्ण कलेवर कोशल राष्ट्र की राजधानी श्रावस्ती में तुम्हारा अभिषेक होगा और मगध से निर्वासित मैं एक स्वतंत्र राष्ट्र का अधिपति बनूँगा मधुलिके!''

''भयानक! अरुण, तुम्हारा साहस देख मैं चकित हो रही हूँ। केवल सौ सैनिकों से तुम........''

''रात के तीसरे प्रहर में मेरी विजय यात्रा होगी।''

''तो तुमको इस विजय पर विश्वास है?''

''अवश्य! तुम अपनी झोपड़ी में यह रात बिताओ; प्रभात से तो राज मंदिर ही तुम्हारी लीला निकेतन बनेगा।

मधुलिका प्रसन्न थी; किन्तु अरुण के लिए उसकी कल्याण कामना सशंक थी। वह कभी–कभी उद्विग्न–सी होकर बालकों के समान प्रश्न कर बैठती। अरुण उसका समाधान कर देता। सहसा कोई संकेत पाकर उसने कहा–''अच्छा अंधकार अधिक हो गया। अभी तुम्हें दूर जाना है और मुझे भी प्राणपण से इस अभियान के प्रारंभिक कार्यों को अर्धरात्रि तक पूरा कर लेना चाहिए; तब रात्रि भर के लिए विदा मधुलिके!''

मधुलिका उठ खड़ी हुई। कँटीली झाड़ियों से उलझती हुई क्रम से बढ़ने वाले अंधकार में वह झोपड़ी की ओर चली।

000

पथ अंधकारमय था और मधुलिका का हृदय भी निविड़तम से घिरा था। उसका मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गई। जितनी सुख–कल्पना थी, वह जैसे अंधकार में विलीन होने लगी। वह भयभीत थी, पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ तो? फिर सहसा सोचने लगी– वह क्यों सफल हो? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाए? मगध कोशल का चिर शत्रु! ओह उसकी विजय! कौशल नरेश ने क्या कहा था–'सिंहमित्र की कन्या।' सिंहमित्र, कोशल का रक्षक वीर, उसी की कन्या आज क्या करने जा रही है? नहीं,नहीं। 'मधुलिका! मधुलिका!' जैसे उसके पिता उस अंधकार में पुकार रहे थे। वह पगली की तरह चिल्ला उठी। रास्ता भूल गई।

एक रात पहर बीत चली, पर मधुलिका अपनी झोंपड़ी तक न पहुँची। वह उधेड़बुन में विक्षिप्त–सी चली जा रही थी। उसकी आँखों के सामने कभी सिंहमित्र और कभी अरुण की मूर्ति अंधकार में चित्रित होती जाती। उसे सामने आलोक दिखाई पड़ा। वह बीच पथ से खड़ी हो गई। प्रायः एक सौ उल्काधारी अश्वारोही चले आ रहे थे और आगे–आगे एक वीर अधेड़ सैनिक था। उसके बाएँ हाथ में अश्व की वल्गा और दाहिने हाथ में नग्न खड्ग। अत्यंत धीरता से वह टुकड़ी अपने पथ में चल रही थी परन्तु मधुलिका बीच पथ से हिली नहीं। प्रमुख सैनिक पास आ गया; पर मधुलिका अब भी नहीं हटी। सैनिक ने अश्व रोककर कहा। –''कौन? कोई उत्तर नहीं मिला। तब तक दूसरे अश्वरोही ने कड़ककर कहा''तू कौन है स्त्री?'' कोशल के सेनापति को उत्तर शीघ्र दे।''

रमणी जैसे विकार ग्रस्त स्वर में चिल्ला उठी –''बाँध लो मुझे। मेरी हत्या करो। मैंने अपराध ही ऐसा किया है।''

सेनापति हँस पड़े, बोले–''पगली है।''

''पगली नहीं, यदि पगली होती, तो इतनी विचार वेदना क्यों होती? सेनापति, मुझे बाँध लो। राजा के पास ले चलो।''

''क्या है, स्पष्ट कह!''

''श्रावस्ती का दुर्ग एक प्रहर में दस्युओं के हस्तगत हो जाएगा। दक्षिणी नाले के पार उनका आक्रमण होगा।'' सेनापति चौंक उठे। उन्होनें आश्चर्य से पूछा–''तू क्या कह रही है?'' ''मैं सत्य कह रही हूँ; शीघ्रता करो।''

सेनापति ने अस्सी सैनिकों को नाले की ओर धीरे–धीरे बढ़ने की आज्ञा दी और स्वयं बीच अश्वारोहियों के साथ दुर्ग की ओर बढ़े। मधुलिका एक अश्वारोही के साथ बाँध दी गई।

000

श्रावस्ती का दुर्ग, कोशल राष्ट्र का केन्द्र, इस रात्रि में अपने विगत वैभव का स्वप्न देख रहा था। भिन्न राजवंशों ने उसके प्रांतों पर अधिकार जमा लिया है। अब वह केवल कई गाँवों का अधिपति है फिर भी उसके साथ कोशल के अतीत की स्वर्ण गाथाएँ लिपटी हैं। वही लोगों की ईर्ष्या का कारण है। जब थोड़े से अश्वारोही बड़े वेग से आते हुए दुर्ग द्वार पर रुके तब दुर्ग के प्रहरी चौंक उठे। उल्का के आलोक में उन्होनें सेनापति को पहचाना, द्वार खुला। सेनापति घोड़े की पीठ से उतरे। उन्होनें कहा–''अग्निसेन! दुर्ग में कितने सैनिक होंगे?''

''सेनापति की जय हो! दो सौ।''

उन्हें शीघ्र ही एकत्र करो; परंतु बिना किसी शब्द के। सौ को लेकर तुम शीघ्र ही चुपचाप दुर्ग के दक्षिण की ओर चलो। आलोक और शब्द न हो।

सेनापति ने मधुलिका की ओर देखा। वह खोल दी गई। उसे अपने पीछे आने का संकेत कर सेनापति राज मंदिर की ओर बढ़े। प्रतिहारी ने सेनापति को देखते ही महाराज को सावधान किया। वह अपनी सुख निद्रा के लिए प्रस्तुत हो रहे थे; किन्तु सेनापति और साथ ही मधुलिका को देखते ही चंचल हो उठे। सेनापति ने कहा ''जय हो देव! इस स्त्री के कारण मुझे इस समय उपस्थित होना पड़ा है।''

महाराज ने स्थिर नेत्रों से देखकर कहा —''सिंहमित्र की कन्या फिर यहाँ क्यों? क्या तुम्हारा क्षेत्र नहीं बन रहा है? कोई बाधा? सेनापति! मैंने दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप की भूमि इसे दी है। क्या उसी संबंध में तुम कहना चाहते हो?''

''देव! किसी गुप्त शत्रु ने उसी ओर से आज की रात में दुर्ग पर अधिकार कर लेने का प्रबंध किया है और इसी स्त्री ने मुझे पथ में यह संदेश दिया है।''

राजा ने मधुलिका की ओर देखा। वह काँप उठी। घृणा और लज्जा से वह गड़ी जा रही थी। राजा ने पूछा—''मधुलिका, यह सत्य है?''

''हाँ देव!''

राजा ने सेनापति से कहा—''सैनिकों को एकत्र करके तुम चलो, मैं अभी आता हूँ।'' सेनापति के चले जाने पर राजा ने कहा—''सिंहमित्र की कन्या! तुमने एक बार फिर कोशल का उपकार किया। यह सूचना देकर तुमने पुरस्कार का काम किया है। अच्छा, तुम यहीं ठहरो। पहले उन आततायियों का प्रबंध कर लूँ।

अपने साहसिक अभियान में अरुण बंदी हुआ और दुर्ग उल्का के आलोक में अतिरंजित हो गया। भीड़ ने जयघोष किया। सबके मन में उल्लास था। श्रावस्ती दुर्ग आज एक दस्यु के हाथ में जाने से बचा। आबाल वृद्ध, नारी आनंद से उन्मत्त हो उठे।

उषा के आलोक में सभा मण्डप दर्शकों से भर गया। बन्दी अरुण को देखते ही जनता ने रोष से हुंकार करते हुए कहा —''वध करो!'' राजा ने सबसे सहमत होकर आज्ञा दी। ''प्राणदंड!'' मधुलिका बुलाई गई। वह पगली–सी आकर खड़ी हो गई। कोशल नरेश ने पूछा—''मधुलिका, तुझे जो पुरस्कार लेना हो, माँग।'' वह चुप रही।

राजा ने कहा— ''मेरी निज में जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ।'' मधुलिका ने एक बार बंदी अरुण की ओर देखा। उसने कहा—''मुझे कुछ न चाहिए। अरुण हँस पड़ा। राजा ने कहा—''नहीं मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले।''

''तो मुझे भी प्राणदंड मिले।'' कहती हुई वह बंदी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

शब्दार्थ

निरभ्र–बादलों से रहित, **उर्वरा भूमि**–उपजाऊ भूमि, **हेम**–स्वर्ण, **अनुरंजित**–रँगा हुआ, **कौशेय**–गेरुवा, **ऊर्जस्वित** –ऊर्जा से भरी हुई, **अनुग्रह**–कृपा, **तुरंग**–घोड़ा, **दस्यु**–डाकू, **निविड़**–घना, **विक्षिप्त**–पागल, **आलोक**–प्रकाश, **उपकार**–भलाई, **उल्का**–मशाल, तारा, **आततायी**–अत्याचारी, **स्वस्त्ययन**– कल्याणार्थ मंगल कामना ।

अभ्यास

पाठ से

1. कोशल में आयोजित होने वाले उत्सव के परंपरागत नियम क्या थे?
2. मधुलिका ने अपनी भूमि के बदले मिलने वाली राजकीय अनुग्रह को अस्वीकार कर किस प्रकार के जीवन निर्वाह को चुना और क्यों?
3. दुर्ग पर अरुण के गुप्त आक्रमण की सूचना सेनापति को देकर मधुलिका ने अपने प्रेम के प्रति विश्वासघात का कार्य किया अथवा उत्कृष्ट नागरिकता का परिचय दिया? उपयुक्त उदाहरण देकर अपने मत का समर्थन कीजिए।
4. मधुलिका ने पुरस्कार के रूप में राजा से प्राणदंड क्यों माँगा एवं स्वयं बंदी अरुण के पास क्यों जा खड़ी हुई?
5. ''पुरस्कार कहानी प्रेम और संघर्ष का अनूठा उदाहरण है।'' इस कथन के पक्ष में अपने विचार दीजिए।
6. भाव स्पष्ट कीजिए :–

   (क) ''मधुलिका की आँखों के आगे बिजलियाँ हँसने लगीं, दारुण भावना से उसका मस्तिष्क झंकृत हो उठा।''

   (ख) ''जीवन में सामंजस्य बनाए रखने वाले उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं परन्तु उनकी आवश्यकता और कल्पना, भावना के साथ बढ़ती–घटती रहती है।''

   (ग) उपरोक्त कथन को एक उदाहरण के माध्यम से भी स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

F5858I

1. सभा विसर्जन के बाद मधुलिका सबकी दृष्टि से ओझल हो गई। उस समय उसकी मनःस्थिति कैसी रही होगी? सोचकर लिखिए।
2. पुरस्कार नामक इस कहानी का नाट्य–रूपान्तर कर कक्षा में मंचन कीजिए।
3. 'कोशल का कृषि महोत्सव भारतीय जन–जीवन में श्रम की स्थापना करता है।' इस कथन के आधार पर भारत की सामाजिक व्यवस्था में श्रम के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।
4. ''मधुलिका की आँखों के सामने कभी सिंहमित्र और कभी अरुण की मूर्ति अंधकार में चित्रित होती जाती।'' उसकी यह स्थिति उसके मानसिक द्वंद्व को दर्शाती है। यह द्वंद्व आपको किस प्रकार प्रभावित करता है?

भाषा के बारे में

F5H1A6

1. 'पुरस्कार' नामक यह पाठ गद्य की विधा कहानी के अंतर्गत आता है। कथावस्तु, चरित्र–चित्रण अथवा पात्र, कथोपथन, देशकाल अथवा वातावरण, उद्देश्य, शैली शिल्प ये कहानी के अनिवार्य तत्व होते हैं। इस कहानी में ये तत्व किस रूप में आए हैं? उदाहरण देकर इस पाठ के कहानी होने की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

2. जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। उन्हें मूलतः प्रेम का कवि माना जाता है। मानवता और मानवीय भावनाओं का चित्रण उन्होंने अनेक स्थलों पर किया है। उनकी रचनाओं में तत्सम शब्दों की बहुलता देखी जा सकती है। प्रतीकात्मकता तथा बिम्ब विधान उनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। छोटे–छोटे वाक्यों में गम्भीर भाव भरना, उसमें संगीत और लय का विधान करना उनकी शैली को सरस, स्वाभाविक, प्रवाहपूर्ण, ओजमयी और चुटीली बनाता है। पाठ के आधार पर प्रसाद जी की भाषा–शैली की उक्त विशेषताओं को कहानी में आए अंशों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए रेखांकित कीजिए।

3. वह शब्द जिसे संस्कृत भाषा से लेकर हिन्दी में ज्यों का त्यों प्रयुक्त किया जाता है, तत्सम शब्द कहलाता है:– उदाहरण प्रहर, स्वर्ण, कृषक इस पाठ में इन शब्दों का बहुलता से प्रयोग हुआ है। इन्हें ढूँढ़िए और शिक्षक की मदद से उनके तद्भव रूप को लिखिए।

योग्यता विस्तार

F5QHBT

1. इस कहानी में जिस प्रकार कोशल के उत्सव का उल्लेख हुआ है उसी प्रकार आपके अंचल/प्रदेश में भी कोई उत्सव प्रचलित होगा। घर के बड़े–बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कर उसका लेखन कीजिए।

2. 'पुरस्कार' नामक इस कहानी में बहुत सारे ऐतिहासिक स्थलों के नाम आए हैं। भारत के नक्शे में इनका विस्तार कहाँ से कहाँ तक था एवं वर्तमान में इन्हें किन नामों से जाना जाता है? पता लगाइए और लिखिए।

3. पाठ में 'चार प्रहर' शब्द का उल्लेख आया है–

   (क) प्राचीन काल में एक दिन में चौबीस घंटे को आठ हिस्सों में बाँटा गया था, जिसे हम समय की इकाई 'प्रहर' के नाम से जानते हैं। अपने शिक्षक की मदद से उक्त आठों प्रहरों के नाम एवं उनके समय विषयक जानकारी एकत्र करके लिखिए।

   (ख) संगीत में भी इन प्रहरों के आधार पर अलग–अलग रागों के गायन का विधान है, उन्हें भी जानिए।

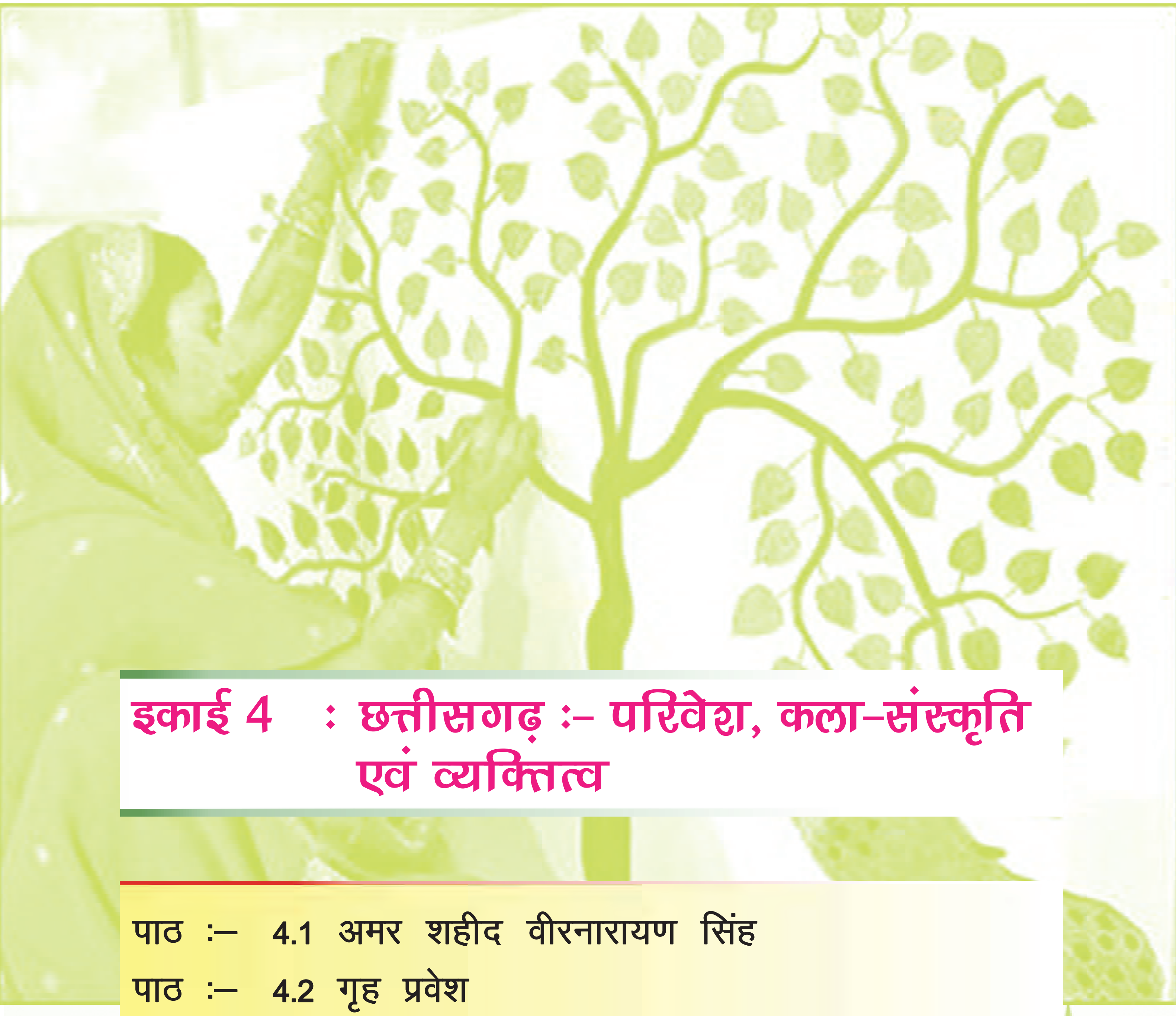

इकाई 4 : छत्तीसगढ़ :– परिवेश, कला–संस्कृति एवं व्यक्तित्व

पाठ :– 4.1 अमर शहीद वीरनारायण सिंह

पाठ :– 4.2 गृह प्रवेश

पाठ :– 4.3 छत्तीसगढ़ की लोककलाएँ

इ
का
ई

4 छत्तीसगढ़ :– परिवेश, कला–संस्कृति एवं व्यक्तित्व

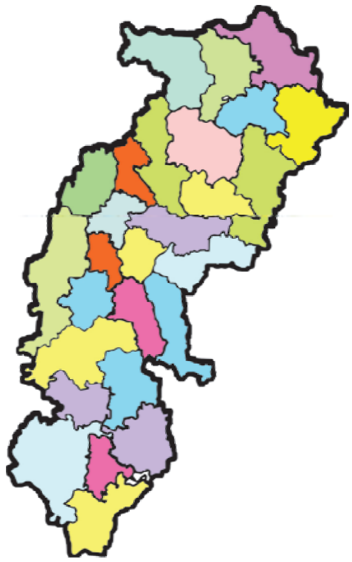

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता उसे भारत के कई राज्यों की तरह एक बहुरंगी स्वरूप देती है। आप छत्तीसगढ़ की लोक कलाओं में यहाँ की संस्कृति के विविध आयामों के दर्शन कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ के सपूतों ने कई क्षेत्रों में इसके गौरव को बढ़ाया है। उन सपूतों की गौरव गाथाओं का गान हमारी परंपराओं में है।

इस इकाई की रचना का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक कलाओं की चर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध विकसित करना और यहाँ के गौरवशाली व्यक्तित्व तथा उनके कृतित्व से उन्हें परिचित कराना है।

इस इकाई में शामिल पाठ वीर नारायण सिंह, छत्तीसगढ़ के आदिवासी स्वातंत्र्य सेनानी शहीद वीरनारायण सिंह के समाज के शोषकों एवं तत्कालीन अंग्रेजी शासकों के विरुद्ध वीरतापूर्ण संघर्ष से विद्यार्थियों को अवगत कराता है।

'कविता', 'गृह–प्रवेश' हमारे परिवेश में व्यक्ति के एकाकीपन को महसूस करने की संवेदना विद्यार्थियों में जगाती है, और बताती है कि घर को एक 'गृहिणी' सचमुच 'घर' बना देती है। कविता के अंत में चिड़िया का वापस न जाने के लिए अंतःपुर में आ जाना घर को एक गृहिणी मिल जाने का प्रतीक है।

इस इकाई में शामिल पाठ 'छत्तीसगढ़ की लोककला' में लोककलाओं की विशिष्टताओं को रेखांकित कर छत्तीसगढ़ के लोकगीतों, लोकनाट्यों एवं लोकनृत्यों तथा उनसे जुड़े कलाकारों से परिचित कराया गया है।

पाठ — 4.1

अमर शहीद वीरनारायण सिंह

F5ZSDG

डॉ. सुनीत मिश्र

जीवन परिचय

डॉ. श्रीमती सुनीत मिश्र का जन्म 16 अक्टूबर, 1949 को मंडला, मध्यप्रदेश में हुआ। इन्होंने एम.ए., पी.एच.डी. (इतिहास) एवं पर्यटन में स्नातकोत्तर पत्रोपाधि प्राप्त की है। सोनाखान के वीर जमींदार शहीद वीरनारायण सिंह पर इनका प्रथम शोधकार्य है। इनके शोधपत्र, लेख विचारादि समाचार पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। इन्हें शिक्षा एवं महिला उत्थान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल एवं महिला आयोग, छत्तीसगढ़ शासन, के द्वारा राज्यपाल के हाथों सम्मानित किया गया है।

अतीत से ही छत्तीसगढ़ देश का एक गौरवशाली भू–भाग रहा है। यहाँ पर सर्वधर्म समभाव की भावना है, ऋषि–मुनियों एवं वीर योद्धाओं ने इस अचंल का नाम देश में रोशन किया है। यह क्षेत्र राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस अंचल में अनेक महान् विभूतियों ने जन्म लिया तथा यहाँ की माटी को गौरवान्वित किया।

महानदी की घाटी एवं छत्तीसगढ़ की माटी के महान् सपूत सोनाखान के जमींदार वीर नारायण सिंह बिंझवार का जन्म 1795 में हुआ था। इनके पिता रामराय सोनाखान के जमींदार थे, रामराय ने ब्रिटिश संरक्षण काल के आरंभ होते ही 1818–19 में अंग्रेजों एवं भोंसला राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था जिसे नागपुर से आकर कैप्टन मैक्सन ने दबा दिया था। विद्रोह का दमन होने के बाद सोनाखान जमींदारी के गाँवों की संख्या 300 से घटकर 50 तक सीमित हो गई। इसके बाद भी रामराय का दबदबा समाप्त नहीं हुआ और बिंझवारों की तलवार का जादू सिर चढ़कर बोलता रहा। 1830 ई. में रामराय की मृत्यु के पश्चात् नारायण सिंह 35 वर्ष की अवस्था में जमींदार बने।

नारायण सिंह धर्म परायण थे,रामायण महाभारत में उनकी रुचि थी। गुरुओं से धर्म संबंधी, नीति संबंधी शिक्षा लेते थे। बाल्यकाल से ही तीर धनुष और बंदूक चलाना सीख चुके थे। मृदुभाषी, मिलनसार एवं परोपकारी प्रवृत्ति के कारण वे जनसंपर्क में विश्वास रखते थे और लोकोत्सव आदि में सम्मिलित होते थे। वे अपने कबरे घोड़े पर सवार होकर गाँव–गाँव भ्रमण कर जन समस्याएँ सुनते थे। उन्होंने तालाब खुदवाना, वृक्ष लगवाना एवं पंचायतों के माध्यम से जन समस्याओं का समाधान करना, जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए। सोनाखान में राजा सागर, रानी सागर

और नंद सागर तीन तालाब हैं जो वीर नारायण सिंह की सच्ची लोक कल्याणकारी नीतियों के साक्षी हैं। उन्होंने स्वयं नंद सागर के आस–पास वृक्षारोपण कर नंदनवन का रूप दिया था। उनके पिता ने जीते जी जो परंपराएँ शुरू की थीं उन्होंने तथा उनके पुत्र गोविंद सिंह ने उनका पालन किया।

अन्याय और शोषण के विरोधी वीर नारायण सिंह अल्पायु से ही अपने पिता के संघर्षों में भी साथ रहते थे। उनमें अपने पूर्वज बिसई ठाकुर जैसी दृढ़ता, फत्ते नारायण सिंह जैसा धैर्य एवं साहस तथा पिता रामराय जैसा जन–नेतृत्व करने की अपूर्व क्षमता थी जो अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में देखने को मिली। जमींदार बनते ही उनके सभी जनप्रिय गुणों का साक्षात्कार होने लगा। अपनी जमीदारी सँभालने के बाद उन्होंने प्रजा के दुख–दर्द को समझा और उसे दूर करने के लिए अनेक उपाय किए।

जमींदार होने के बाद भी नारायण सिंह बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे। उनका मकान बड़ी हवेली या किला नहीं था बल्कि बाँस और मिट्टी से बना साधारण मकान था। वे आम जनता के बीच समरस होकर ही अपने क्षेत्र का दौरा करते थे और रैयत की समस्याओं एवं कठिनाइयों का हल खोजते थे।

1854 के प्रारंभ में नागपुर राज्य के साथ छत्तीसगढ़ क्षेत्र भी अँग्रेजी राज्य में मिला लिया गया । कैप्टन इलियट ने इस अंचल का दौरा करके सरकार को रिपोर्ट भेजी। नए ढंग से टकोली (लगान) नियत किया जिसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई। नारायण सिंह ने भी अँग्रेजों की इस नई नीति का विरोध किया।

1835 से 1855 के मध्य सोनाखान जमींदारी में अनेक समस्याएँ आती रहीं किंतु नारायण सिंह ने उनका दृढ़ता पूर्वक सामना किया। वे अपने ग्रामों को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहे। इस अवधि में अँग्रेज अपनी देशव्यापी समस्याओं में व्यस्त थे। अफगान, सिंध, मिस्र, बर्मा आदि ज्वलंत प्रश्न थे। नागपुर में रघुजी तृतीय का शासन चल रहा था। राजा अस्वस्थता के कारण छत्तीसगढ़ आकर प्रशासन देखने की स्थिति में नहीं था, यद्यपि सोनाखान जमींदारी की जागरुकता से वह सतर्क था। नारायण सिंह ने इन परिस्थितियों से लाभ उठाते हुए अपने अधीनस्थ जमींदारी क्षेत्र में सुशासन स्थापित करने का प्रयास किया।

सोनाखान जमींदारी से टकोली की अदायगी न होने के कारण रायपुर में डिप्टी कमिश्नर सी. इलियट, नारायण सिंह के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त था। वह उन्हें दंडित करने की प्रतीक्षा में था। इसके लिए वह सूक्ष्म कारणों को भी खोजने में सक्रिय था। उसने नागपुर के कमिश्नर को शिकायत की कि मेरी दृष्टि में जमींदार का व्यवहार असहनीय एवं अत्याचार पूर्ण है। ऐसे समय में ही उसे खालसा के व्यापारी माखन के गोदाम से जमींदार द्वारा अनाज निकाले जाने की सूचना प्राप्त हुई। अतः डिप्टी कमिश्नर ने नारायण सिंह को बुलवाया परन्तु आदेश की अवहेलना होने पर उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया। हुआ यह था कि सन् 1856 में छत्तीसगढ़ में सूखा पड़ा जिसमें नारायण सिंह की जमींदारी के लोग दाने–दाने के लिए तरसने लगे। खालसा गाँव के माखन नामक व्यापारी के पास अन्न के विशाल भंडार थे। नारायण सिंह को यह असह्य था कि जनता भूखों मरती रहे और व्यापारी भंडारों में अनाज जमा करते रहें। अतः नारायण सिंह ने भंडारों के ताले तोड़ दिए और उसमें से उतना अनाज निकाल लिया जो भूख के शिकार किसानों के लिए आवश्यक था और उन्होंने जो कुछ भंडार से निकाला था उसके विषय में तुरंत ही डिप्टी कमिश्नर को लिख दिया परन्तु अंग्रेजों ने षडयंत्र कर सोनाखान के जमींदार को गिरफ्तार करने के लिए मुल्की घुड़सवारी की एक टुकड़ी भेज दी थी और थोड़ी बहुत परेशानी के बाद संबलपुर में उन्हें 24 अक्टूबर, 1856 को गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा चलाया गया। वस्तुतः नारायण सिंह की राजनैतिक चेतना एवं जागरुकता ब्रितानी अधिकारियों को चुनौती थी।

सोनाखान के किसान अपने नेता को जेल में देख बेचैन थे, दुखी थे किंतु उनके पास कोई चारा नहीं था। उसी समय देश में अँग्रेजी सत्ता के विरोध में विप्लव की अग्नि फूट पड़ी। इसका लाभ उठाकर सोनाखान के किसानों ने संभवतः संबलपुर के विद्रोही नेता एवं क्रांतिकारी सुरेन्द्र साय से संपर्क किया और उनकी मदद से नारायण सिंह ने रायपुर जेल से निकलने की योजना बनाई। दस माह चार दिन बंदी रहने के बाद नारायण सिंह तीन अन्य साथियों के साथ जेल से निकले। वे जेल से निकलकर सीधे सोनाखान चले गए और तीन माह तक स्वतंत्र घूमते रहे। रायपुर के डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें पुनः पकड़वाने हेतु 1000 रुपए का इनाम घोषित करवाया साथ ही उसने तुरंत एक दस्ते को सोनाखान की ओर भेज दिया परन्तु ब्रिटिश सरकार उन्हें खोजने या बंदी बनाने में असमर्थ रही।

जब नारायण सिंह गाँव पहुंच गए तो गाँव–गाँव के आदिवासी अपने नेता को देखकर खुशी–खुशी दृढ़ निश्चय कर संगठित हुए, विद्रोह का नगाड़ा गाँव–गाँव बजने लगा।

नारायण सिंह भली–भाँति जानते थे कि अँग्रेज सरकार उन्हें बख्शेगी नहीं और जल्दी–से–जल्दी गिरफ्तार करने के लिए पूरी ताकत लगा देगी और ऐसा हुआ भी। नारायण सिंह ने परिणामों की तनिक भी परवाह किए बिना अँग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद जारी रखा। जमींदार नारायण सिंह के साहसिक कार्यों ने जनहित कार्यों में संलग्न होकर अंग्रेजों का विरोध अकेले ही हिम्मत के साथ किया। सोनाखान पहुँचकर नारायण सिंह ने 500 बंदूकधारियों की एक सेना एकत्र करने में सफलता पाई। उन्होनें हथियार एवं गोला बारूद बड़ी मात्रा में एकत्र किए और सोनाखान पहुँचने वाले प्रत्येक रास्ते पर जबर्दस्त मोर्चाबंदी कर दी।

रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट को नारायण सिंह के जेल से निकलने और सोनाखान पहुँचने का समाचार जब से मिला था उसकी नींद हराम हो गई थी। रायपुर में अँग्रेजों की फौज थी परन्तु इलियट को उस पर पूर्ण विश्वास नहीं था। यह रायपुर स्थित फौज के प्रति अविश्वास का ही परिणाम था कि नारायण सिंह के विरुद्ध कार्यवाही करने में इसलिए इलियट को पूरे 20 दिन लग गए। जनहित में वीर नारायण सिंह का संघर्ष अँग्रेजों से प्रारंभ हुआ। छत्तीसगढ़ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व उन्होंने किया। अँग्रेजों ने इसे विद्रोह माना था। जिले के अव्यवस्थित प्रशासन के कारण विद्रोह के लिए उपयुक्त अवसर था। सोनाखान गाँव को खाली करा दिया गया। पास की पहाड़ी में मोर्चा बंदी की गई। सोनाखान की ओर आने वाले हर रास्ते पर नाकेबंदी करवाकर मजबूत दीवारें खड़ी करवा दी गई। निकट के गाँवों से रसद, शस्त्र, गोला–बारूद आदि इकट्ठे किए और साहस के साथ मोर्चा संभाला।

उन्होंने अँग्रेजों के विरुद्ध खुली बगावत का ऐलान कर दिया था। उनकी गिरफ्तारी अँग्रेज डिप्टी कमिश्नर के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुकी थी तो नारायण सिंह के लिए आत्म–सम्मान और देश की सुरक्षा व आजादी की बात बन गई थी। लैफ्टीनेंट ग्रांट के नेतृत्व में पैदल एवं घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी बिलासपुर से रवाना हुई जो रायपुर जिले के उत्तरी क्षेत्र तथा नर्मदा क्षेत्र के रामगढ़ एवं सोहागपुर क्षेत्र में क्रांतिकारियों की गतिविधियों को रोकने हेतु भेजी गई।

वीर नारायण सिंह के नेतृत्व में सोनाखान गाँव के आसपास के सभी किसान संगठित हो गए तथा उन्होंने शपथ ली कि वे उनके नेतृत्व में अपने प्राणों की बलि देने के लिए तैयार हैं। वस्तुतः यह छत्तीसगढ़ का पहला किसान संगठन था और वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ के प्रथम किसान नेता थे। किसानों में चेतना फैलाकर, उनकी शक्ति को संगठित कर अत्याचारी शासन से लोहा लेने का कार्य प्रथमतः वीर नारायण सिंह ने ही किया। उनकी सेना में किसान भी भर्ती हुए किंतु उनके पास न तो पर्याप्त हथियार थे और न ही कोई सैनिक प्रशिक्षण, किंतु उनके पास अटूट मनोबल था और था स्वाधीनता के लिए संघर्ष का संकल्प। अत्याचार, अन्याय से लड़ने की प्रेरणा थी। अटूट मनोबल से बड़ा कोई हथियार नहीं होता। देखते–ही–देखते सोनाखान गाँव एक फौजी छावनी में बदल गया। जंगल के बीच बसे इस आदिवासी गाँव में तीरकमानों एवं बंदूकों की झनकार सुनाई पड़ने लगी। स्वाधीनता के संघर्ष की पहली शंखनाद सोनाखान के जंगलों से ही उठी थी।

इसी बीच अंग्रेजों के नेतृत्वकर्ता स्मिथ को मंगल नामक व्यक्ति से सूचना मिली कि समयाभाव के कारण नारायण सिंह नाकेबंदी का कार्य पूर्ण नहीं कर सका है तथा अवरोध हेतु खड़ी दीवार अपूर्ण है। स्मिथ ने अपने अधीनस्थ जमींदारों के कतिपय सहायकों को घाटी की पूर्ण नाकेबंदी हेतु आदेशित किया तथा 80 सैनिक और नियुक्त किए।

स्मिथ को अपनी फौजी तैयारी में रायपुर में 20 दिन एवं खरौद में 8 दिन लगे थे। स्मिथ खरौद से रवाना होकर पहले नीमतल्ला, फिर देवरी पहुँचा। यह 30 नवम्बर 1857 की बात है। देवरी जमींदार, स्मिथ के स्वागत के लिए तैयार ही बैठा था। देवरी का जमींदार रिश्ते में नारायण सिंह का काका लगता था। उसकी नारायण सिंह से खानदानी शत्रुता थी। स्मिथ ने देवरी जमींदार को हथियार की तरह उपयोग किया।

देवरी से स्मिथ ने ऐसी व्यवस्था की कि नारायण सिंह को सोनाखान में बाहर कहीं से भी कोई सहायता न मिल सकें। सोनाखान जंगलों एवं पहाड़ों से घिरा एक किले के समान है। सोनाखान की ओर प्रवेश के सारे रास्तों को अवरुद्ध कर स्मिथ एक दिसम्बर 1857 को प्रातःकाल देवरी से सोनाखान पर आक्रमण करने हेतु रवाना हुआ। आक्रमण के समय देवरी जमींदार महाराज साय और शिवरीनारायण का बालापुजारी भी साथ थे। देवरी जमींदार स्मिथ की फौज का पथ प्रदर्शन कर रहा था। स्मिथ की फौज जब सोनाखान से तीन फर्लांग दूर रह गई थी तब एक नाला पड़ा। उस समय 10 बजा होगा। नारायण सिंह के सिपाहियों ने स्मिथ की सेना पर अकस्मात् हमला कर दिया। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध प्रारंभ हो गया। तोप एवं बंदूकों से हमले प्रारंभ हो गए। स्मिथ लिखता है ''किंतु हम आगे बढ़ते रहे तथा सुरक्षित रूप से दोपहर तक सोनाखान पहुँच गए।'' हरिठाकुर का मत है कि प्रारंभ में 10 बजे स्मिथ को प्रथम आक्रमण के समय भारी नुकसान हुआ था परंतु ठीक समय पर सैन्य मदद मिल जाने से वे आगे बढ़ते ही चले गए। नारायण सिंह के सिपाही इस बाढ़ को रोकने में असमर्थ रहे। अतः नारायण सिंह जंगलों की ओर चले गए ताकि अवसर मिलते ही पुनः आक्रमण कर सके। स्मिथ ने लिखा है कि ''हम शीघ्रता से पैदल ही नारायण सिंह के घर तक गए, यह भी अन्य गाँवों की तरह रिक्त था। हमने वहाँ गोली चालन किया और उसके घर से पहाड़ियों तक पहरा लगवा दिया किंतु पहाड़ियों पर तब तक हमला न करने का दृढ़ संकल्प किया था जब तक कि कटंगी से लोग सहायता के लिए न आ जाएँ ताकि दोनों ओर से उन पर हमला किया जा सके।'' पहाड़ी के ऊपर से भीषण गोलाबारी कर नारायण सिंह ने स्मिथ को एक बारगी लौटने पर विवश कर दिया। तत्पश्चात् खाली ग्राम में स्मिथ ने आग लगा दी। गाँव के लोग पहाड़ी पर से यह दृश्य देख रहे थे। जंगल के दूसरी ओर से नारायण सिंह की सेना ने गोलियों की बौछार शुरू की। इसके फलस्वरुप स्मिथ को अपनी

जान बचाने हेतु गोलियों की पहुँच से दूर गाँव से हटने को बाध्य होना पड़ा। रात्रि में स्मिथ ने व्यक्तियों का लगातार आगमन देखा। जलते हुए सोनाखान ग्राम के उस पार पहाड़ियों में हलचल देखते हुए स्मिथ की वह रात्रि बेचैनी में व्यतीत हुई। स्मिथ लिखता है कि वह रात अँधेरी थी किंतु हमें चन्द्रमा के प्रकाश तथा हमारे सामने धधकते हुए ग्राम से लाभ हुआ।

सोनाखान धू–धू कर जल रहा था। नारायण सिंह ने स्मिथ से रणक्षेत्र में मुकाबले की तैयारी तो की थी किंतु इस प्रकार के अग्निकांड की कल्पना उन्होंने नहीं की थी। सुबह तक नारायण सिंह ने देखा कि सोनाखान राख के ढेर में बदल चुका है।

नारायण सिंह के आंदोलन को अँग्रेजों ने कुछ स्थानीय लोगों की ही मदद से कुचल दिया था। स्मिथ ने नारायण सिंह के साथ कोई शर्त नहीं रखी। वह सोनाखान के जमींदार के साथ 3 दिसंबर को रायपुर की ओर वापस चल दिया तथा 5 दिसम्बर को रायपुर पहुँचा। नारायण सिंह को उसने रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट को सौंप दिया एवं स्मिथ ने संबलपुर एक पत्र लिखकर निवेदन किया कि गोविंद सिंह को रायपुर भेजें क्योंकि उस समय वह उस जिले में था। उसने व्यक्ति भेजकर यह निर्देश दिया कि व्यवस्था हेतु जमींदारी में नई नियुक्तियाँ की जाएँ। तथा नारायण सिंह द्वारा बनाई गई सेना को रद्द कर दिया जाए।

डिप्टी कमिश्नर इलियट लिखता है– ''मेरे कोर्ट के समक्ष जमींदार को पेश किया गया और उस पर 1857 के अधिनियम के सेक्शन 6 एक्ट 14 के अंतर्गत अभियोग लगाया गया। 1857 की धारा 01 और अधिनियम 11 के तहत मैंने उसे फाँसी की सजा सुना दी।'' 9 दिसंबर 1857 को इलियट ने रायपुर स्थित तीसरा भारतीय पैदल सेना के कमांडर को सूचित किया – ''उसे कल उषाकाल में फाँसी पर लटकाया जाएगा अतः निवेदन है आप इस कार्यवाही को देखने और जरूरत पड़ी तो व्यवस्था बनाए रखने के लिए आपकी कमान में जो रेजीमेंट है उसकी जेल के निकट परेड कराएँ।'' (अनु. शम्भू दयाल गुरू) 10 दिसम्बर 1857 की सुबह सजा तामील कर दी गई। छत्तीसगढ़ के प्रेरणा प्रतीक शहीदवीर नारायण सिंह अमर हो गए।

वीर नारायण सिंह को फाँसी देने के कुकृत्य से जनता में आतंक के स्थान पर आक्रोश व्याप्त हुआ। रायपुर की जनता एवं सैनिकों के समक्ष दी गई फाँसी की घटना ने अल्पकाल हेतु ब्रिटिश आतंक का भय प्रदर्शित किया किंतु कालांतर में यह प्रेरणा के रूप में 18 जनवरी 1858 के विद्रोह के अवसर पर दृष्टिगत हुई जिसका नेतृत्व वीर हनुमान सिंह राजपूत ने किया था। विद्रोह के बाद 17 लोगों को गिरफ्तार कर अँग्रेजों ने 22 जनवरी 1858 को सार्वजनिक फाँसी दी जिसमें सभी जाति एवं धर्म के लोग थे। शहीद नारायण सिंह का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। आजादी की लड़ाई में वे छत्तीसगढ़ के प्रेरणास्त्रोत रहे। वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ में 19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण काल में राजनीतिक सामाजिक संचेतना के संवाहक थे।

इस प्रकार देश की स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेते हुए छत्तीसगढ़ के वीर सेनानी शहीद हो गए। हमारे लिए गौरव की बात है कि छत्तीसगढ़ में स्वाधीनता के लिए पहला बलिदान देने वाला एक आदिवासी वीर था जिसने यह सिद्ध कर दिया कि स्वाधीनता की अग्नि इस क्षेत्र के आदिवासियों के हृदय में भी बराबर धधक रही थी। जेल के कैदियों एवं जनता ने भी 10 दिसम्बर 1857 को मातम मनाया तथा वीर साथी को श्रद्धांजलि अर्पित की। छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम की यह चिरस्मरणीय घटना है। वीर नारायण सिंह के वंशज व क्षेत्र की जनता आज भी सोनाखान जाकर श्रद्धासुमन अर्पित करती है। नारायण सिंह की वीरगाथा घर–घर में व्याप्त है। गर्व के साथ जनता वीर नारायण सिहं को यह कहकर याद करती है –

वीर नारायण तुम्हारी वीरता बलिदान से ।
आग के शोले निकलते अब भी सोनाखान से ।।
शहीदों व सेनानियों के बलिदानी गौरव का प्रतीक।
देश में तिरंगा ध्वज फहर रहा है, बड़ी शान से ।।

शब्दार्थ

साक्षी – गवाह; **विप्लव** – क्रांति, विद्रोह; **परवाह** – चिंता; **रसद** – सैनिकों की खाद्य सामग्री; **किला** – दुर्ग; **रणक्षेत्र** – युद्धभूमि; **फौज** – सेना; **कुकृत्य** – बुरा कार्य; **रणक्षेत्र** – युद्ध क्षेत्र; **कालांतर** – समय पश्चात्; **क्षोभ** – क्रोध जनित दुःख; **अकस्मात्** – अचानक; **नाकेबंदी** – घेराबंदी।

अभ्यास

पाठ से

1. वीर नारायण सिंह में कौन से मानवीय मूल्य दिखते हैं, जो उन्हें अद्वितीय सिद्ध करते हैं।
2. वीर नारायण सिंह को अपने पूर्वजों से कौन से गुण प्राप्त हुए थे?
3. जमींदार होने के बाद भी, शहीद वीर नारायण सिंह की लोकप्रियता के क्या कारण थे?
4. माखन व्यापारी के गोदाम से अनाज निकालने के पीछे जमींदार का क्या उद्देश्य था?
5. शहीद वीर नारायण सिंह निर्भीक, दृढ चरित्र और ईमानदार थे। यह किस घटना से पता चलता है?
6. वीर नारायण सिंह की विद्रोह की रणनीति क्यों असफल हुई?
7. छत्तीसगढ़ की जनता के बीच वीर नारायण सिंह की लोकप्रियता के कारण क्या हैं?

पाठ से आगे

F69NF4

1. अपने आस–पास के ऐसे लोगों की जानकारी एकत्र करें जो जनसेवा के कार्य में निस्वार्थ भाव से लगे रहते हैं?
2. 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में वीर नारायण सिंह के अलावा छत्तीसगढ़ की माटी के और कौन–कौन से वीर सपूत शामिल थे जिन्होंने अपने प्राण न्योछावर किए? उनके बारे में जानकारी एकत्र कर उनकी जीवन–यात्रा पर साथियों के साथ समूह चर्चा करें?
3. आदिवासी जीवन सरल, निर्भीक और प्रकृति के सबसे करीब है? इस संदर्भ में उनके गुणों के पाँच उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए?

4. ''अटूट मनोबल से बड़ा कोई हथियार नहीं होता'' इसे आपने अपने जीवन में कई बार महसूस किया होगा। अपने जीवन के उन प्रसंगों को लिखकर कक्षा में सुनाइए?

F6IJGR

भाषा के बारे में

1. (क) उन पर मुकदमा चलाया गया।

   (ख) स्मिथ ने देवरी के जमींदार को हथियार की तरह उपयोग किया।

   पाठ से लिए गए इन दोनों वाक्यों में फर्क यह है कि 'क' एक कर्मक वाक्य है अर्थात् इस प्रकार के वाक्य में क्रिया पर 'क्या' प्रश्न का जवाब 'निर्जीव संज्ञा' (मुकदमा) के रूप में प्राप्त होता है। जैसे– क्या चलाया गया? उत्तर– मुकदमा चलाया गया।

   जबकि 'ख' वाक्य द्विकर्मक वाक्य है। देवरी के 'जमींदार' और 'हथियार' इस वाक्य में दो कर्मों का प्रयोग हुआ है। एक कर्म अर्थात निर्जीव संज्ञा (हथियार) और दूसरा कर्म अर्थात किसको/किसे के उत्तर में सजीव संज्ञा (जमींदार) का प्रयोग हुआ है।

   आप इसी प्रकार के पाँच–पाँच वाक्यों की रचना कीजिए।

2.
- मनः + बल = मनोबल — तमः गुण = तमोगुण
- मनः + भाव = मनोभाव — तपः वन = तपोवन
- अधः + भाग = अधोभाग — रजः गुण = रजोगुण
- वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध — मनः अनुकूल = मनोनुकूल

उदाहरण से स्पष्ट है कि विसर्ग (:) से पूर्व 'अ' हो और विसर्ग (:) के पश्चात 'अ', या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, या पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। इसी प्रकार के अन्य उदाहरण खोजकर उनका संधि विच्छेद कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. छतीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम के कौन–कौन से स्थान विद्रोह के मुख्य केंद्र थे? उन स्थानों का नाम लिखकर नेतृत्वकर्ता का नाम लिखिए।
2. छत्तीसगढ़ के नक्शे में उन स्थानों को चिन्हित करें जो 1857 में आन्दोलन के केंद्र रहे। इस दौरान उन स्थानों पर हुई गतिविधिओं की संक्षिप्त जानकारी भी दीजिए।

F6SFIE

पाठ – 4.2

गृह–प्रवेश

सतीश जायसवाल

जीवन परिचय

वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार सतीश जायसवाल का जन्म 17 जून 1942 को हुआ। उन्हें रिपोर्ताज, कविता, कहानी तथा विशेषतः संस्मरण और यात्रावृत्तांत लेखन के लिए जाना जाता है। बख्शी सृजनपीठ छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष रह चुके सतीश जी को पत्रकारिता का द स्टेट्समैन अवार्ड फॉर रूरल रिपोर्टिंग (लगातार दो बार) तथा बनमाली कथा सम्मान प्राप्त है। उनकी प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ हैं –

कहानी संकलन :– जाने किस बंदरगाह पर, धूप ताप , कहाँ से कहाँ, नदी नहा रही थी। बाल साहित्य :– भले घर का लड़का, हाथियों का गुस्सा, संपादन :– छत्तीसगढ़ के शताधिक कवियों का प्रतिनिधि संकलन– कविता छत्तीसगढ़। संस्मरण – कील काँटे कमन्द। वर्तमान में आप बिलासपुर छ.ग. में निवासरत हैं।

सतीश जायसवाल की कविता गृह प्रवेश में एकाकी जीवन जी रहे व्यक्ति को अपने एकांत के सन्नाटे को तोड़ने का उपक्रम करते दिखाया गया है। कविता में ऊपरी दिखावे से भरा प्रेम, थके हारे व्यक्ति की व्यथा, एकाकीपन में जीवन का ठहराव तथा पक्षियों के प्रति प्रेम और अंत में सपनों में ही सही 'घर का 'घर' हो जाना' चित्रित हुआ है। कविता इन अनुभवों से गुजरते हुए पाठक को संवेदना से जोड़े रखती है।

गृह–प्रवेश

पहले लटकाई मैंने
धान की बालियों वाली झालर
दरवाजे की चौखट पर
फिर भेजा चिड़ियों को न्योता
गृह प्रवेश का विधिवत।

चिड़ियों ने भी
न्योते को मान दिया,

आईं, दाना चुगा।
और लौट गईं
बाहर ही बाहर दरवाजे से
वैसे
समारोह के बाद जैसे
लौटते हैं
आमंत्रित अतिथि सभी।

छूट गया घर
सूने का सूना,
पहले से भी वीराना
किसी रंग बिरंगे
और उमंग भरे
मेले से लौटने पर
एक आदमी जैसे।
थका हारा और बिलकुल अकेला।

तब लटकाया मैंने एक आईना
भीतर
अंतःपुर की दीवार पर।

आईने के काँच में झाँका
तो एक से दो हुआ,
संतोष हुआ।
अपनी ही छाया ने समझाया
सूनापन कुछ तो दूर हुआ।
ऐसे ही
नींद में
सपनों का साथ जुड़ जाएगा
धीरे–धीरे घर भी
घर हो जाएगा।

सपने में
आवाज दे रही थी
चिड़िया,
जगा रही थी
सुबह सबेरे।
आईने पर खटखट
जैसे खटखटा रही थी
घर का दरवाजा।

किसी अतिथि की तरह
बाहर ही बाहर से
नहीं लौटी इस बार
चिड़िया,

अब अंतःपुर में
चिड़िया
काँच के आईने में
अपने को निहारती
शृंगार करती
और एक घर सजाती।

घर
धीरे–धीरे घर बन रहा था।

सतीश जायसवाल

अभ्यास

पाठ से

1. कवि चिड़ियों को बुलाने के लिए क्या–क्या करता है?
2. चिड़ियों के दाना चुगकर लौट जाने पर कवि कैसा महसूस करता है?
3. सूनापन दूर करने के लिए कवि कौन–कौन से उपाय करता है?
4. कवि द्वारा घर के आंतरिक भाग अथवा अंतःपुर में आईना लटकाने का आशय क्या है?
5. 'घर धीरे–धीरे घर बन रहा था', यह पंक्ति घर में किन बदलावों और उम्मीदों की ओर संकेत करती है?
6. कविता में अतिथियों और चिड़ियों में क्या समानताएँ बताई गईं हैं?

पाठ से आगे

F7B7LP

1. आप पक्षियों को अपने घर आमंत्रित करने के लिए किस प्रकार का उपाय करना चाहेंगे? लिखिए।
2. आईने में अपना बिंब देखने के बाद आपके मन में किस–किस तरह के विचार आते हैं? उन विचारों को लिखिए।
3. एक एकाकी व्यक्ति के घर और एक परिवार वाले घर में आप किस प्रकार का फर्क देखते हैं? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. किसी विवाह या उत्सव के आयोजन के बाद जो दृश्य आप देखते हैं और आपके मन में जो भाव उभरते हैं उनका वर्णन कीजिए।
5. गृह प्रवेश के बारे में आप क्या जानते हैं? कविता में वर्णित गृह प्रवेश का दृश्य, परंपरागत रूप से समाज में होने वाले गृह प्रवेश से किस प्रकार भिन्न है?

भाषा के बारे में

F7K3NC

1. 'बालियाँ' शब्द से दो वाक्य इस प्रकार बनाइए कि इस शब्द के अलग–अलग अर्थ प्रकट हों।
2. गृह प्रवेश, न्योता, झालर, उमंग, मेला, उत्सव, वीराना, रंग–बिरंगे, शृंगार, चौखट, अतिथि, सपना और संतोष इन 12 शब्दों का प्रयोग करते हुए एक प्रसंग–वर्णन या लघु कहानी लिखिए।
3. कविता से 10 विशेषण शब्दों की पहचान कर उन्हें अलग कर लिखिए। आप उन विशेषण शब्दों के लिए कौन से विशेष्य शब्द लिखना चाहेंगे, आपके द्वारा कल्पित विशेष्य शब्दों से उन विशेषणों को मिलाकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. आप अपने आस–पास अकेले रह रहे किसी बुजुर्ग महिला या पुरुष को देखकर लिखिए कि उन्हें किस तरह की मुश्किलों का सामना अपने दैनिक जीवन में करना पड़ता है? सामाजिक रूप से एक संवेदनशील व्यक्ति के रूप में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?
2. हर सुबह और शाम चिड़ियों की चहचहाहट से वातावरण में एक तरह का संगीत छिड़ जाता है। इसी तरह की और भी घटनाएँ प्रकृति में होती होंगी। उन घटनाओं को अपने शब्दों में लिखिए।
3. एक एकाकी व्यक्ति के घर और एक परिवार वाले घर में आप किस प्रकार का फर्क देखते हैं? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

F7TYPZ

पाठ – 4.3

छत्तीसगढ़ की लोककलाएँ

F83URH

दानेश्वर शर्मा

जीवन परिचय

भिलाई इस्पात संयंत्र के पूर्व प्रबंधक, अखिल भारतीय स्तर के साहित्यकार, लोक साहित्य के अधिकारी विद्वान, हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी के यशस्वी कवि, ललित निबंध एवं स्तंभ लेखक, फिल्मी गीतकार, कवि सम्मेलनों के कुशल संचालक तथा श्रीमद् भागवत पुराण के प्रवचनकार श्री दानेश्वर शर्मा जी का जन्म ग्राम मेडेसरा, जिला दुर्ग (छ.ग.) में 10 मई,1931 में हुआ। आपकी प्रकाशित पुस्तकें – छत्तीसगढ़ के लोक गीत (विवेचनात्मक), हर मौसम में छन्द लिखूंगा (गीत संग्रह), लव–कुश (खंडकाव्य), लोक दर्शन (धार्मिक–आध्यात्मिक ललित निबंध संग्रह), तपत कुरू भई तपत कुरू (छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह) तथा गीत–अगीत (हिन्दी काव्य संग्रह) हैं।

'शब्दानुशासनम्' में कहा गया है–''लोके वेदे च'' अर्थात् लोक में और वेद में भी। 'लोक' की यह प्रथम प्रतिष्ठा अकारण नहीं है। वह वेद से भी अधिक प्राचीन है। लोक–मानस ने धरती को माता और अपने को उसका बेटा माना है।' माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथ्वीव्याः। नाते रिश्तों के इस प्रेम ने उसे प्रकृति और उसकी संतान के साथ जोड दिया और यहीं से फूटी लोक–रचना की अजस्र धारा लोक गीत, लोक गाथा, लोक नाट्य और लोक नृत्य के रूप में आज तक प्रवाहित होती चली आ रही है। मनुष्य का सम्पूर्ण चिंतन, दर्शन और राग–विराग लोक कला में इसी कारण सन्निहित है।

1 नवंबर 2000 से छत्तीसगढ़ स्वतंत्र राज्य है। गढ़ अर्थात किला। यहाँ कभी छत्तीस किले थे। रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, बिलासपुर, रायगढ़, सुकुमा, दंतेवाड़ा, सूरजपुर, बीजापुर आदि 28 जिलों में यह भू–भाग साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र में अपनी अनेक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। रायपुर (वर्तमान बलौदाबाजार) जिले के तुरतुरिया नामक स्थान में वाल्मीकि का आश्रम माना गया है। इस नाते, कविता की पहली ऋचा यहाँ फूटी आदि शंकराचार्य के भी गुरु श्री गोविंद पाद स्वामी इसी धरती के संत थे। संगीत और कला के क्षेत्र में भी इसी प्रकार की अनेक बातें कही जाती हैं।

छत्तीसगढ़ लोक–कला का भी गढ़ है। यहाँ खेत–खार, पर्वत नदियाँ, वन–उपवन सब गाते हैं–

गेहूँ गाए गीत खेत में
और बाजरा झूमे नाचे
चना बजाता घुँघरु छन–छन
और मूँग ज्यों कविता बाँचे,
लोक गीत की कड़ी–कड़ी में
जीवन का सरगम सजता है
लोक कला का जादू ऐसा
कदम–कदम बंधन लगता है

लोक कला के इन जादूगरों का लंबा इतिहास है किन्तु आज भी छत्तीसगढ़ में ऐसे सैकड़ों कलाकार हैं जिन्होंने देश के कोने–कोने में ओर विदेशों में भी अपनी छाप रख छोड़ी है। लोक कला के अंतर्गत कुछ प्रतिनिधि लोक गीतों, लोक कथाओं, लोक नाट्यों एवं लोक नृत्यों की चर्चा संभव है।

झूमते–झुमाते लोक गीत गाए जाते हैं। किसी भी अंचल के लोक गीतों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का आधिपत्य रहता है। छत्तीसगढ़ में भी यही स्थिति है किन्तु जो बात छत्तीसगढ़ी लोक गीतों को अन्य भारतीय लोक गीतों से अधिक विशिष्ट बनाती है, वह है 'धुनों की विविधता'। ददरिया, सुवा, गौरा, भोजली, जँवारा, बिहाव, और भजन प्रमुख लोक गीत हैं।

'ददरिया श्रृंगार गीत है।
संझा के बेरा तरोई फूले रे
तोर चिमटी भर कनिहा तोहीं ल खुले रे

अर्थात शाम के समय तरोई का फूल खिलता है। एक चिमटी में समा जाने वाली तुम्हारी पतली कमर तुम्हारे व्यक्तिव को ओर अधिक निखार देती है।

इस गीत में सवाल–जवाब भी चलता है खेत में या तालाब–नदी के पास में बैठे हुए किसी नायक ने ददरिया का एक पद गा दिया और दूसरी और से भी किसी ने उसका जवाब दे दिया तो स्पर्धा शुरू हो गई। यह सिलसिला काफी लंबा चलता है और आसपास छिटके हुए श्रोता इस प्रतिस्पर्धा का आनंद लेते हैं। लोक कला में आशु–कवित्व भी है और ददरिया उसका उदाहरण है।

'सुआ गीत' में महिलाएँ बाँस की टोकनी में भरे धान के ऊपर 'सुआ' अर्थात तोते की प्रतिमा रख देती हैं और उसके चारों ओर वृत्ताकार स्थिति में नाचती–गाती हैं। 'सुवा' को छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में कबीर के 'हंसा' की तरह आत्मा का प्रतीक माना गया है।

सेमी के मड़ पर कुंदरवा के झूल वो
जेही तरी गोरी कूटे धान ए
एदे धान ए सिया रे मोर

जेही तरी गोरी कूटे धान ए
कहाँ रहिथस तुलसी अउ
कहाँ रहिथस राम वो
जेही तरी गोरी कूटे धान ए
चँवरा रहिथस तुलसी
मंदिर रहिथस राम वो
जेही तरी गोरी कूटे धान ए

श्रीमती अमृता और श्रीमती कुलवंतिन का नाम सुवा गीत की अच्छी गायिकाओं में आता है।

दीपावली के समय कार्तिक अमावस्या की रात को गौरी (पार्वती) की पूजा होती है। गोंड़ जाति की महिलाएँ इस अवसर पर जो गीत गाती हैं, वे 'गौरा गीत' कहलाते हैं। छोटे पदों में किन्तु बड़ी ऊर्जा से भरे इन गीतों में श्रोताओं को भी झुमा देने की ताकत है। रात भर की पूजा अर्चना के बाद प्रातः विसर्जन के समय इन गीतों के भाव में करुणा आ जाती है और देवी को अगले वर्ष फिर आने का निमंत्रण देती हुई महिलाओं की आँखें आँसू से नम हो जाती हैं। ममता चंद्राकर, साधना यादव, अनुराग ठाकुर, कविता वासनिक आदि के स्वर में गौरा गीत बहुत अच्छे लगते हैं।

'जँवारा' भी शक्ति की आराधना हैं । नवरात्रि के पर्व में गेहूँ के उगे हुए अंकुर के माध्यम से शक्ति स्वरूपा प्रकृति पूरे गाँव को बल देती है।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोक गीत गायक लाला फूलचन्द श्रीवास्तव, भैयालाल हैड़ाउ, बैतल राम साहू, पंचराम मिरझा, केदार यादव, नर्मदा प्रसाद वैष्णव, कोदूराम वर्मा, शिव कुमार तिवारी, शेख हुसैन और प्रकाश देवांगन हैं।

सुग्घर–सुग्घर कथा सुग्घर सुग्घर कहिनी

सुन लेहू भइया, सुन लेहू बहिनी

'लोक–गाथा' बड़ी कहानियां हैं। छत्तीसगढ़ में प्रचलित लोक–कथाओं में ढोला–मारू, सोन सागर, दसमत कइना, भरथरी, आल्हा, पंडवानी, देवारगीत, बाँसगीत, चँदैनी, लोरिक चंदा आदि प्रमुख है।

लोक गाथा गायिकाओं में इस समय श्रीमती तीजन बाई और श्रीमती सुरूज बाई खांडे के नाम उभर कर आए हैं। सुरूज बाई बिलासपुर की रहने वाली है और ढोला भरथरी तथा चंदैनी गाती हैं। एकल स्वर में भी समाँ बाँध देने वाली यह गायिका अपनी विधा के लिए अगल से पहचानी जाती है। रूस में हुए भारत महोत्सव में भी उन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन किया था ।

लोक–गाथा का विशाल भंडार 'देवार गीत' में मिलता है। देवार एक घुमन्तू जाति है। इसका पूरा परिवार कलाकार होता है। केवल 'रूंजू' (एकतारा) बजाकर ही सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देने वाला देवार अपनी शैली और धुन के कारण पहचाना जाता है।

मार दिस पानी, बिछलगे बाट

ठमकत केंवटिन चलिस बाजार

केंवटिन गिरगे माड़ी के भार

केंवट उठाए नगडेना के भार

देवार जाति की महिलाएँ प्रायः गाती और नाचती हैं। नाचने की कला में वे इतनी प्रवीण होती है कि लोक नृत्य में 'देवरनिन नाच' एक विधा हो गई है। देवार जाति के कलाकारों में मनहरण, कौशल, गणेश, बरतनिन बाई, किस्मत बाई, फिदा बाई, पद्मा आदि प्रमुख है।

'पंडवानी' पांडवों की कथा है। झाडूराम देवांगन पंडवानी के शीर्षस्थ कलाकार थे। उन्हें मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान प्राप्त था। विदेशों में भी अनेक कार्यक्रम हुए हैं। उनके शिष्यों की बहुत बड़ी संख्या है, जिनमें से पूनाराम निषाद को संगीत अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। श्रीमती तीजनबाई कापालिक शैली की पंडवानी गायिका हैं और उन्हें पद्मभूषण का अलंकरण प्राप्त है। रेवाराम, लक्ष्मी बाई, सामेशास्त्री देवी आदि सिद्ध हस्त पंडवानी गायक, गायिकाओं की श्रेणी में रितु वर्मा भी उभर कर आई है। पंडवानी का एक उदाहरण है –

रथ ला हाँकत हे भगवान

कूकुर लुँहगी, साँप सलगनी

हाथी हदबद, गदहा गदबद

सैना करिस पयान

रथ ला हाँकत हे भगवान

लोक नाट्य का कलेवर, व्यंग्य का तेवर

छत्तीसगढ़ के लोक नाट्य में प्रमुख है – नाचा, चन्दैनी और रहस। 'नाचा' अत्यन्त सशक्त विधा है और लोक प्रिय भी। इसमें पुरुष ही महिला के वेश में 'परी' बनकर गाते और नाचते हैं। दो चार नाच के बाद गम्मत या प्रहसन होता है जिसमें 'जोक्कड़' (जोकर या विदूषक) के अतिरिक्त कुछ अन्य पात्र प्रहसन पेश करते हैं। गम्मत या प्रहसन में अत्यन्त तीखा व्यंग्य होता है किन्तु उसका समापन किसी अच्छे आदर्श को इंगित करता है। नाचा और गम्मत दोनों को मिलाकर 'नाचा' कहा जाता है। नाचा रात भर चलता है और सबेरे 'करमा' के साथ समाप्त होता है। स्व. मँदराजी दाऊ नाचा के बहुत बड़े कलाकार थे। आज से 60 वर्ष पहले बोड़रा, रिंगनी और रवेली की नाचा पार्टी प्रसिद्ध मानी जाती थी। बाद में रिंगनी, रवेली पार्टी एक हो गई। लालूराम और मदन लाल इस पार्टी के सशक्त कलाकार थे जिनके नाम से लोग टूट पड़ते थे । लालू राम ने हबीब तनवीर के निर्देशन में तैयार 'चरणदास चोर' में चरणदास की अविस्मरणीय भूमिका निभाई और विदेशों में भी ख्याति अर्जित की। फिल्म 'मेसी साहब' में उसकी छोटी सी भूमिका भी प्रभावकारी है। नया थियेटर दिल्ली के एक नाट्य में मद्रासी पंडित का जीवंत रोल करने का 'करेंट' ने उसका चित्र छापते हुए टिप्पणी की थी कि Hindi Stage has yet to find lalu Ram अर्थात हिंदी रंग मंच पर अभी लालूराम पैदा नहीं हुआ है। भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा आयोजित भारत प्रसिद्ध 'छत्तीसगढ़ लोक कला महोत्सव' में इस लोक कलाकार का अभिनंदन किया गया था।

मध्यप्रदेश शासन ने लोक नाट्य के पाँच छत्तीसगढ़ी कलाकारों मदन लाल, भुलवाराम, गोबिन्द राम, देवीराम और फिदा बाई को 'तुलसी सम्मान' प्रदान किया था।

'चँदैनी' लोक नाट्य में लोरिक और चंदा की प्रणय गाथा प्रस्तुत की जाती है। वस्तुतः, चंदैनी अब लोक नाट्य की एक ऐसी शैली हो गई है जिसमें कलाकारों की संख्या कम होती है और एक कलाकार अनेक पात्रों का अभिनय कर लेता है। रामाधार, सुखचंद और लतेलराम इस फन में माहिर कलाकार हैं। रामाधार साहू असाधारण प्रतिभा के धनी है और मंच पर इतनी अभिव्यक्तियाँ एक साथ दे देता है कि कभी–कभी बौद्धिक दर्शक भी उसके साथ चलने में अपने को असमर्थ पाते हैं।

बस्तर का 'भतरानाट' और बिलासपुर का 'रहस' भी लोक नाट्य हैं। 'रहस' वस्तुतः रास है तथा कृष्ण की रासलीला का ही प्रदर्शन है।

लोक नृत्य माँदर की थाप पर थिरकते पाँव

वैसे तो अधिकांश लोक गीत, लोक गाथा और लोक नाट्य में लोक नृत्य का भी थोड़ा बहुत पुट रहता है किन्तु नृत्य प्रधान होने के कारण जिन लोक कथाओं को नोक नृत्य की श्रेणी में रखा जा सकता है, उनमें प्रमुख है– पंथी, रावत, नाच, गेंड़ी, डंडा नाच, देवारिन नाच और आदिवासी नृत्य।

'पंथी' सतनामी संप्रदाय के भक्तों द्वारा अपने गुरु घासीदास तथा उनके बताए सत्य की महिमा को रेखांकित करके गाया जाने वाला भाव–प्रवण नृत्य है–

इतना के बिरिया में कोन देव ला वो

मैं तो बंदत हवँव दीदी, जय सतनाम

मैं तो बंदत हवँव भइया, जय सतनाम

पंथी इतनी तेजी से नाचा जाता है कि पंजाब के भाँगड़ा के समान गिने–चुने लोक नृत्य ही इसकी तुलना में रखे जा सकते हैं। माँदर और झाँझ केवल दो वाद्य इस नृत्य में पूरे वातावरण को झकझोर देते हैं। देवदास की पंथी पार्टी का नाम किसी समय शिखर पर था। बुधारू इस पार्टी का माँदर–वादक है और अपनी कोई सानी नहीं रखता। देवदास की पार्टी ने विदेशों में भी खूब ख्याति अर्जित की। नृत्य की तेज गति से आश्चर्य –चकित होकर विदेशियों ने ध्यान चंद और ज्ञान चंद की हॉकी स्टिक की तरह देवदास के पैरों का भी परीक्षण किया। राधेश्याम, लतमार दास, पुरानिक लाल चेलक और अमृता बाई भी इस विधा के सशक्त कलाकार हैं। देवदास के निधन से पंथी लोक कला की बहुत बड़ी क्षति हुई है।

मुख्यतः मवेशी चराने का पेशा करने वाली राउत जाति का 'राउत नाचा' दीपावली के समय होता है। कुल देवता की आराधना करने के बाद हर रावत अपने घर से 'काछन' निकालता है। उस समय उसके पास अपार शक्ति होती है। मस्ती में अपने घर के ही छप्पर छानी को तोड़ते हुए निकलने वाला रावत अपनी लाठी से समस्त रावतों पर अकेले ही प्रहार करता है। उसके प्रहार को रोकने के लिए लगभग 30–40 राउत वहाँ एकत्र रहते हैं। जब उन्मादी राउत लाठी चलाते–चलाते थक जाता है, तब जमीन में लेट जाता है। देवता को धूप और नारियल भेंट करने के बाद वह स्वस्थ होता है और अपने दल में शामिल होकर घर से बाहर नाचने के लिए निकल जाता है। एक राउत दोहा है–

गोहड़ी चराएँव, बड दुःख पाएँव, मन अब्बड़ झुंझवाय

बरदी चराएँवं बढ़ सुख पाएँव, गंजर के दुहेंव गाय

छत्तीसगढ़ में त्यौहारों का सत्र वर्षा ऋतु में हरेली (हरियाली) से प्रारंभ होता है। हल, कुदाली, फावड़ा आदि कृषि औजारों की पूजा की जाती है। इस अवसर पर 'गेंड़ी' भी बनाई जाती है । लगभग 8 फीट लम्बे बाँस में जमीन से लगभग 3 फीट की ऊँचाई पर बाँस का ही पायदान बनाया जाता है। इस तरह गेंडी तैयार होती है जिस पर चढ़कर नाचा जाता है। गेंड़ी के पायदान को नारियल की रस्सी से बाँधने तथा उसमें मिट्टी तेल डालकर धूप में सुखाने से होने वाली चर्र मर्र की आवाज अन्य वाद्यों के साथ मिलकर अद्भुत संगीत पैदा करती है। समूह में नाचने पर गेंड़ी नृत्य की छटा देखने लायक होती है।

'आदिवासी नृत्य' छत्तीसगढ़ की लोक कला का महासागर है। जन जातियों की बहुलता वाले क्षेत्र में सैकड़ों तरह के आदिवासी नृत्य प्रचलित हैं। माँदर की धुन पर नाचने वाले ये आदिवासी अपने खुलेपन के लिए मशहूर हैं। युवक और युवतियाँ समान रूप से अधिकांश नृत्यों में एक साथ नाचते हैं। उनके पैरों का प्रक्षेपण इतना सधा हुआ और संतुलित रहता है कि लगता है किसी ने रस्सी या स्केल से बाँध दिया हो। आदिवासी अंचलों के कुछ नृत्य बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे –

बस्तर में गौर, ककसार, चेहरे, दीवाड़, माओ, डोली और डिटोंग। सरगुजा में सैला, जशपुर में सकल, मानपुर में हुल्की, चोली और माँदरी। देवभोग में लरिया। प्रायः सभी आदिवासी नृत्य किसी सामाजिक या धार्मिक परंपरा का निर्वाह करते हैं। 'करमा' गोंड़ और देवार जाति का प्रमुख नृत्य है किन्तु यह हर आदिवासी अंचल में अलग–अलग शैली में नाचा और गाया जाता है। मूलतः करम राजा और करमा रानी को प्रसन्न करने के लिए जन जाति के लोग करमा नाचते है किन्तु कालांतर में ददरिया के साथ जुड़कर वह श्रृंगारमय भी हो गया। गोलार्ध पर नाचते हुए युवक–युवतियों का दल माँदर की मस्ती में झूम–झूम कर नाचता है और जब अपने साथी के पाँव के अँगूठे को छूने की स्थिति में आ जाता है, तब 'करमा' सिद्ध होता है। एक करमा गीत के बोल हैं–

होइरे होइरे तोला जाना पड़े रे

कटंगी बजार के पीपर तरी रे

दार राँधे, भात राँधे, लिक्कड़ म खोए

चार पइसा के जुगजुगी दुनिया ल मोहे

तोला जाना पड़े रे

हमारी संस्कृति मूलतः लोक संस्कृति है। लोक कला उसका एक अंग है। शरीर की पुष्टि के लिए अंगों का पुष्ट होना अनिवार्य है अतः लोककला की अजरता–अमरता लोकसंस्कृति की अजरता–अमरता है।

शब्दार्थ

मड़वा – मंडप; **माड़ी** – घुटना; **सुग्घर** – सुंदर; **बरदी** – गौ वंशों का झुंड; **गदबद** – तेज गति से दौड़ना; **बिछलगे** – फिसल गए; **पयान** – प्रस्थान; **गौहड़ी** – गौ वंशों का बड़ा समूह जो प्रायः जंगल में रहते हैं; **बगडेना** – बाँह; **झुझवाना** – अप्रसन्न होना; **गिंजरफिर** – घूमकर; **जुगजुगी दुनिया** – जगमगाती दुनिया; **लिक्कड़** – लकड़ी।

अभ्यास

पाठ से

1. मनुष्य का सम्पूर्ण चिंतन, दर्शन और राग विराग लोककला में सन्निहित क्यों है?
2. 'तुरतुरिया' नामक स्थान क्यों प्रसिद्ध है?
3. छत्तीसगढ़ी लोक गीत को अन्य भारतीय लोक गीतों से अधिक विशिष्ट क्यों माना जाता है?
4. छत्तीसगढ़ी के प्रमुख लोक गीत गायकों के नाम लिखिए ।
5. 'नाचा विधा'' को संक्षेप में समझाइए।
6. किन–किन लोक कलाओं को लोक नृत्य की श्रेणी में रखा जा सकता है?
7. आदिवासी अंचलों में प्रसिद्ध नृत्य कौन–कौन से हैं?

पाठ से आगे

1. महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित ग्रंथ का नाम लिखकर आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार आश्रमों का उल्लेख कीजिए।
2. शक्ति की आराधना ''जँवारा'' का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
3. आशु कवित्व से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
4. ''सुआ (गीत)'' नृत्य के समय टोकनी में भरे धान के ऊपर सुआ रखने का क्या अर्थ है?
5. पद्‌मभूषण तीजनबाई को पंडवानी की ''कापालिक शैली'' की गायिका कहा जाता है। इस शैली का आशय स्पष्ट करते हुए पंडवानी की अन्य शैलियों का उल्लेख कीजिए।
6. हरियाली पर्व के समय कृषि उपकरणों की पूजा अर्चना करने एवं बैगा द्वारा दरवाजे पर नीम की डँगाल खोंचने का आशय क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

भाषा के बारे में

1. निम्नलिखित श्रुति सम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए—

कला	काला
किला	कीला
पवन	पावन
आशु	आँसू
विधा	विद्या
देवार	देव
प्रतिभा	प्रतिमा
पंथी	पंछी
हंसा	हँसा
गौरी	गोरी

FJH487

2. निम्नांकित शब्द समूहों का प्रयोग पाठ में किन परिस्थितियों में किया गया है—

आँखें नम होना, केश खोलकर झूमना, परी बन के नाचना, वृत्ताकार स्थिति में नाचना

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ के छत्तीस किलों (दुर्ग) के नाम ढूँढ़कर लिखिए।
2. अपने अंचल के लोकगीत या लोकनृत्य का उल्लेख कीजिए।
3. गम्मत में हास्य व्यंग्य के माध्यम से संदेश दिया जाता है। आप अपने आस–पास के लोगों से पूछकर ऐसे किसी प्रसंग का वर्णन कीजिए।
4. छत्तीसगढ़ी लोक कला को वैश्विक मंच पर स्थापित करने में 'हबीब तनवीर' के समूह का बड़ा योगदान रहा है। उनकी प्रस्तुति के संबंध में अपने शिक्षक से पूछकर लिखिए।
5. आपके क्षेत्र में दीपावली पर्व किस तरह मनाया जाता है? इस पर एक निबंध लिखिए।
6. राउत नाचा में प्रयुक्त होने वाले कुछ दोहों का संकलन कीजिए।

FJQZ9U

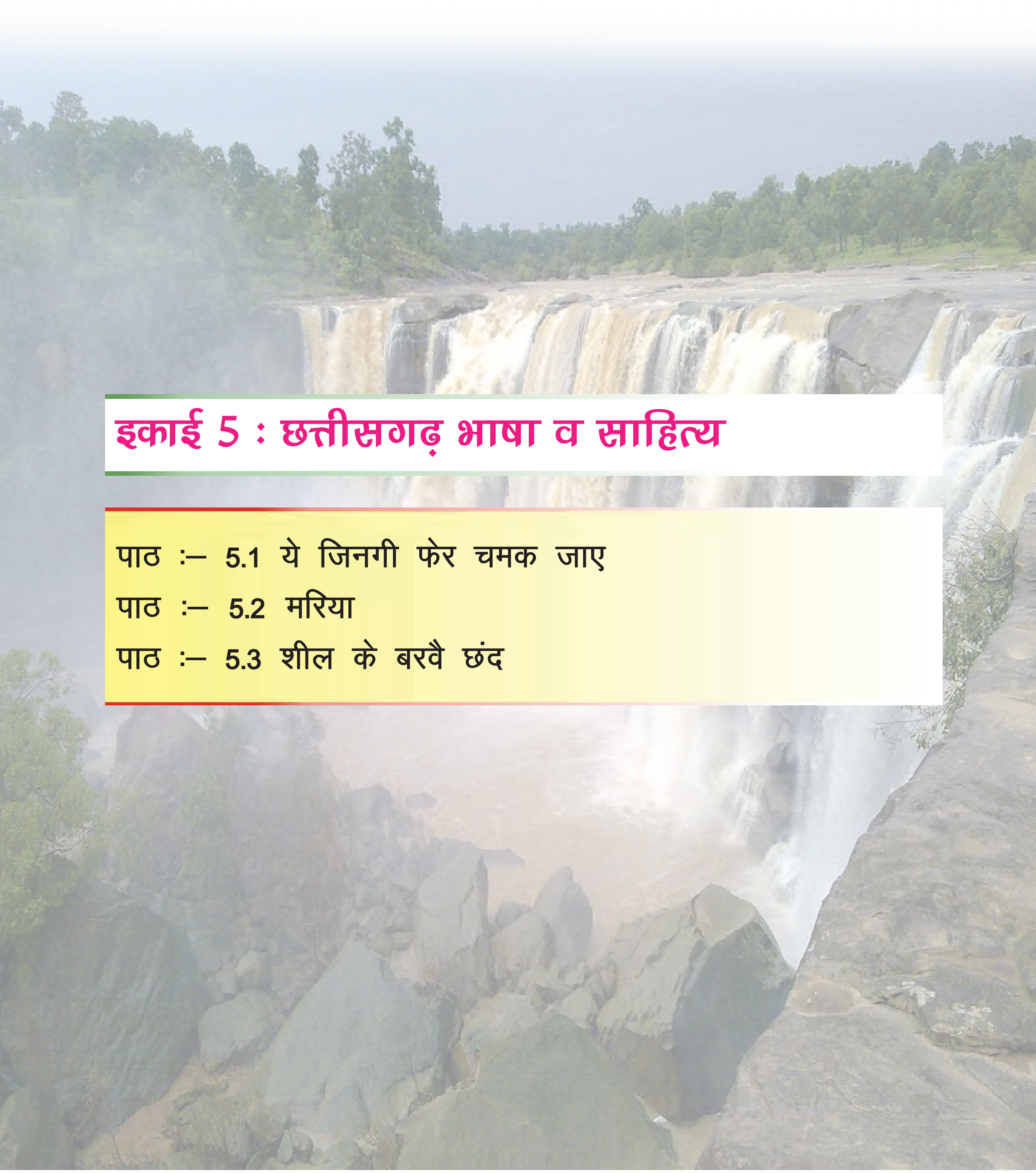

इकाई 5 : छत्तीसगढ़ भाषा व साहित्य

पाठ :– 5.1 ये जिनगी फेर चमक जाए

पाठ :– 5.2 मरिया

पाठ :– 5.3 शील के बरवै छंद

इकाई

5 छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य

भगवती लाल सेन

छत्तीसगढ़ का वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक परिवेश अपनी अलग ही छवि प्रस्तुत करता है। यहाँ की लोक कलाएँ, लोक संस्कृति और लोक परम्पराओं से समृद्ध जीवन जीते हुए अपनी मुस्कान बिखेरने वाले स्वाभिमानी और आत्मविश्वासी छत्तीसगढ़ी मनखे की एक अलग ही छवि और छाप हर मन में उभरती है। छत्तीसगढ़ की भाषा, साहित्य, कलाओं और लोक परम्पराओं की विशिष्टताओं से परिचित कराकर उनके प्रति सराहना का भाव बच्चों में विकसित करना इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है। छत्तीसगढ़ी की अपनी मिठास और कथन भंगिमाओं से विद्यार्थी परिचित होंगे और अपने भाव तथा अनुभव के साथ साहित्य की इन विधाओं से जुड़ भी पाएँगे।

इस इकाई में शामिल पद्य पाठ 'ये जिनगी फेर चमक जाए' हमें नकारात्मक भावों को त्याग कर सकारात्मकता को अपनाने का बीज हमारे मनोभावों में रोपित करता है। पाठ में बेहतर जीवन जीने के सूत्र छिपे हुए नजर आते हैं।

कहानी 'मरिया' को इस इकाई के दूसरे पाठ के रूप में सम्मिलित किया गया है। कहानी में मृत्युभोज की परंपरा के औचित्य पर प्रश्न उठा कर इसे समाप्त करने की प्रेरणा को प्रोत्साहित किया गया है। इस तरह की रुढ़ परम्पराएँ व्यक्ति को हानि पहुँचाकर समाज को प्रगति की राह से पीछे ढकेलने का काम करती हैं और आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति को अधिक संकटग्रस्त बनाती हैं। कहानी इसी निष्कर्ष को हमारे सामने रखती हुई नजर आती है।

इस इकाई का पाठ तीन 'शील के बरवै छंद' छत्तीसगढ़ी के चर्चित कवि शेषनाथ शर्मा 'शील' द्वारा 'बरवै छंद' में रचित पाठ है । विद्यार्थी इस पाठ के द्वारा एक नए छंद और उसकी विशिष्टताओं से परिचित होंगे। भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रचलित इस छंद में स्त्री के मनोभावों, विशेष रूप से विवाह के पश्चात विदाई के अवसर पर, ससुराल में रहकर मायके की मधुर स्मृतियों में डूबने और मायके पहुँचकर ससुराल को याद करने का श्रृंगारिक चित्रण है। छंद की भाषा और लयात्मकता से परिचित होकर बच्चे नारी मन की कोमल संवेदनाओं से जुड़ सकें इस तरह का प्रयास इस पाठ में है ।

यह इकाई छतीसगढ़ी भाषा और साहित्य की भावगत विशिष्टताओं से परिचित कराते हुए साहित्यिक सरोकारों और मधुरता का आस्वाद कराती है ।

पाठ – 5.1

ये जिनगी फेर चमक जाए

भगवती लाल सेन

जीवन परिचय

छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय कवि भगवती लाल सेन का जन्म 1930 में धमतरी जिले के देमार गाँव में हुआ था। उनकी कविताएँ किसान, मजदूर और उपेक्षित लोगों के बारे में है। सेन एक प्रगतिशील कवि थे, जिनकी कविताओं में आज के जीवन की विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार किए गए हैं और मानवीय अनुभूतियों के प्रति गहरी संवेदनशीलता भी दिखाई पड़ती है। उनकी छत्तीसगढ़ी रचनाओं में कविताओं के दो संकलन पहला–'नदिया मरै पियास' और दूसरा 'देख रे आंखी, सुन रे कान' प्रसिद्ध हैं। उनकी कविताएँ और उनके गीत एक सच्चे इन्सान की देन हैं जो न जाने कितने लोगों को सच्चाई जानने के लिए प्रेरित करती है। 51 वर्ष की अवस्था में इस जन पक्षधर कवि का 1981 में निधन हो गया।

FJZVBH

कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।
झन बैर भाव खेती म कर, मन के भुसभुस निकार फेंकौ

हाँसौ–गोठियावौ जुरमिल के, सुन्ता के रद्दा झन छेकौ।
गोठियइया घलो ललक जाए, सुनवइया सबो गदक जाए।।1।।

जिनगी भर हे रोना–धोना, लिखे कपार लूना बोना।
जाना है दुनिया ले सबला, काबर करथस जादू टोना।
हुरहा मन मिले झझक जाए हँडिया कस भात फदक जाए ।।2।।

मुँह घुघवा असन फुलोवौ झन, कोइली अस कुहकौ बगिया म
चंदा अस मन सुरुज कस तन, जिनगी महके फुल बगिया म
भेंटौ तो हाथ लपक जाए, गुँगुवावत मया भभक जाए।।3।।

भुइँया के पीरा ल समझौ धरती के हीरा ल समझौ
काबर अगास ल नापत हौ, मीरा के पीरा ल समझौ
कोरा के लाल ललक जाए, बिसरे मन मया छलक जाए ।।4।।

जुग तोर बाट ल जोहत हे, पल छिन दिन माला पोंहत हे
अमरित बन चुहे पसीना तोर, मेहनत दुनिया ल मोहत हे
अँगना म खुसी ठमक जाए, सोनहा संसार दमक जाए,
कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।।5।।

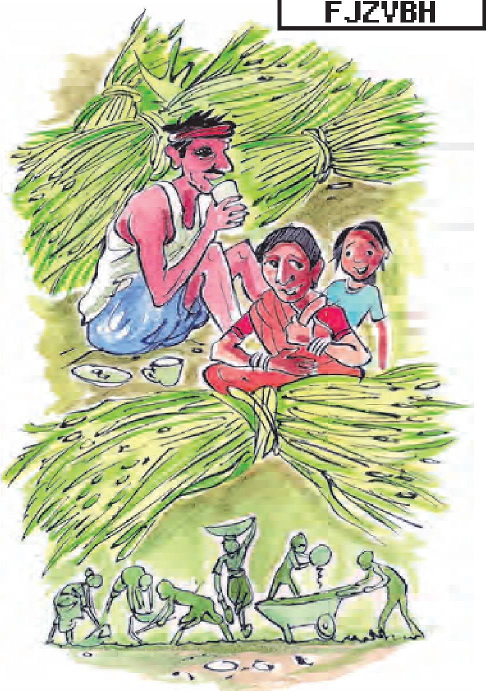

शब्दार्थ

कोठी – धान रखने की कोठरी; **भुसभुस** – शंका; **गोठियाना** – बात करना; **गदक** – प्रसन्न; **कपार** – मस्तिष्क, मस्तक; **लूना** – फसल काटना; **झझक** – डरना; **हुरहा** – अचानक; **हंडिया** – हंडी; **घुघुवा** – उल्लू (पक्षी); **गुँगुवाना** – सुलगना; **भभकना** – एकाएक आग भड़कना; **पीरा** – दर्द; **बिसरे** – भूले; **बाट** – रास्ता; **जोहत** – प्रतीक्षा करना; **माला पोहना** – माला गूँथना; **अमरित** – अमृत।

अभ्यास

पाठ से

1 "कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

2 "मुँह घुघुवा असन फुलोवौ झन" ऐसा क्यों कहा गया है?

3 सुंता (सुमति) से रहने से क्या लाभ होता है? लिखिए।

4 बगिया में कोइली जैसा कुहकने के लिए क्यों कहा जा रहा है?

5 "गुँगुवावत मया भभक जाए" पंक्ति में खुलकर स्नेह प्रकट करने को कहा गया है।" इस कथन का क्या उद्देश्य है?

6 पसीने की अमृत से तुलना क्यों की गई है? समझाइए।

पाठ से आगे

FK9RD5

1 "जाना है दुनिया ले सबला" पंक्ति का भाव–विस्तार कीजिए।

2 "भुइँया के पीरा" से कवि का क्या आशय है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

3 "धरती के हीरा" से आप क्या समझते हैं? अपने विचार प्रकट कीजिए।

4 मेहनतकश को दुनिया क्यों पसंद करती है?

5 "काबर अगास ला नापत हौ" पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

6 "जिनगी भर हे रोना धोना" आप इस कथन से सहमत या असहमत होने का तर्क प्रस्तुत कीजिए।

भाषा के बारे में

FKIHES

1. पाठ में आए हुए छत्तीसगढ़ी की विभक्तियों एवं संबंध सूचक अव्ययों को छाँटकर लिखिए एवं उनका हिन्दी में भाषांतर कीजिए

उदाहरण– म – में कस – जैसा

2. ''चंदा अस मन सुरुज कस तन'' में कौन सा अलंकार है? पहचान कर उसकी परिभाषा लिखिए।

3. मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तिहारे आऊँ।

हे पावन परमेश्वर मेरे मन ही मन शरमाऊँ।।

उपरोक्त भजन की पंक्तियों में मनुष्य इस संसार में आकर छल, प्रपंच, काम–क्रोध, लोभ, मोह में फँसकर अपनी काया के कलुषित होने से जनित आत्म अपराध बोध के भाव से है। वह इस मैली काया के साथ ईश्वर के मंदिर में प्रवेश करने से स्वयं ही शर्मिंदा हो रहा है। इस तरह के भाव प्रायः शांत रस के अन्तर्गत देखे जा सकते हैं। कविता 'ये जिनगी फेर चमक जाए' में भी जीवन के प्रति असारता /निःसारता के भाव विद्यमान है।

क. कविता पढ़कर उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिसमें ये भाव देखे जा सकते हैं।

ख. इस कविता के अतिरिक्त शांत रस की अन्य कविताओं को भी ढूँढ़ कर लिखिए।

4. पूर्व में आपने अभिधा और लक्षणा शक्ति को पढ़ा एवं जाना है। अब निम्न वाक्य को ध्यान से पढ़िये –''सुबह के 8 बज गए हैं।''

इस वाक्य का प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न–भिन्न अर्थ होगा :–

जैसे– एक आदमी जो रात में पहरेदारी करता है उसकी छुट्टी के समय से है, कार्यालय जाने वाले व्यक्ति के लिए कार्यालय जाने की तैयारी से है, गृहिणी इसका अर्थ गृह कार्य से जोड़कर देखेगी, बच्चों के लिए इसका अर्थ विद्यालय जाने की तैयारी से है एवं पुजारी इसे पूजा–पाठ से जोड़कर देखेगा।

इस प्रकार जहाँ वाक्य तो साधारण होता है लेकिन उसका अर्थ प्रत्येक पाठक या श्रोता के लिए अलग–अलग या भिन्न–भिन्न होता है, इसे ही व्यंजना शक्ति कहते है एवं इससे उत्पन्न भाव को व्यग्यार्थ कहा जाता है।

योग्यता विस्तार

FKSIGF

1. फसल कटाई के दौरान कृषक की दिनचर्या का वर्णन कीजिए।

2. कृषि एवं कृषक जीवन से संबंधित कोई अन्य कविता का संकलन कीजिए।

3. हिन्दी साहित्य में नौ रस माने गए हैं। यथा–श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भूत, शांत। यद्यपि प्राचीन रस सिद्धांत में 'वात्सल्य' की गणना रसों के अन्तर्गत नहीं की गई हैं, किन्तु सूरदास के पश्चात् इसे भी रस माना गया। इस प्रकार अब रसों की संख्या बढ़कर दस हो गई है।

शिक्षक की सहायता से सभी रसों के उदाहरणों को ढूँढ़कर पढ़िए एवं समझने का प्रयास कीजिए।

पाठ — 5.2

FL2EI3

मरिया

डॉ. परदेशी राम वर्मा

जीवन परिचय

डॉ. परदेशी राम वर्मा जी का जन्म 18 जुलाई, 1947 को भिलाई इस्पात संयंत्र के करीबी गाँव लिमतरा में हुआ। इन्होंने छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी में उपन्यास, कथा संग्रह, संस्मरण, नाटक एवं जीवनी आदि का लेखन किया है। छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी में नव साक्षरों के लिए भी पुस्तकें लिखी हैं। इनके द्वारा पंथी नर्तक स्व देवदास बंजारे पर लिखित पुस्तक 'आरूग फूल' को मध्यप्रदेश शासन द्वारा माधवराव सप्रे सम्मान प्राप्त है। इनका छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'आवा' पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में एम.ए. के पाठ्यक्रम में शामिल है। 2003 में इसी विश्वविद्यालय द्वारा इन्हें मानद डी.लिट की उपाधि प्रदान की गई। इनके लेखन में छत्तीसगढ़ी जनजीवन, लोक संस्कृति की दुर्लभ, मनोहारी और रोचक प्रस्तुति हुई है। वैविध्यपूर्ण लेखन के लिए प्रदेश और देश में इनकी विशिष्ट पहचान है। सम्प्रति स्वतंत्र लेखनरत।

संझौती जल्दी नाँगर ल ढील देकर बेटा – रामचरण अपन एकलौता पोसवा बेटा ला समझइस।

रामचरण के बाई मुच ले हाँस दिस। हाँसत देखि त ओकर बेटा सिकुमार पूछिस– काबर हाँसे दाई? ददा ह बने त किहिस। सँझौती जल्दी ढील दे नाँगर ल काहब म हाँसी काबर आईस भई?

दाई किहिस – देख बेटा, तोरो अब लोग–लइका होगे। तोर उम्मर बाढ़ गे फेर तोर ददा के मया ल मैं देखथँव ग। ददा बर लइका ह जनमभर लइके रिथे रे। तेमा एक ठन बेटा। एक बेटा अउ एक आँखी के गजब मया ग। डोकरा के मया ल देखेंव त हाँस परेंव।

अभी ये गोठ–बात चलते रिहिस। डोकरा उठिस खटिया ले अउ दम्म ले गिर गे। एक ठन गोड़ लझम पर गे। डोकरा ल देख के दाई चिचअइस – सिकुमार दउड़ त बेटा, लथरे अस करथ हे गा। सिकुमार दउड़ के अइस। ददा के एक पाँव, एक हाथ झूल गे। ददा मचिया म एकंगी परे रहिगे। देखो–देखो होगे।

चरणदास बइद ल बलइन। रमेसर मंडल आगे। मनराखन चोंगी पियत खखारत अइस। जे मुँह ते बात लोकवा तो होगे रे सिकुमार, बइद ह बतइस।

मनराखन किहिस– ओकरे सेती मंय किथँव चार सावन सम्मारी जरूरी हे सवनाही नई मनावन। किसानी करबो काहस रे सिकुमार। देख डोकरा ल का होगे। धरम–करम ल बंठाधार करे मे रे बाबू बिपत आथे जी।

रमेसर मंडल किहिस– ये ला चरौदा अस्पताल लेगव जी। जल्दी करव, रामू रोसियागे, किहिस– का चरौदा अस्पताल जाही। मर गेव तुम अंगरेजी दवा के मारे। जाही डोकर हा बघेरा। गोली खाही अउ तेल लगाही तहाँ देख कुदल्ला मारही।

अंकलहा खिसियागे, किहिस– देखो जी, जतर–कतर बात झन करव। कथे –चढ़ौ तिवारी चढ़ौ पाण्डे, घोड़वा गइस पराय। तउन हाल झन होय। अरे ददा जहाँ लेगना हे लेगव। फेर थोरूक सिकुमार ल पूछ लव। सिकुमार ल पूछे के नवबदे नइ अइस। डोकरा के छोटे भाई बल्दू हा किहिस– देखव जी, सब बात के एकै ठन। हम तो सुक्खा सनाथन। घर म भुँजी भाँग नहीं अउ ....

ओकर बात ल काट के अंकलहा किहिस – देख बल्दू घर में राहय ते झन राहयख सेवा करे बर परही। लेगव येला जल्दी।

मचोली में एकंगू सुते–सुते डोकरा कॉंखिस। किहिस– देखव जी, अब मय जादा दिन के सगा नोहँव। इही गाँव में जनमेंव। इहाँ खेलेंव–कूदेंव। इहें जवान होयेंव। इहें बूढ़ा गेंव अउ इहें बीमार हो गेंव। त भइया हो, इहें मरन दव मोला। मोर दसो अंगरी के विनय हे।

अइसे कहत डोकरा ह दुनों हाथ ल जोरे चाहिस, फेर हाथ ह उठय त लझम परगे रहय एक हाथ हा। डोकरा के आँसू निकलगे।

सिकुमार ल बइद हा दवा बता दिस, अउ किहिस तेलमालिस ज्यादा होय चाही बाबू, अउ सुन सँझौती लान लेबे कारी परेवा। करिया परेवा खवा अउ लहू म मालिस कर, देख फेर तोर ददा कइसे बने होही।

सब झन जइसने आय रिहिन तइसने चल दिन। सिकुमार भिड़गे सेवा करब म। एक पंदरही नई बीतिस डोकरा भगवान घर रेंग दिस।

दुब्बर बर दू असाढ़ होगे। एती खेती–खार फदके राहय। ओ डाहर डोकरा के कारज माड़ गे। गाँव म बइठना बलइन। सिकुमार अरजी करिस– हमर समाज म मरिया भात ल बंद करव किथें सब। महूँ ह विनती करत हँव भई। मरिया भात ल समाज बंगा छोड़ देतिस।

रमेसर मंडल सदा दिन के समाजिक मनखे। रखमखा के उठगे, किहिस देख रे सिकुमार समाज के कान्हून ल हमला झन बता रे बाबू। कान्हून ल हम जानथन। कान्हून हिरसिंग दिरखिन बारे ल सब हम पढ़े बइठे हन जी। करनी दिखय मरनी के बेर। मँय गाँव के पटेल मँय गाँव समाज के कुरहा। बाबू रे, तोर बाप ह जियतभर कान्हून बर ठठ्ठा मड़इस, अब मरे म झन ठठ्ठा कर। दे बर परही भात। सब घर फुदर–फुदर के खाय हव, अब खवाय बर परत हे त कान्हून ल गोहराहू रे।

सब झन रमेसर के संग दे दिन। सिकुमार हो गे अकेल्ला। भात देवर माने ल परगे।

घर डाहर आवत खानी रमेसर ल सुकालू किहिस– अच्छा जम्हेड़े भाँटो, बिछलत रिहिस बुजा ह।

बिछलत रिहिस बुजा ह। अब उड़ाबो–लडुवा– पपची डट के।

रमेसर ओकर पीठ म एक मुटका मारिस अउ हाँस के कहिस–उहाँ तो मुँह म लडुवा गोंजे रेहे रे। अउ अब पपची बर नियत गड़िया देस। तोर बर केहे हे रे बाबू, ''छिये बर, न कोड़े बर, धरे बर खोखला।''

हाना सुन–सुना के हाँसत मुचमुचावत सारा–भाँटो घर आ गे। सिकुमार के होगे जग अँधियार।

घर आके सिकुमार अपन दाई ल सब बतइस। दाई किहिस– पंच मन कुछु नइ किहिन रे। सिकुमार किहिस–दाई, सब किहिन तोर अँगना म खाबो, तिहि बहुत बड़ बात ये। पबरित करबो काहत हें।

दाई किहिस– बुड़ा के काहत हें नहकौनी दे। वाह रे जमाना। दुनिया कहाँ ले कहाँ आगे रे। हमरो उम्मर पहागे सब देखत देखत पढ़ई–लिखई बहुत होगे बाबू, फेर दुनिया उहें के उहें हे। अरे! जब समाज के बड़े मन रइपुर के अधिवेशन म तय कर दीन के मरिया के भात खववनी बंद करे चाही त बंद कर देबर चाही। फेर वाह रे मनुख जात। करे के आन, केहे के आन। नियम बनाये हें के नेवता खाय बर साते झन जाहीं, फेर जाथें सत्तर झन। मट–मटमट–मट। मोटर–गाड़ी से भरा के नेवता खाय बन जाथें। अब तो बाबू रे, माई लोगन घलो जात हें नेवता खाय बर। एसो बड़े मंगह पारा बिहाव होइस त टूरी मन नेवता खाय बन आगें। अउ बरात म जो टूरा मन नाचिन।

सब मंद मउहा पीये रथें, नाचबे करहीं। सिकुमार समझइस।

दाई किहिस'–मंदे मउहा त पीही रे बाबू। तोर बाबू त चल दिस। गजब बड़ नाचा के कलाकार ग। खुदे गीत बनावय। हमरे गाँव के समारू अउ रिखी जोक्कड़ राहँय। कुछु नई जमिस त तोर बाबू गीत बनइस ग.... रिखि राम सोच के काहत हे समारू ल

दूध–दही पीबोन भइया, नई पीयन दारू ल।

फेर होत हे उल्टा, दूध–दही नँदा गे। सब धर लिन दारू। दारू पी के पंचइती करथें। अउ मरिया के भात ल खाय बिन नइ राहन किथें। काहत–काहत दाई रो डारिस।

मरता क्या न करता। आखिर दो एक्कड़ खेत बेंचागे। खात–खवई म सिरागे रुपिया। खेत गय त बइला ला घलो बेच दिस सिकुमार, खेतिहर, किसान ले मजदूर होंगे। बनिहार होगे। रेडिया म गीत बाजय......

अब बनिहार मन किसान होगे रे,

हमर देस म बिहान होगे रे।

त सिकुमार रो डरय। ओ सोचय कोन जनी कहाँ के मजदूर किसान होगे। मँय तो किसान ले मजदूर होगेंव। बनिहार होगेंव।

ठलहा का करतिस, बनिहारी करे लागिस। एक दिन गाँव के चटरू भूखन ह ओला किहिस–सिुकुमार, पुलुस बनबे?

सिकुमार अकबकागे। पूछिस– कोन मोला पुलुस बनाही भाई? भूखन किहिस– करे करम के नागर ल भुतवा जोतय। तोर बर मौका हे। मँय रोज जाथंव भेलई। उहाँ हे रामनगीना सिंह। हमर दोस। ओकर पुलुस कंपनी हे। पाँच सौ रुपिया लागही। ओला देबे त ओ हा तोला पुलुस बना दिही। तँय तौ चौथी पास हस। धीरे–धीरे बने काम करबे त हवलदार हो जबे।

सिकुमार किहिस– कस जी, कइसे पाँच सौ म पुलुस बन जाहूँ। ठठ्ठा झन मड़ा रे भाई।

भूखन किहिस– तोला पेड़ गिनना हे ते आमा खाना हे जी। पुलुस के काम। ड्रेस पुलुस के। ठाठ के काम रिही। आजकल प्रावेट पुलुस हें। उही मन सब सुरच्छा के काम देखथें। आगू आ, आगू पा। किथें नहीं, आगम भँइसा पानी पीये, पीछू के पावय चिखला। अभी भरती चलत हे। काल तँय बता दे बाबू।

सिकुमार संसों म परगे। अपन बाई ल बतइस। बाई किहिस मोर सों साँटी बाँचे हे। ले जाव। बेच लव। तुम रइहू ते कतको साँटी आ जही।

सिकुमार किहिस– इही ले कहे गे रहे तन बन नइये लत्ता, जाय बर कलकत्ता। खाय बर घर म चाउँर नईये मैं पुलुस बने बन तोरे गोड़ के गहना उतारत हँव।

बाई किहिस– दुख सब उपर आथे। राजा नल पर बिपत परे तब भूँजे मछरी दाहरा म कुदगे। समे ताय सिकुमार बाई के बात ल मान गे। साँटी बेचागे। दूसर दिन भूखन संग गीस। रामनगीना संग ओला देख के किहिस– वाह जवान। खाने को बासी, मगर देखो शरीर। जबर जवान हे भाई। भरती कर लेते हैं भाई बाकी काम तगड़ा है, हिम्मत का है खेत नहीं जोतना है। दादागिरी का मुकाबला करना है। कर सकोगे न।

सिकुमार अपन काम के जगा म गीस। तोड़फोड करइया साहेब मन गाड़ी म बइठ गे रहय। सिकुमार पाछू के डाला म बइठगे। गाड़ी चल परिस। जाके नरवा तीर के एक गजब बड़ घर म गाड़ी रुक गे। साहेब मन अपन दल के तोड़ फोड़ वाला मन ल किहिस– धरव रे भइँस मन ल। चढ़ावव गाड़ी म । तोड़ दव सब खटाल ल।

अतका सुनना रिहिस के खटाल मालिक लउठी बेड़गा धर के आगे। लगिन गारी देय। अब सब साहेब गाड़ी म चढ़ गें। गाड़ी भर्र के भगा गे। बाँच गे सिकुमार। खटालवाला मन ओही ल पा परिन। गजब बजेड़िन अउ छोड दिन, मूडी कान फूट गे सिकुमार के। रोवत ललावत कइसनों करके अपने दफ्तर अइस। अपन साहेब रामनगीना ल किहिस– साहेब मार खवाय बर कहाँ भेज दे रहेव। गजब ठठाय हे ददा। देख लव।

रामनगीना किहिस– अरे घोंचू, तुम्हारी आज से छुट्टी। मार खाके आनेवाले का यहाँ क्या काम। जाओ अपने गाँव। भूल जाओ नौकरी।

सिकुमार किहिस– सरजी, आनके कारन मार खायेंव। दवा दारू बर कुछु देहू के नहीं।

अब रामनगीना गुसियागे। किहिस– भागता है कि नहीं, कि दूँ एकाद हाथ मैं भी। बड़े आये हैं दवा का पैसा मांगने। अरे जिनसे मार खाकर आया है उनसे मांग। हम क्यों देंगे?

ये तरा ले सिकुमार के छूट गे नौकरी। घर म ओकर महतारी अऊ घरवाली नइ बोलिन।

गाँव के हितु पिरितु सकलइन अउ किहिन– देखों जी बाहरी मनखे मन तोला कइसे मरवा दिन। तोला रोजी माँगे बर बाहरी मनखे करा नइ जाना रिहिस।

सिकुमार किहिस– देखो जी, कहावत है– भूख न चीन्हें जात कुजात, नींद न चीन्हें अवघट घाट। बाहरी हा तो हाड़ा गोड़ा टोरवा दिस अउ तूमन सदा दिन के संग के रहैया मन का कमती करेव। बाप के मरिया के भात नई छोड़ेव। मोर खेती बेचागे। में किसान ले मजदूर होगेंव।

गरीब बर सब के चलथे, घरवाला और बाहरी सब गरिबहा ल ठठाथे। अपन अउ बिरान सब भरम ताय। अब भइया हो अंते–तंते बात छोड़व। जउन होगे तउन होगे। जिनगी भर सीखे बर परथे। मोर बर गाँव के पटेल अउ भेलई के रामनगीना सिंह दूनों बरोबर हे।

मोरो दिन बहुरही। किसान ले मैं बनिहार हो गेंव। तुँहर बात मानके मरिया–हरिया के भात खवा के लइका मन के मुँह म पेच गोंज पारेंव। अब कहाँ हे मरियाभात खवइया समाज? तेकर सेती भइया में सोच डारेंव, बाँह भरोसा तीन परोसा। न जात, न कुटुम, न अपन, न बिरान। धन ले धरम हे। अब ककरो उभरौती म नइ आवँव। देख सुनके रेगिहँव। अब तो चारों मुड़ा अंधियार हे। आती के धोती, जाती के लिंगोटी। ओकर दुख ल देख के बिसाहू किहिस– सिकुमार! भले अकेल्ला रहि जते फेर खेत बेंच के मरिया के भात झन खवाते। जीयत हें तेकर बर सोचना चाहीं देखा–देखी नइ करे चाही सिकुमार।

सिकुमार किहिस– चेथी के आँखी अब आगू डाहर अइस बिसाहू। अब तो एक ठन परन है, मर भले जहूँ फेर मरिया के भात नइ खवावँव।

शब्दार्थ

सँझउती – शाम; **पोसवा** – पालित; **डोकरा** – वृद्ध; **मचिया** – छोटा खाट; **रोसियाना** – गुस्सा होना; **गोटी** – गोली; **लइम** – काम नहीं करना (सुस्त); **अरजी** – विनय (प्रार्थना); **गोहराहूँ** – निवेदन करूँगा; **जम्हेड़े** – डाँटा; **तनखा** – वेतन।

अभ्यास

पाठ से

1. रामचरण के लकवे का इलाज अस्पताल की जगह वैद्य के द्वारा क्यों कराना पड़ा?
2. सिकुमार ने बैठक में क्या विनती की?
3. 'दुब्बर बर दू असाढ़ होगे' का क्या मतलब है?
4. सिकुमार किसान से मजदूर कैसे बन गया?
5. सिकुमार की माँ क्या कहते–कहते रो पड़ी?
6. ''गरीब बर सबके चलथे, घर वाला और बाहिरी सब गरीबहा ल ठठाथें।'' सिकुमार ने ऐसा क्यों कहा?
7. 'मरिया' प्रथा ने सिकुमार की जिंदगी को किस तरह बदल दिया?

पाठ से आगे

FLBAJQ

1. कहानी में मरिया प्रथा के बारे में बताया गया है। इस प्रथा के अन्तर्गत मृतक के परिवारजन को समाज वालों को भोजन कराने की बाध्यता है। अपने आस–पास में व्याप्त ऐसी ही किसी एक समस्या पर साथियों से चर्चा कर प्राप्त विचारों को लिखिए।
2. वैद्य ने रामचरण के लकवे के उपचार के लिए काले कबूतर के खून से मालिश करने का उपाय बताया। आपके आस–पास भी कई बीमारियों के ऐसे ही अंधविश्वास भरे इलाज किए जाते होंगे। इस प्रकार के इलाजों की सूची बनाइए तथा इनसे होने वाले नुकसान पर शिक्षक तथा साथियों से चर्चा कीजिए।
3. कहानी में सिकुमार को भूखन ने पुलिस की नौकरी करने की सलाह दी ताकि वो ठाठ से रह सके। अपने साथियों से चर्चा कीजिए कि वो क्या बनना चाहते है और क्यों?
4. कहानी में सिकुमार गाँव छोड़कर पुलिस बनने भिलाई जाता है। आपके गाँव तथा समाज के लोग भी विभिन्न कारणों से शहर जाते होंगे। अपने साथियों से चर्चा कीजिए और उन कारणों को लिखिए।

भाषा के बारे में

FLK6LD

1. मरिया कहानी में कई लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। जैसे ' दुब्बर बर दो असाढ़ होगे'' अर्थात् विपदाग्रस्त व्यक्ति पर और विपदा आना तथा ''चढ़ौ तिवारी चढौ पाण्डेय'', घोड़वा गईस पराय'' अर्थात् प्राप्त अवसरों को गँवाने वालों को पछताना पड़ता है। लोकोक्तियाँ लोक अनुभव से बनती हैं जिसे किसी समाज कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा होता है, उसे ही एक वाक्य में बाँध दिया जाता है। लोकोक्तियों को

कहावत या जनश्रुति भी कहते हैं। लोकोक्ति, सम्पूर्ण वाक्य होता है तथा इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से अथवा किसी अन्य वाक्य के साथ भी किया जा सकता है। लोकोक्ति को छत्तीसगढ़ी में हाना कहते हैं।

(क) मरिया कहानी में आई लोकोक्तियों को खोजिए और उनके अर्थ लिखिए।

(ख) अपने आसपास, समाज मे ंप्रचलित लोकोक्तियों का संकलन कीजिए तथा उनके अर्थ साथियों और शिक्षकों के सहयोग से लिखिए।

2. इन वाक्यों को ध्यान से देखिए–

(क) रामचरण के बाई मुच ले हाँस दिस।

(ख) डोकरा उठिस खटिया ले अउ, दम्म ले गिर गे।

इन वाक्यों में 'मुच ले' तथा 'दम्म ले' जैसे शब्दो ंका प्रयोग, क्रिया के ध्वन्यात्मकता को प्रकट करने के लिए किया गया है। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा सौंदर्य में वृद्धि होती है। हम भी ऐसे ही बहुत सारे शब्दों का प्रयोग अपनी बोल–चाल की भाषा में करते हैं।

(क) अपने साथियों से चर्चा करें और ऐसे अन्य शब्दों की सूची बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(ख) साथियों के साथ समूह में चर्चा करें और ऐसे ही शब्दों वाले वाक्यों से एक अनुच्छेद की रचना करें।

योग्यता विस्तार

1. सिकुमार को समाज के लोगों द्वारा दबाव डालकर मरिया खिलाने के लिए मजबूर किया गया। इसी कारण उसे अपने खेत बेचने पड़े और वह किसान से मजदूर बन गया। किसानों को और कौन–कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इन समस्याओं का उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, अपने आसपास के लोगों से चर्चा कीजिए और उनका लेखन भी कीजिए।

FLU2N1

पाठ – 5.3

शील के बरवै छंद

शेषनाथ शर्मा 'शील'

FH3XPN

जीवन परिचय

छत्तीसगढ़ी के क्लासिक कवि शेषनाथ शर्मा जी का जन्म पौष शुक्ल द्वादसी संवत 1968 (14 जनवरी 1914) जांजगीर में हुआ। आप संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, उर्दू, मराठी और हिन्दी साहित्य के अधिकारी विद्वान थे। आपकी रचनाएँ कानपुर के सुकवि, काव्य कलाधर, राष्ट्र धर्म, अग्रदूत, संगीत सुधा, विशाल भारत जैसे उच्च कोटि की पत्रिकाओं में छपती थी। **कविता लता, और रवीन्द्र दर्शन** आपका प्रकाशित काव्य ग्रंथ है। आपने हिन्दी के अतिरिक्त, छत्तीसगढ़ी में भी लेखन कार्य किया। रस सिद्ध कवि शील जी ने छत्तीसगढ़ी में बरवै छंद को प्रतिष्ठित किया। डॉ. पालेस्वर शर्मा जी के शब्दों मे शील जी की प्रारंभिक कविताएं छायावादी है। आपकी मृत्यु 7 अक्टूबर,1997 में हो गई।

खण्ड–अ

बिदा के बेरा

सुसकत आवत होही, भइया मोर,
छइहा मा डोलहा, लेहु अगोर।

बहुत पिरोहिल ननकी, बहिनी मोर,
रो–रो खोजत होही, खोरन–खोर।

तुलसी चौंरा म देव, सालिग राम,
मइके ससुर पूरन, करिहौ काम।

अँगना कुरिया खोजत, होही गाय,
बछरू मोर बिन काँदी, नइच्च खाय।

मोर सुरता म भइया, दुख झन पाय,
सुरर–सुरर झन दाई, रोवै हाय।

तिया जनम के पोथी, म दुई पान,
मइके ससुर बीच म, पातर प्रान।

खण्ड–ब

ससुरार म मइके के सुरता

इहाँ परे हे आज, राउत हाट,
अरे कउवाँ बइठके, कौंरा बाँट।

दूनों गाँव के देव, करव सहाय,
मोर लेवाल जुच्छा, कभु झन जाय।

इहाँ हावय कबरी, दोहिन गाय,
ननकी ऊहाँ गोरस, बिन नइ खाय।

मइया आइस कुलकत, राँधे खीर,
हाय विधाता कइसन, धरिहौं धीर।

पानी छुइस न झोंकिस, चोंगी पान,
हाय रे पोथी धन रे, कन्या दान।

मोर संग म नहावै, सूतै खाय,
ते भाई अब लकठा, म नई आय।

भाई आधा परगट, आधा लुकाय,
ठाढ़े मुरमुर देखत, रहिथे हाथ।

खण्ड–स

मइके म ससुराल के सुरता

तन एती मन ओंती, अड़बड़ दूर,
रहि–रहि नैना नदिया, बाढ़ै पूर।

मन–मछरी ला कइसे, परिगे बान,
सब दिन मोर रहिस अब होगे आन।

मन–मछरी ह धार के, उल्टा जाय,
हरके ला मन बैरी, नइच्च भाय।

मुँह के कौंरा काबर, उगला जाय,
रहि–रहि गोड़ फड़कथे, काबर हाय।

मोर नगरिहा पावत, होही घाम,
बैरी बादर तैं कस, होगे बाम।

थकहा आहीं पाहीं, घर ल उदास,
कइसे तोरा करहीं, बूढ़ी सास।

कइसे डहर निहारौं, लगथे लाज,
फुँदरा वाला बजनी, पनहीं बाज।

शब्दार्थ

सुसकत – सुबकना, सिसकना; **डोलहा** – डोली उठाने वाला; **आवत होही** – आते होंगे; **छइँहा** – छाया; **लेहु** – लेना; **अगोर** – प्रतीक्षा करना; **पिरोहिल** – प्यारी, प्यारा; **ननकी** – छोटी, छोटा; **खोरन–खोर** – गली–गली; **कुरिया** – कमरा (कक्ष); **कांदी** – हरी घास; **सुरता** – याद; **सुरुर–सुरुर** – याद करके रोने की क्रिया; **तिया** – स्त्री; **पातर** – पतला; **हाट** – बाजार; **कउवां** – कौआ, काग; **कौंरा** – ग्रास, निवाला; **लेवाल** – बहन या पत्नी को विदा करा कर साथ ले जाने वाला; **जुच्छा** – खाली; **कबरी** – चितकबरी; **गोरस** – गाय का दूध; **कुलकत** – प्रसन्न चित्त; **राँधे** – भोजन बनाए; **झोंकन** – पकड़ना; **हरके** – मोड़ना; **घाम** – धूप; **डहर** – रास्ता; **बजनी पनही** – चमड़े का वह जूता जिसे पहन कर चलने पर आवाज करता हो; **बाज** – बजना; **तोरा** – प्रबंध, व्यवस्था; **बाम** – विपरित।

अभ्यास

पाठ से

1. ''सुसकत आवत होही भइया मोर'' पंक्ति के अनुसार दुल्हन की मनोदशा का उल्लेख कीजिए।
2. मायका एवं ससुराल के बीच की स्थिति को कवि ने 'पातर प्रान' क्यों कहा है?
3. बहन को लिवाने पहुँचा भाई अनमना सा क्यों है?
4. नायिका के मन का, धारा के विपरीत जाने का संदर्भ दीजिए।
5. नायिका अपने पति के कष्ट की कल्पना करके दुःखी हो जाती है। पाठ में आए हुए उदाहरणों का उल्लेख करते हुए समझाइए।

पाठ से आगे

1. विवाह पश्चात् लड़कियों का ससुराल जाना वैवाहिक रीति का एक अंग है। इस रीति पर अपने विचार लिखिए।
2. आपकी शाला में विदाई कार्यक्रम आयोजित किए जाते होंगे। शाला के विदाई कार्यक्रम एवं घर या पड़ोस में बेटी की विदाई का तुलनात्मक वर्णन कर लिखिए।

FMCTRB

3. ''राउत, हाट, बाजार, मेले गाँव से गहरे जुड़े होते हैं'' इस कथन पर अभिमत दीजिए।
4. विवाह पूर्व लड़की की मायके के प्रति कैसी जिम्मेदारी होती है और विवाह पश्चात् ससुराल में उसके क्या–क्या दायित्व होते हैं? अपनी माँ, भाभी अथवा विवाहित बहनों से उनके अनुभव सुनिए एवं उनका लेखन कीजिए।
5. कविता में कई स्थलों पर सामाजिक मान्यताओं का उल्लेख किया गया है जैसे–गोड़ फड़कना,

बहन/बेटी के घर का अन्न–जल ग्रहण न करना, कौआ का कौंरा बाँटना आदि अपने साथियों के साथ चर्चा कर इनके विषय में अपने विचार लिखिए।

6. हम सभी के पास किसी न किसी प्रकार की जिम्मेदारियाँ होती हैं। जब हम अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन अच्छे से करते हैं तो हमें आत्मसंतोष का अनुभव होता है। आपकी व आपके परिजनों की क्या–क्या जिम्मेदारियाँ हैं? इसे ध्यान में रखते हुए निम्न तालिकाओं को पूरा कीजिए। आप इस संदर्भ में साथियों से चर्चा कर सकते हैं।

अभिभावकों की		
पारिवारिक	सामाजिक	वैयक्तिक

अपनी		
पारिवारिक	सामाजिक	वैयक्तिक

भाषा के बारे में

1 निम्नलिखित शब्द समूह के स्थान पर छत्तीसगढ़ी का एक शब्द लिखिए–

	शब्द समूह		एक शब्द
(क)	जो नाँगर (हल) चलाता है	–	नँगरिहा
(ख)	कुएँ या तालाब से घड़े में पानी भरकर लाने वाली स्त्री	–	----------
(ग)	काम करने वाला	–	----------
(घ)	आम का बगीचा	–	----------

2. काव्य में जहाँ वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण– "तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।"

यहाँ 'त' वर्ण की आवृत्ति हुई है, इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार हैं।

इसी प्रकार पाठ में आए हुए अनुप्रास अलंकार के अन्य उदाहरणों को पहचान कर लिखिए।

3. जहाँ उपमेय (जिसकी तुलना करते हैं।) में उपमान (जिससे तुलना की जाती है) का आरोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण— मैया मैं तो चंद्र–खिलौना लैहौं।

यहाँ खिलौने (उपमेय) को चाँद (उपमान) ही मान लिया गया है।

पाठ में आए हुए रूपक अलंकार के अन्य उदाहरणों को पहचान कर लिखिए।

4. **बरवै छंद–** यह अर्ध सम मात्रिक छंद है, जिसके विषम चरणों (पहले व तीसरे चरण) में 12–12 एवं सम चरणों (दूसरा व चौथा चरण) में 7–7 मात्राओं की यति से 19 मात्राएँ होती हैं। अंतिम में गुरु–लघु मात्राएँ होती है।

उदाहरण— भाषा सहज सरस पद, नाजुक छंद, (12, 07 = 19)

जइसे गुर के पागे, सक्कर कंद। (12, 07 = 19)

इस प्रकार पाठ से अन्य पदों की मात्राओं की गणना कीजिए।

5. इसके बारे में भी जानिए—

शब्द गुण– ''गुण साहित्य शास्त्र में काव्य शोभा के जनक हैं।''

इसके तीन प्रकार हैं–

(क) माधुर्य गुण– चित्त को प्रसन्न करने वाला गुण माधुर्य होता है। श्रृंगार रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

(ख) प्रसाद गुण– चित्त को प्रभावित करने वाला गुण प्रसाद होता है। शांत रस एवं करुण रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

(ग) ओज गुण– चित्त को उत्तेजित करने वाला गुण ओज गुण होता है। वीर रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

प्रस्तुत पाठ में किस शब्द गुण की बहुलता है? नाम लिखकर उदाहरण दीजिए।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी के विवाह–गीतों का संकलन कीजिए एवं कक्षा में उसका सस्वर गायन कीजिए।
2. अपने क्षेत्र में प्रचलित विवाह की रस्म पर एक छोटा लेख लिखिए।

FYZY9I

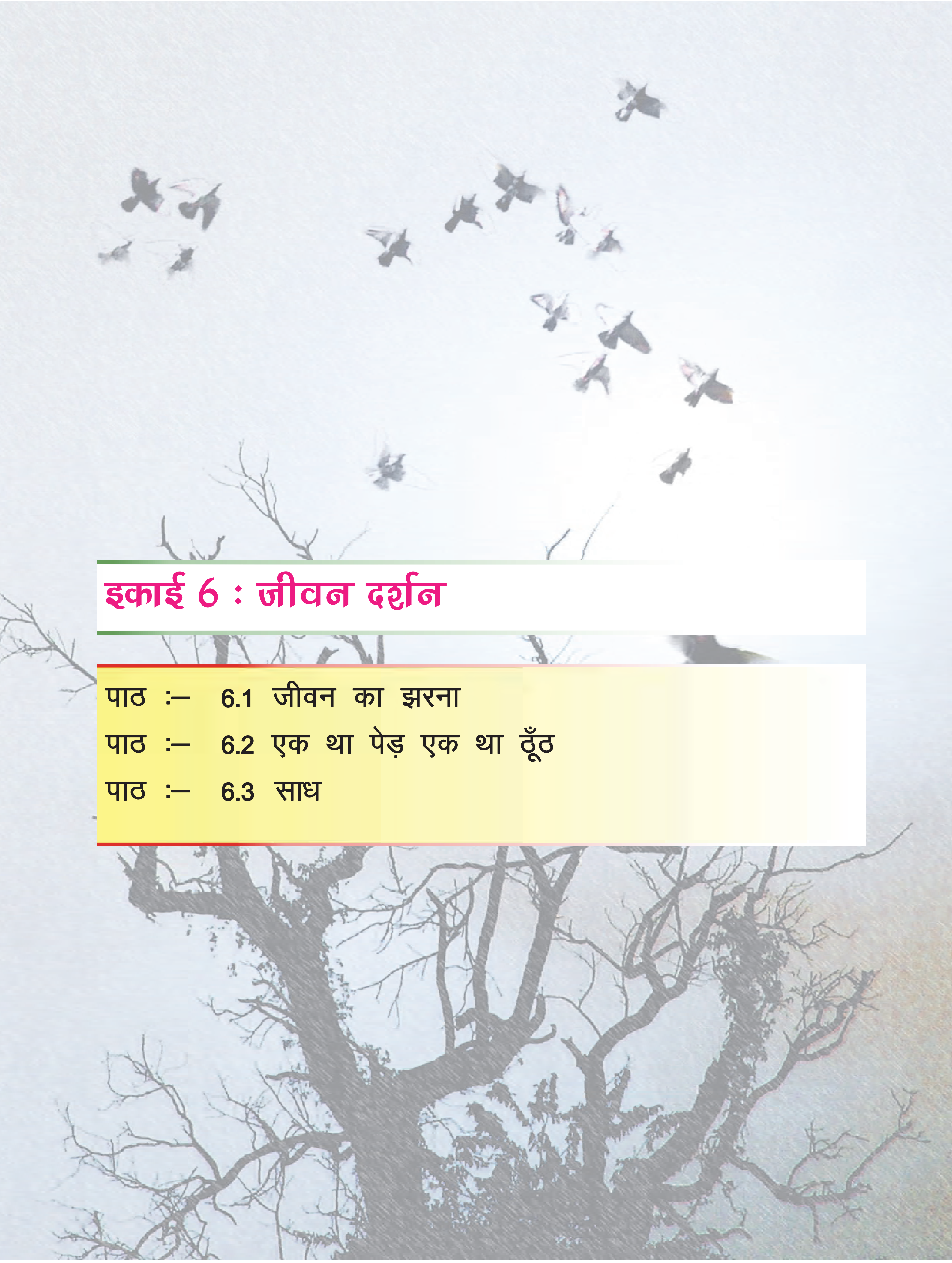

इकाई 6 : जीवन दर्शन

पाठ :– 6.1 जीवन का झरना

पाठ :– 6.2 एक था पेड़ एक था ठूँठ

पाठ :– 6.3 साध

इकाई 6 जीवन–दर्शन

इस इकाई को पुस्तक में शामिल करने के पीछे यह उद्देश्य रहा है कि विद्यार्थी पुस्तक के इस खंड की विधाओं के माध्यम से जीवन के आंतरिक पक्ष के प्रति अपनी उत्सुकता या कौतुहल के सूक्ष्म तन्तुओं को पकड़ सकें। उस पर अपने भाव, विचार को सजगता व संवेदनशीलता के साथ प्रकृति में उपलब्ध अनुभवों को महसूस करते हुए रख सकें। इस खंड में शामिल रचनाएँ विद्यार्थियों की झीनी अनुभूतियों व भाषिक संवेदनाओं को प्रखर बनाने में सहायक होंगी साथ ही कल्पना तत्व और सौंदर्य के पहलुओं को समझ कर भावों को अभिव्यक्त करने वाली भाषिक प्रयोग के बारे में समझ बना पाएंगे।

आरसी प्रसाद सिंह की रचना "जीवन का झरना" जीवन में सुख–दुख का सामना करते हुए भी अनवरत आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती है। जीने के वास्तविक मर्म को समझते हुए सकारात्मकता के साथ जीवन पथ में आने वाली हर बाधाओं का सामना करने की सीख देती है। गतिशीलता को अपने जीवन पथ के ध्येय के रूप में रखती यह कविता जीवन को जड़ता से जीवन्तता की ओर उन्मुख करने के लिए प्रेरित करती है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "साध" में शांति प्रिय जीवन की मधुर कल्पना की गई है। नदी के नीरव प्रवाह से जीवन की तुलना करते हुए कवयित्री ने संतोषप्रद जीवन अपनाने का आह्वान किया है। कवयित्री की चाहत है कि मानव जीवन नदी के शांत प्रवाह–सा हो और उसमें हर आनेवाले पल में नवीनता का एहसास हो। जीवन की यह उर्वरता हमारे जीवन अनुभवों और अनुभूतियों को अनुगूँजित करते हुए संगीतमय बनाती है।

कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर का निबंध "एक था पेड़ एक था ठूँठ" में मनुष्य के स्वभाव की तुलना बाँझ के हरे–भरे पेड़ ओर ठूँठ से की है। ठूँठ को निर्जीव जड़ता और विनाश का प्रतीक बताते हुए लेखक कहते है कि जीवन में जो व्यक्ति बिना सोचे समझे परम्परागत आदर्शों और सिद्धान्तो पर अड़े रहते हैं वास्तव में उनका जीवन निरर्थक होता है। बाँझ का हरा–भरा पेड़ जो हवा के झोकों के साथ हिलता–डुलता रहता है पर उसकी जड़ उसे मजबूती से थामे रहती है। मनुष्य के विचार भी बाँझ के पेड़ की तरह होने चाहिए लचीलें और परिस्थितियों के साथ समन्वय साधने वाले। परन्तु हमारे निर्णयों में दृढ़ता हो, जीवन्तता हो, विषम परिस्थितियों में भी जड़ों के समान डटे रहने की शक्ति होनी चाहिए। इस तरह इस पाठ के माध्यम से लेखक व्यक्ति के विचारों की दृढ़ता और लचीलेपन के बारे में बातचीत करते हैं और जीवन व्यवहार के सत्य को बखूबी स्पष्ट करते हैं।

पाठ – 6.1

जीवन का झरना

आरसी प्रसाद सिंह

3VKQ1J

जीवन परिचय

प्रसिद्ध कवि, कथाकार और एकांकीकार आरसी प्रसाद सिंह को जीवन और यौवन का कवि कहा जाता है। इन्होंने हिन्दी साहित्य को बालकाव्य, कथाकाव्य, महाकाव्य, गीतकाव्य, रेडियो रूपक एवं कहानियों समेत कई रचनाएँ दी हैं। इनके प्रमुख कविता संग्रहों में आजकल, कलापी, संचयिता, आरसी, जीवन और यौवन, मैं किस देश में हूँ : प्रेम गीत, खोटा सिक्का, आदि हैं। सहज प्रवाह और भाव के अनुरूप भाषा के कारण इनकी रचनाओं को पढ़ना हमेशा ही दिलचस्प रहता है।

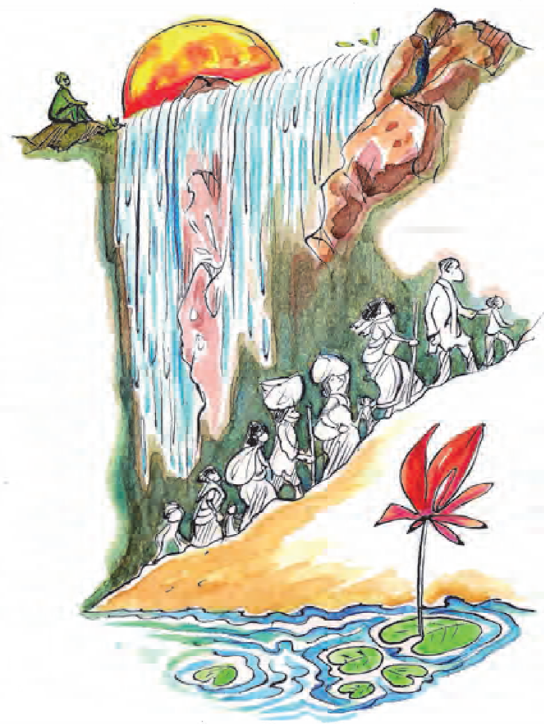

जीवन का झरना

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख दु:ख के दोनों तीरों से, चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अंतर में, किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे।
निर्झर में गति है, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन सिर्फ़ एक है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर में गति है, जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग दुर्दिन की घड़ियाँ गिन गिन।
निर्झर कहता है – बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है – बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर।
चलना है केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झरकर कहता है।

शब्दार्थ :–

निर्झर – झरना; **यौवन** – जवानी; **तट–तीर** – किनारा; **मस्ती** – आनंद; **मदमाता** – मद में चूर; **गिरि** – पर्वत; **दुर्दिन** – बुरे दिन; **घड़ी** – 24 मिनट का कालखंड।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि ने जीवन की समानता, झरने से किन–किन रूपों में की है? अपने शब्दों में लिखिए।
2. कविता में आई पंक्ति 'सुख–दु:ख' के दोनों तीरों से' कवि का क्या आशय है? मानव जीवन में इनका महत्व क्या है ?
3. संपूर्ण कविता में 'झरना' मानव जीवन के विभिन्न भावबोधों से जुड़ता है, कैसे? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. 'बाधा के रोड़ों से लड़ता' उक्त पंक्ति का आशय, जीवन को कैसे और कब–कब प्रभावित तथा प्रेरित करता है? अपने शब्दों में लिखिए।
5. 'जीवन का झरना' कविता में मानव का मृत हो जाना क्यों और कब बताया गया है?
6. कविता की उन पंक्तियों को लिखिए जो मानव मन को संघर्ष के लिए प्रेरित करती हैं?

पाठ से आगे

3VUL37

1. उपर्युक्त कविता मन में आशा का संचार करती है और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। हमारे परिवेश की बहुत सी घटनाएँ हमारे मन में इसी प्रकार के भावों को जगाती हैं, उनका संकलन कर उन पर चर्चा कीजिए।

2. उपर्युक्त कविता में निर्झर, यौवन आदि प्रतीकों के द्वारा सदैव गतिशील रहने का संदेश दिया गया है। कविता से उन प्रतीकों का चुनाव कीजिए जो इसके विपरीत भाव को प्रकट करते हैं।

3. सुख और दुःख के मनोभावों से बँधा हुआ जीवन आगे बढ़ता है, हमारे परिवेश में इन भावों की अनुभूति हमें होती है। ये भाव हमारे व्यक्तित्व के विकास को कैसे प्रभावित करते हैं? अपने विचारों को तर्क सहित रखिए।

4. कविता में यह साफ झलकता है कि झरना पहाड़ के अंतर (भीतर/अंदर) से फूट कर विभिन्न बाधाओं से लड़ते हुए आगे बढ़ता है। मानव जीवन भी ऐसा ही होता है या इससे अलग? अपने विचार तर्क सहित रखिए।

भाषा के बारे में

3H4H4U

1. निर्झर, गिरि, तीर, अंचल आदि शब्द कविता में प्रयुक्त हुए हैं जो मूलतः संस्कृत भाषा से सीधे–सीधे प्रयोग में आ गए हैं, पाठ में आए इस प्रकार के कुछ और शब्दों को ढूँढ़ कर उनसे वाक्य बनाइए।

2. **निर्झर में गति है, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।**
   धुन सिर्फ़ एक है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

   कविता की इन पंक्तियों में निर्झर का मानवीकरण किया गया है। प्रकृति के उपकरणों में मानवीय चेतना का आरोपण मानवीकरण की पहचान है, जैसे–निर्झर में गति, यौवन, उसका आगे बढ़ना, मस्ती में गाना। हिन्दी साहित्य में इसे एक अलंकार माना गया है। मानवीकरण अलंकार के कुछ अन्य उदाहरण अन्य कविताओं से ढूँढ कर लिखिए।

3. कविता में आए इन शब्दों का प्रयोग करते हुए आप भी एक कविता लिखिए – यौवन, मदमाता, कूल–किनारा, जीवन, गिरि, पर्वत, भूतल, गति, करुणा, मस्ती, मानव, झरना, पछताना, अंचल, बहना आदि।

योग्यता विस्तार

1. प्रकृति के द्वारा मानव जीवन के विविध भावों को अभिव्यक्त करने वाली कविताओं को खोज कर पढ़िए और साथियों से चर्चा कीजिए।

2. जीवन में आशावादी भावों का संचार करने वाली अन्य कविताएँ खोजिए और अपने शिक्षक तथा मित्रों से चर्चा कीजिए।

3HDD6H

पाठ – 6.2

3HH985

एक था पेड़ और एक था ठूँठ

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

जीवन परिचय

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर हिन्दी के जाने–माने निबंधकार हैं। इन्होंने राजनैतिक और सामाजिक जीवन से संबंध रखने वाले कई निबंध लिखे हैं। इन्होंने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया, जिसके कारण कई बार इन्हें जेल भी जाना पड़ा। वस्तुतः साहित्य के माध्यम से प्रभाकर जी गुणों की खेती करना चाहते थे और अपनी पुस्तकों को शिक्षा के खेत मानते थे जिनमें जीवन का पाठ्यक्रम था। वे अपने निबंधों को विचार यात्रा मानते थे और कहा करते थे– 'इनमें प्रचार की हुंकार नहीं, सच्चे मित्र की पुकार है, जो पाठक का कंधा थपथपाकर उसे चिंतन की राह पर ले जाती है।'

उनका मुख्य कार्यक्षेत्र पत्रकारिता था। ये 'ज्ञानोदय' के संपादक भी रहे। इनकी प्रमुख रचनाएँ – 'जिंदगी मुसकाई', 'माटी हो गई सोना', 'दीप जले शंख बजे' आदि।

जिस मकान में मैं ठहरा, उसकी खिड़की के सामने ही खड़ा था एक पूरा, पनपा बाँझ का पहाड़ी पेड़। पलंग पर लेटे–लेटे वह यों दिखता कि जैसे कुशल–समाचार पूछने को आया कोई मेरा ही मित्र हो।

एक दिन उसे देखते–देखते इस बात पर मेरा ध्यान गया कि यह इतना बड़ा पेड़ हवा का तेज़ झोंका आते ही पूरा–का–पूरा इस तरह हिल जाता है, जैसे बीन की तान पर कोई साँप झूम रहा हो और उसका ऊपर का हिस्सा, हवा जब और तेज़ हो जाती है तो काफ़ी झुक जाता है, पर हवा के धीमे पड़ते ही वह फिर सीधा हो जाता है।

हवा मौज में थी, अपने झोंकों में झूम रही थी, इसलिए बराबर यह क्रिया होती रही और मैं उसे देखता रहा। देखता क्या रहा, उसकी झुक–झूम में रस लेता रहा। पड़े–पड़े वह पेड़ पूरा न दिखता था, इसलिए मैं पलंग से खिड़की पर आ बैठा। अब मुझे वह पेड़ जड़ से फुंगल तक दिखाई देने लगा और मेरा ध्यान इस बात की ओर था कि हवा कितनी भी तेज़ हो, पेड़ की जड़ स्थिर रहती है – हिलती नहीं है।

यहीं बैठे, मेरा ध्यान एक दूसरे पेड़ पर गया, जो इस पेड़ से काफी निचाई में था। पेड़ का ठूँठ सूखा वृक्ष और सूखा वृक्ष माने निर्जीव–मुरदा वृक्ष। सोचा, यह वृक्ष का कंकाल है, जैसा एक दिन सभी को होना है। अब मैं कभी इस हरे–भरे पेड़ की ओर देखता, कभी उस सूखे ठूँठ की तरफ। यों ही देखते–भालते मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि वह धीमे चले या वेग से यह ठूँठ न हिलता है, न झुकता है।

न हिलना, न झुकना; मन में यह दो शब्द आए और मैंने आप ही आप इन्हें अपने में दोहराया– न हिलना, न झुकना।

दूर अंतर में कुछ स्पर्श हुआ, पर वह स्पर्श सूक्ष्म था, यों ही संकेत सा। शब्द चक्कर काटते रहे, न हिलना, न झुकना और तब आया वह वाक्य–न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का, दृढ़ता का चिह्न है और वह वीर पुरुष है, जो न हिलता है, न झुकता है।

तभी मैंने फिर देखा उस ठूँठ की ओर। वह न हिल रहा था, न झुक रहा था। मन में अचानक प्रश्न आया– न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न है, पर उस ठूँठ में जीवन कहाँ है? यह तो मुरदा पेड़ है।

अब मेरे सामने एक विचित्र दृश्य था कि जो जीवित था, वह हिल रहा था, और जो मृतक था वह न हिल रहा था, न झुक रहा था। तो न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न हुआ या मृत्यु की जड़ता का?

अजीब उलझन थी, पर समाधान क्या था? मैं दोनों को देख रहा था, देखता रहा और तब मेरे मन में आया कि जो परिस्थितियों के अनुसार हिलता, झुकता नहीं, वह वीर नहीं, जड़ है; क्योंकि हिलना और झुकना ही जीवन का चिह्न है।

हिलना और झुकना; अर्थात् परिस्थितियों से समझौता। जिस जीवन में समझौता नहीं, समन्वय नहीं, सामंजस्य नहीं, वह जीवन कहाँ है? वह तो जीवन की जड़ता है; जैसे यह ठूँठ और जैसे यह पहाड़ का शिखर।

मुझे ध्यान आया कि जीते–जागते जीवन में भी एक ऐसी मनोदशा आती है, जब मनुष्य हिलने और झुकने से इनकार कर देता है। अतीत में रावण और हिरण्यकश्यप इस दशा के प्रतीक थे तो इस युग में हिटलर और स्टॉलिन, जो केवल एक ही मत को सही मानते रहे और वह स्वयं उनका मत था। आज की भाषा में इसी का नाम है डिक्टेटरी, अधिनायकता।

विश्व की भाषा – दे, ले।

विश्व की जीवन–प्रणाली है – कह, सुन।

विश्व की यात्रा का पथ है – मान, मना।

इन तीनों का समन्वय है – हिलना–झुकना और समझौता–समन्वय।

जिसमें यह नहीं है, वह जड़ है, भले ही वह ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह जिद्दी।

मेरी खिड़की के सामने खड़ा हिल रहा था बाँझ का विशाल पेड़ और दूर दिख रहा था वह ठूँठ। समय की बात; तभी पास के घर से निकला एक मनुष्य और वह अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उस ठूँठ की एक छोटी टहनी काटने लगा। सामने ही दिख रही थी–सड़क, जिस पर अपनी कुदाल से काम कर रहे थे कुछ मजदूर।

कुल्हाड़ी और कुदाल; कुदाल और कुल्हाड़ी— मैने बार—बार इन शब्दों को दोहराया और तब आया मेरे मन में यह वाक्य—विश्व की भाषा है, दे, ले; विश्व की जीवन प्रणाली है कह, सुन; विश्व की यात्रा का पथ है— मान, मना; अर्थात् हिल भी और झुक भी, पर जो इन्हें भूलकर जड़ हो जाता है, वह ठूँठ हो, पर्वत का शिखर हो, अहंकारी मानव हो, विश्व उससे जिस भाषा में बात करता है उसी के प्रतिनिधि हैं ये कुल्हाड़ी—कुदाल।

साफ—साफ यों कि जीवन में दो भी, लो भी, कहो भी, सुनो भी, मानो भी, मनाओ भी; और यह सब नहीं, तो तैयार रहो कि तुम काट डाले जाओ, खोद डाले जाओ, पीस डाले जाओ।

मैं खिड़की से उठकर अपने पलंग पर आ पड़ा। बाँझ का पेड़ अब भी हिल रहा था, झुक रहा था, झूम रहा था, पर तभी मेरे मन में उठा एक प्रश्न— तो क्या जीवन की चरितार्थता बस यही है कि जीवन में हवा का झोंका आया और हम हिल गए? जीवन में संघर्ष का झटका आया और हम झुक गए? साफ—साफ यों कि यहाँ — वहाँ हिलते—झुकते रहना ही महत्वपूर्ण है और जीवन की स्थिरता—दृढ़ता, जीवन के नकली सत्य ही हैं ?

प्रश्न क्या है, कम्बख्त बिजली की तेज़ शॉक है यह, जो यों धकियाता है कि एक बार तो जड़ से ऊपर तक सब पाया संजोया अस्त व्यस्त हो उठे। सोचा— नहीं जी, यह हिलना और झुकना जीवन की कृतार्थता नहीं, अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि विवशता है। जीवन की वास्तविक कृतार्थता तो न हिलना, न झुकना ही है यानी दृढ़ रहना ही है।

मैं अपने पलंग पर पड़ा देखता रहा कि बाँझ का पेड़ झुक रहा है, झूम रहा है, हिल रहा है, और दूर पर खड़ा ठूँठ न हिलता है, न झुकता है। जीवन है वृक्ष में, जो जीवन की कृतार्थता—दृढ़ता से हीन है और वह दृढ़ता है ठूँठ में, जो जीवन से हीन है; अजीब उलझन है यह।

तभी हवा का एक तेज झोंका आया और बाँस हिल उठा। मेरी दृष्टि उसकी झूमती देह यष्टि के साथ रपटी —रपटती उसकी जड़ तक चली गई और तब मैंने फिर देखा कि हवा का झोंका आता है तो टहनियाँ हिलती हैं, तना भी झूमता है पर अपनी जगह जमी रहती है उसकी जड़। हवा का झोंका हल्का हो या तेज, वह न झुकती है न झूमती है।

अब स्थिति यह कि कभी मैं देख रहा हूँ स्थिर जड़ को और कभी हिलते—झूमते ऊपरी भाग को। लग रहा है कि कोई बात मन में उठ रही है और वह उलझन को सुलझाने वाली है, पर वह बात क्या है ? बात मन की तह से ऊपर आ रही है — ऊपर आ गई है।

बात यह है कि हमारा जीवन भी इस वृक्ष की तरह होना चाहिए कि उसका कुछ भाग हिलने झुकने वाला हो और कुछ भाग स्थिर रहने वाला, यह जीवन की पूर्ण कृतार्थता है।

बात अपने में पूर्ण है, पर जरा स्पष्टता चाहती है और वह स्पष्टता यह है कि हम जीवन के विस्तृत व्यवहार में हिलते—झुकते रहें, समन्वयवादी रहें, पर सत्य के सिद्धांत के प्रश्न पर हम स्थिर रहें, दृढ़ रहें और टूट भले ही जाएँ, पर हिलें नहीं, समझौता करें नहीं।

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना—झुकना नहीं है और देह को निरंतर—हिलना झुकना ही है, नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह, जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है— न हिलता है न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे

समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने–बैठने–लेटने में मदद देने की भी।

संक्षेप में जीवन की कृतार्थता यह है कि वह दृढ़ हो, पर अड़ियल न हो।

दृढ़, जो औचित्य के लिए, सत्य के लिए टूट जाता है, वह हिलता और झुकता नहीं।

अड़ियल जो औचित्य और अनौचित्य, समय–असमय का विचार किए बिना ही अड़ जाता है और टूट तो जाता है, पर हिलता झुकता नहीं।

दो टूक बात यों कि जीवन वह है जो समय पर अड़ भी सकता है और समय पर झुक भी सकता है पर ठूँठ वह है, जो अड़ ही सकता है, झुक नहीं सकता।

एक है जीवंत दृढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता।

हम दृढ़ हों, जड़ नहीं।

मैंने देखा, बाँझ का पेड़ अब भी हिल रहा था, झुक रहा था और ठूँठ अनझुका अनहिला, ज्यों का त्यों खड़ा था।

शब्दार्थ :–

चरितार्थ – घटित होना; **कृतार्थ** – किसी पर उपकार करना; **देहयष्टि** – शारीरिक सौष्ठव; **रपटी–रपटती** फिसली – फिसलती हुई, अड़ियल; **औचित्य** – जो उचित हो ठीक हो; **जीवंत** – जीवन युक्त; **पनपा** – कोंपल फूटना, नए पत्ते निकलना; **फुंगल** – फुनगी; **ठूँठ** – सूखा पेड़; **जड़ता** – स्थिरता, जिसमें कोई हरकत न हो; **समाधान** – हल; **समन्वय** – विरोधी चीजों को मिलाना दोनों में तालमेल बिठाना।

पाठ से

1. बाँझ के हरे–भरे पेड़ और ठूँठ के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?
2. हमारे विचार लचीले और समन्वयवादी क्यों होने चाहिए? स्पष्ट कीजिए।
3. बाँझ के हरे भरे पेड़ और ठूँठ किस मानवीय भाव को प्रकट करते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
4. दृढ़ता और जड़ता में फर्क को पाठ में किस प्रकार से बताया गया है? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
5. 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ' पाठ के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. पाठ में जिस प्रकार के मानव स्वभाव का वर्णन किया गया है, उसी प्रकार के लोग समाज में भी दिखाई पड़ते हैं। उनका प्रभाव लोगों पर कैसे पड़ता है? इस पर आपस में चर्चा कीजिए।

3HH59S

2. आज की परिस्थितियों में एक आदर्श व्यक्ति के जीवन की विशेषताएँ क्या–क्या हो सकती हैं? इस पर समाज के विभिन्न आयु वर्ग के लोगों से वार्ता कर इस विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए।

3. अपने शिक्षक की सहायता से हिटलर, स्टालिन, रावण, हिरण्यकश्यप, डिक्टेटर आदि पर चर्चा के लिए प्रश्नों की सूची बनाइए।

4. तानाशाही क्या है? तानाशाह की जीवन शैली कैसी होती है? अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा के बारे में

3X61BF

1. सामने **ही** सड़क दिख रही थी।
   सामने सड़क **ही** दिख रही थी।
   सामने सड़क दिख **ही** रही थी।
   'ही' यहाँ एक ऐसा शब्द है जो इन तीनों वाक्यों में प्रयुक्त होकर अर्थ को विशेष बल देता है, जिसे 'निपात' कहते हैं। पाठ में **न, नहीं, तो, तक, सिर्फ, केवल** आदि निपातों का प्रयोग हुआ है। उन्हें पाठ में खोज कर अर्थ परिवर्तन की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उनके स्वतंत्र प्रयोग का अभ्यास कीजिए।

2. पाठ में **किन्तु, नित्य, हे, अरे, पर, धीरे–धीरे, काफी, ऊपर, सामने** आदि शब्द आए हैं। जिन शब्दों के रूप में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता है वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। इनमें क्रिया–विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक आदि हैं। ऐसे शब्दों को चुनकर वाक्य में उनका प्रयोग कीजिए।

3. दे, ले, कह, सुन, मान, मना, हिलना, डुलना आदि क्रिया पद पाठ में आए हैं, इन पदों का वाक्यों में स्वतंत्र प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. एक पेड़ की जड़ के समान अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर दृढ़ रहने वाले और हवा में झूमते पेड़ की तरह समन्वयवादी रहने वाले बहुत से लोग आपके समाज में रहते हैं। उनसे, उनके जीवन अनुभव पर बातचीत कर कहानी की तरह लिखने का प्रयास कीजिए।

2. इस निबंध के लेखक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं, स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ये जेल गए और विभिन्न प्रकार की यातनाएँ भी सहीं। आपके परिवेश में भी ऐसे लोग रहते होंगे। अपने आस–पास के वृद्ध–जन और शिक्षकों से संपर्क कर इनके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और राष्ट्र के प्रति उनके कार्य–व्यवहार पर कक्षा में विचार गोष्ठी का आयोजन कीजिए।

3XEHD3

साध

सुभद्रा कुमारी चौहान

3XNSEQ

जीवन परिचय

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान की दो कविता संग्रह तथा तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए पर उनकी प्रसिद्धि झाँसी की रानी कविता के कारण है। ये राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं। वर्षों तक सुभद्रा कुमारी की 'झांसी वाली रानी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' शीर्षक कविताएँ युवाओं के हृदय में देशप्रेम के भाव को जागृत करती रही हैं। उनकी चर्चित कृतियों में 'बिखरे मोती','उन्मादिनी', 'सीधे सादे चित्र', 'मुकुल', 'त्रिधारा' और 'मिला तेज से तेज' प्रमुख हैं।

साध : सुभद्राकुमारी चौहान

मृदुल कल्पना के चल पँखों पर हम तुम दोनों आसीन।
भूल जगत के कोलाहल को रच लें अपनी सृष्टि नवीन।।
वितत विजन के शांत प्रांत में कल्लोलिनी नदी के तीर।
बनी हुई हो वहीं कहीं पर हम दोनों की पर्ण–कुटीर।।
कुछ रूखा–सूखा खाकर ही, पीतें हों सरिता का जल।
पर न कुटिल आक्षेप जगत के करने आवें हमें विकल।।
सरल काव्य–सा सुंदर जीवन हम सानंद बिताते हों।
तरु–दल की शीतल छाया में चल समीर–सा गाते हों।।
सरिता के नीरव प्रवाह–सा बढ़ता हो अपना जीवन।
हो उसकी प्रत्येक लहर में अपना एक निरालापन।।

रचे रुचिर रचनाएँ जग में अमर प्राण भरने वाली।
दिशि–दिशि को अपनी लाली से अनुरंजित करने वाली।।
तुम कविता के प्राण बनो मैं उन प्राणों की आकुल तान।
निर्जन वन को मुखरित कर दे प्रिय! अपना सम्मोहन गान।।

शब्दार्थ :–

मृदुल – कोमल, **चल** – चंचल; **वितत** – विस्तृत, फैला हुआ; **विजन** – निर्जन, जनहीन; **कोलाहल** – शोरगुल; **सृष्टि** – संसार, जगत; **प्रांत** – भूभाग; **कल्लोलिनी** – कल–कल की आवाज करने वाली; **पर्ण–कुटीर** – पत्तों से निर्मित कुटिया; **कुटिल जगत आक्षेप** – संसार के छल कपट पूर्ण या विद्वेषपूर्ण आरोप/दोषारोपण; **तरुदल** – वृक्षों का समूह; **निराला** – अनुपम, विलक्षण; **रुचिर** – रुचिकर, सुंदर; **दिशि–दिशि** – दिशा–दिशा में।

पाठ से

1. कविता में किस प्रकार की सृष्टि रचने की मृदुल कल्पना की गई है।
2. कवयित्री को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने की चाहत है और क्यों?
3. कविता की पंक्ति ''सरिता के नीरव प्रवाह–सा बढ़ता हो अपना जीवन'' का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. रुचिर रचनाओं से कवयित्री का क्या आशय है?
5. 'जीवन में निरालापन' कहकर कवयित्री ने क्या संकेत किया है?
6. कविता के शीर्षक 'साध' से जीवन की जिन अभिलाषाओं का बोध होता है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।
7. ''तुम कविता के प्राण बनो, मैं उन प्राणों की आकुल तान।
   निर्जन वन को मुखरित कर दे प्रिय! अपना सम्मोहन गान।।''
   उपर्युक्त काव्य पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ से आगे

3XXNGD

1. हम अपने जीवन को कैसा बनाना चाहते हैं और आस–पास के लोगों तथा प्रकृति से हमें कैसे सहयोग मिलता है? आपस में चर्चा कर लिखिए।

2. जीवन के प्रति अपने मन में उठने वाली लहर या कल्पनाओं के बारे में विचार करते हुए उन्हें लिखिए।

3. आपके आस–पास ऐसे लोग होंगे जो अभावों में रहते हुए भी दूसरों का सहयोग करने को सदैव तत्पर होते हैं, ऐसे लोगों के बारे में साथियों से चर्चा कर उनके भावों को लिखें।

4. आपको किन–किन कवियों की कविताएँ अच्छी लगती हैं ? आपस में चर्चा कर उन कवियों की विशेषताओं को लिखिए। यह भी बताइए कि वे कविताएँ आपको क्यों अच्छी लगती हैं?

भाषा के बारे में

3Y7JI1

1. विशेषण– संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं तथा जिन संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं। प्रस्तुत कविता में विशेषण और विशेष्य पदों का सघन प्रयोग कवयित्री द्वारा किया गया है, जैसे मृदुल कल्पना, नवीन सृष्टि, पर्ण कुटीर, सरल काव्य आदि। पाठ से अन्य विशेषण और विशेष्य को ढूँढ़ कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. कुछ विशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं जैसे – ऊँची कूद, तेज चाल, धीमीगति आदि। क्रिया की विशेषता बताने वाले इन विशेषणों को क्रिया विशेषण कहते हैं। किसी अखबार या पत्रिका को पढ़िए और क्रिया विशेषणों को खोज कर लिखिए।

3. कविता में दिए गए विशेष्य पदों में नए विशेषण या क्रियाविशेषण को जोडकर नए पदों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे–मृदुल–कल्पना, निर्मल–छाया, सुरीली–तान, निष्काम–जीवन। कविता में प्रयुक्त कुछ अन्य विशेष्य नीचे दिए गए हैं। इनमें विशेषण या क्रियाविशेषण लगाकर नए पदों का निर्माण कीजिए। (आक्षेप, कुटीर, काव्य, प्रवाह, रचनाएँ, वन, तान, प्रांत, विजन, नदी।)

4. विशेषण के कई भेद (प्रकार) होते हैं। शब्द अपने 'विशेष्य' के गुणों की विशेषता का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे – अच्छा आदमी, लंबा लड़का, पीला फूल, खट्टा दही। अपने शिक्षक की सहायता से विशेषण के अन्य भेदों की पहचान कीजिए।

5. साध कविता में कई विशेषण शब्द हैं। उन शब्दों को पहचानिए तथा विशेषण के भेदों के अनुरूप वर्गीकृत कीजिए।

6. कविता में, **प्राण भरना** अर्थात जीवंत करना, मुहावरे का प्रयोग हुआ है। प्राण शब्द से सम्बन्धित कुछ अन्य मुहावरे इस प्रकार हैं – **प्राण सूखना** = अत्यंत भयग्रस्त होना, **प्राण पखेरू उड़ना** = मृत होना, **प्राणों की आहुति देना** = बलिदान करना। 'प्राण' शब्द से अन्य मुहावरे खोजकर उनका अर्थ लिखिए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. कुछ कविताएँ प्रकृति के कोमल भावों को अभिव्यक्त करती हैं। कोमल भावों को प्रस्तुत करने वाली कविताओं को पुस्तकालय से ढूँढ़ कर साथियों के साथ वाचन कीजिए और शब्द, अर्थ, भाव, तुक आदि पर चर्चा कीजिए।

2. सुभद्रा कुमारी चौहान की अन्य कविताओं जैसे 'कदंब का पेड़' 'मेरा नया बचपन', मेरा जीवन', 'खिलौनेवाला' को खोजकर पढ़िए और उनके भाव लिखिए।

4AKSYK

इकाई 7 : विविध

पाठ :– 7.1 मध्ययुगीन काव्य (मीरा, दादू)

पाठ :– 7.2 मैं लेखक कैसे बना

पाठ :– 7.3 जेबकतरा

पाठ :– 7.4 गोधूलि

इ
का
ई

7 विविध

विविध में इस बार भी मध्यकाल से लेकर अधुनातन रचनाकारों तक का रस समाहित है। इस इकाई में जहाँ एक ओर दरद दिवाणी मीरा हैं जिन्होंने भक्ति के मार्ग में आई सभी बाधाओं की परवाह न कर प्रियतम कृष्ण की प्राप्ति को अपना एक लक्ष्य बताया है ताकि उसके सहारे भव–सागर पार किया जा सके। वहीं दूसरी ओर ज्ञानमार्गी कवि दादू दयाल हैं जो प्रेम के अलौकिक रूप को अपनी कविता का केन्द्र बनाते हैं। दादू ने अपनी रचनाओं में पंथ के वाद–विवादों से दूर रहकर सभी को समदृष्टि से देखते हुए शाश्वत शांति एवं जन्म मरण रुपी आवागमन से छुटकारा पाने का उपाय बतलाते हुए मानव को सहज–सरल मार्ग को अपनाने का संदेश दिया है।

ज्ञान प्रकाश विवेक आधुनिक लेखक हैं, जो मानवीय संवेदना को बेहद करीब से छूकर महसूस करवाते हैं, तो इसके ठीक विपरीत एक विदेशी रचनाकार **मनरो साकी** भी हैं जिनकी रचना हमें मनुष्य की कुछ अन्य प्रवृत्तियों से मुखातिब करती हैं। इस सबके साथ ही एक रचनाकार के बनने की यात्रा भी है जिसमें आपको तमाम अनुभव मिलेंगे।

पाठ – 7.1

मध्ययुगीन काव्य

पाठ – 7.1.1

मीराबाई

जीवन परिचय

मीराबाई का जन्म संवत् 1573 में जोधपुर में चोकड़ी नामक गाँव में हुआ था। कम आयु में ही इनका विवाह मेवाड़ के महाराणा कुमार भोजराज के साथ हो गया था। मीरा बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थीं। विवाह के थोड़े ही दिन के बाद मीरा बाई के पति का स्वर्गवास हो गया। पति की मृत्यु के बाद इनकी भक्ति–भावना दिन–प्रतिदिन बढ़ती गई। मीराबाई द्वारा कृष्णभक्ति में पद रचना और नाचना–गाना सामंती राज परिवार की परंपराओं के अनुकूल नहीं था। राज परिवार ने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका चली गईं और जीवन पर्यंत वहीं रहीं।

मीरा की कविता में कृष्ण भक्ति और प्रेम का चरम उत्कर्ष मिलता है। उनकी कविता में ब्रज और मेवाड़ी दोनों का पुट मिलता है। यहाँ दिए गए पदों में उन्होंने अपने कृष्ण प्रेम का वर्णन किया है। मीरा के कृष्ण प्रेम की उत्कटता इन पदों मे देखी जा सकती है। व्यक्तिगत प्रेम की इतनी उदात्त छवियाँ मध्यकालीन काव्य में दुर्लभ हैं।

पद

पग घुँघरु बाँध मीरा नाची रे।
मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गई दासी रे।
लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे।।
विष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर सहज मिले अविनासी रे।।

मैं तो साँवरे के रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुंघरू, लोक–लाज तजि नाची।।
गई कुमति, लई साधुकी संगति, भगत, रूप भै साँची।
गाइ गाइ हरिके गुण निस दिन, कालब्याल सूँ बाँची।।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची।
मीरा श्रीगिरधरन लाल सूँ, भगति रसीली जाँची।।

बसो मोरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरति सांवरि सूरति, नैणा बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत, उर बैजंती–माल।।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो।।
खायो न खरच चोर न लेवे, दिन–दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरस हरस जस गायो।।

शब्दार्थ :–

बावरी – पगली; **न्यात** – नाते रिश्ते वाले; **कुलनासी** – कुल का नाश करने वाला; **नागर** – नगर में रहने वाला; **अविनासी** – जिसका विनाश न हो; **कुमति** – बुरी मति; **कालब्याल** – काल रूपी साँप; **काँची** – कच्चा; **उर** – हृदय; **बछल** – वत्सल; **म्हे** – मैं; **अमोलक** – अमूल्य; **खेवटिया** – नाव खेने वाला; **भवसागर** – संसार रूपी समुद्र; **हरस** – खुश, प्रसन्न।

यह भी पढ़िए

मीरा ने एक पद होली के बारे मे भी लिखा है उसे देखिए–
होरी खेलत हैं गिरधारी

मुरली चंग बजत डफ न्यारो
संग युवती ब्रज नारी
होरी खेलत हैं गिरधारी
चन्दन केसर छिरकत मोहन
अपने हाथ बिहारी
भरि–भरि मूठ लाल चहुँ ओर
देत सबन पे डारि
होरी खेलत हैं गिरधारी

नीचे दी गई नज़ीर अकबराबादी की कविता मीरा के लगभग 300 साल बाद लिखी गई थी। उन्होंने होली पर अनेक कविताएँ लिखीं हैं। नज़ीर उर्दू के कवि थे और उनकी कविताओं में हिन्दू मुस्लिम सौमनस्य काफी देखने को मिलता है...

होली

जब खेली होली नंद ललन हँस हँस नंदगाँव बसैयन में।
नर नारी को आनंद हुए ख़ुशवक्ती छोरी छैयन में।।
कुछ भीड़ हुई उन गलियों में कुछ लोग ठठ्ठ अटैयन में ।
खुशहाली झमकी चार तरफ कुछ घर–घर कुछ चौपय्यन में।।
डफ बाजे राग और रंग हुए, होली खेलन की झमकैयन में।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े, हुई धूम कदम की छैयन में।।

————————————

पाठ – 7.1.2

दादू दयाल

जीवन परिचय

दादू दयाल का जन्म अनुमानतः संवत् 1601 में अहमदाबाद (गुजरात) में हुआ था। इनके जीवन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती। कहा जाता है वे गृहस्थी त्यागकर 12 वर्षों तक कठिन तप करते रहे। उसके बाद वे नरेना (जयपुर) आ बसे। दादू दयाल जी के अनुभव वाणी (दादूवाणी) से प्रेरित होकर उनके अनुयायियों ने एक पंथ की स्थापना की, जिसे दादू पंथ के नाम से जाना गया। दादू दयाल की कविता अपने विचारों में कबीर की कविता के निकट प्रतीत होती है। दादूवाणी व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देती है। उनके शिष्यों में रज्जब, सुंदरदास, और गरीबदास भी प्रसिद्ध कवि हैं। दादू दयाल की कविता में कबीर की ही तरह सबद, साखी और पद मिलते हैं। यहाँ उनके दो पद और कुछ दोहे दिए जा रहे हैं।

अजहूँ न निकसे प्रान कठोर
दरसन बिना बहुत दिन बीते, सुंदर प्रीतम मोर
चारि पहर चारो जुग बीते रैनि गँवाई भोर
अवधि गई अजहूँ नहिं आए, कतहुँ रहे चितचोर
कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे, मारग चितवत तोर
दादू ऐसे आतुर बिरहिनि जैसे चंद चकोर।

भाई रे! ऐसा पंथ हमारा
द्वै पख रहितपंथ गह पूरा अबरन एक अधारा
बाद बिबाद काहू सौं नाहीं मैं हूँ जग से न्यारा
समदृष्टि सूँ भाई सहज में आपहिं आप बिचारा
मैं, तैं, मेरी यह गति नाहीं निरबैरी निरविकारा
काम कल्पना कदै न कीजै पूरन ब्रह्म पियारा
एहि पथि पहुँचि पार गहि दादू, सों तत् सहज संभारा

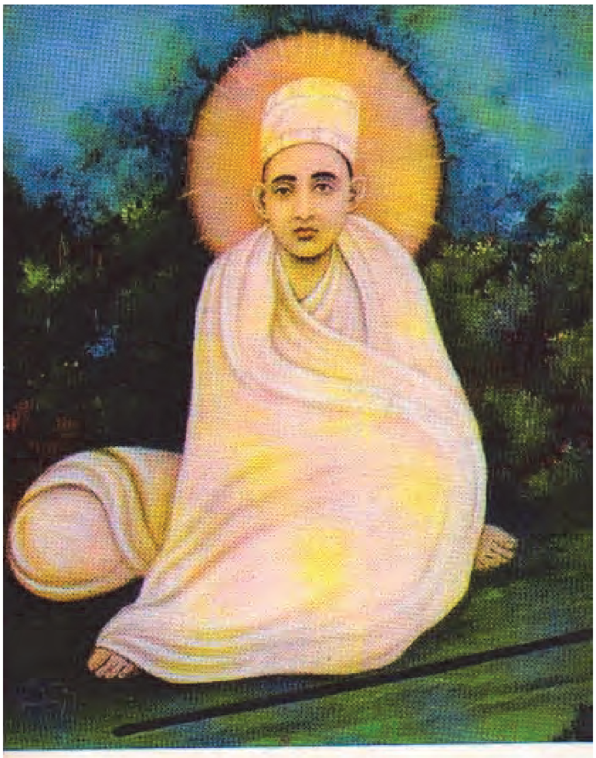

सन्तप्रवर श्री दादू दयालजी महाराज

हिंदू तुरक न जाणों दोइ।
साँईं सबका सोई है रे, और न दूजा देखौं कोई।।

कीट–पतंग सबै जोनिन, जल–थल संगि समाना सोई।
पीर पैगाम्बर देव–दानव, मीर–मलिक मुनि–जनकौं मोहि।।1।।
करता है रे सोई चीन्हौं, जिन वै रोध करै रे कोई।
जैसें आरसी मंजन कीजै, राम–रहीम देही तन धोई।।2।।
साँईंकेरी सेवा कीजै पायौ धन काहे कौं खोई।
दादू रे जन हरि भज लीजै, जनम–जनम जे सुरजन होई।।3।।

दादू घटि कस्तुरी मृग के, भरमत फिरे उदास।
अंतर गति जाणे नही, ताथै सूंघे घाँस।।4।।

दादू सब घट में गोविन्द है, संग रहै हरि पास ।
कस्तुरी मृग में बसै, सूंघत डोले घाँस।।5।।

शब्दार्थ :–

निरखि – ध्यान से देखना; **चितवत** – देखना; **बिरहिन** – विरह (वियोग) में व्याकुल; **मसीत** – मस्जिद; **जनि** – नहीं; **समदृष्टि** – समान भाव से देखना, तटस्थ दृष्टि; **निरबैरी** – बैरी विहीन; **निरविकरा** – निर्विकार; **कदै** – कहै; **गहि** – पकड़ना; **तुरक**–तुर्क; **चीन्हौं** – पहचानना; **आरसी** – दर्पण; **साँईंकेरी** –ईश्वर कृपा, साँईंकृपा, **भरमत** – भ्रम, **जाणे** – जानना।

यह भी पढ़िए

आपै मारे आपको, आप आपको खाइ ।। 1।।
आपै अपना काल हे, दादू कह समझाई
आपा मेटे हरि भजै, तन मन तजे विकार ।। 2।।
निर्वैरी सब जीव सौं, दादू यहू मत सार।।
आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार।। 3।।
दादू मूल विचारिए, दूजा कौन गंवार।।

निगुर्ण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा के मूर्धन्य कवि कबीर की निम्नांकित पंक्तियाँ पढ़िए। दादू दयाल व कबीर की पंक्तियों में काफी समानता देखने को मिलता है। :–

कस्तुरी कुण्डलि बसै मृग ढूढैं वन माहि
ऐसे घट–घट राम है दुनिया देखे नाहिं।

अभ्यास

पाठ से

1. अपने पदों में मीरा खुद को दासी कहती हैं। ऐसा कहने के पीछे क्या आशय है? लिखिए।
2. 'गई कुमति, लई साधु की संगति' से कवि का क्या आशय है? लिखिए।
3. मीरा को जो अमोलक वस्तु मिली है उसके बारे में वे क्या–क्या बता रही हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
4. राम रतन धन को जनम जनम की पूंजी कहने का आशय क्या है? लिखिए।
5. राणा ने मीरा बाई को विष का प्याला क्यों भेजा होगा और मीरा बाई उस विष को पीते हुए क्यों हँसी? अपने विचार लिखिए।
6. "भाई रे! ऐसा पंथ हमारा" कविता में दादू के पंथ के बारे में पद में क्या–क्या बताया गया है?
7. उपासना के सगुण और निर्गुण दोनों पक्षों को आपने कविताओं में पढ़ा है। आपके अनुसार दोनों में से कौन–सा पक्ष अधिक सरल है? अपनी बातें तर्क सहित लिखिए।
8. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

   "करता है रे सोई चीन्हौं, जिन वै रोध करै रे कोइ।

   जैसैं आरसी मंजन कीजै, राम–रहीम देही तन धोइ।

पाठ से आगे

1. क्या आपको कोई ऐसी वस्तु मिली है जिससे बेहद खुशी महसूस हुई हो। उसके बारे में बताइए।
2. कभी–कभी लोग अपने जीवन मूल्यों, आदर्शों और त्याग के कारण ज्यादा अमूल्य वस्तुओं को छोडकर साधारण वस्तुओं का चयन करते हैं। आपके अनुभव में भी ऐसी घटनाएँ होंगी जब आपने ऐसा कुछ होते देखा–पढ़ा अथवा सुना हो। एक या दो उदाहरण लिखिए।
3. क्या आज भी हमारे समाज में महिलाओं के साथ भेद–भाव होता है? तर्क देकर अपनी बात को पुष्ट कीजिए।
4. आज भी हमारे देश में जाति और संप्रदाय के नाम पर झगड़े होते हैं। आपके अनुसार इसके क्या कारण हैं? इन कारणों का समाधान किस तरह से किया जा सकता है? विचार कर लिखिए।
5. मध्यकाल के कवियों के बारे में कहा जाता है कि वे अशिक्षित या अल्पशिक्षित थे फिर भी उन्होंने अच्छे ग्रंथों और काव्यों की रचना की। वे ऐसा कैसे कर पाए होंगे? अपने साथियों और शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।
6. वर्तमान समय में समाज का झुकाव भौतिक सौंदर्य के प्रति बढ़ता जा रहा है। इन परिस्थितियों में अध्यात्म के जरिए आन्तरिक सौंदर्य की ओर उन्मुख होना (लौटना) आपकी समझ में कितना महत्व रखता है? शिक्षक से चर्चा कीजिए और लिखिए।

4B4K2V

भाषा के बारे में

1. पाठ में दी गई कविताओं में ऐसे शब्द आए हैं जिनका चलन आजकल नहीं है। उन्हें पहचान कर लिखिए।
2. पाठ में प्रयोग हुई भाषा आपके घर की भाषा से किस प्रकार भिन्न है? इससे मिलते–जुलते शब्द आपकी भाषा मे भी होंगे। उन्हें छाँट कर लिखिए।
3. अपने शिक्षक और सहायक पुस्तक की मदद लेकर इस बात पर चर्चा करें की गद्य और पद्य की भाषा में किस प्रकार का अंतर होता है?
4. कविता में लय और गेयता लाने के लिए भाषा की स्वर ध्वनियों को लघु (। = ह्रस्व) और गुरु (ऽ = दीर्घ) के अनुसार उपयोग किया जाता है। स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहा जाता है। इन स्वरों को ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत इन तीन वर्गों में बाँटा गया है।

ह्रस्व स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है उसे ह्रस्व स्वर (वर्ण) कहते हैं। यथा – अ, इ, उ, ऋ, और अनुनासिक।

दीर्घ स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है उसे दीर्घ स्वर (वर्ण) कहते हैं। यथा – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (अनुस्वार एवं संयुक्ताक्षर के पहले का वर्ण)

प्लुत स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में दो से अधिक मात्रा का समय लगता है उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। **वैदिक मंत्रों एवं संगीत में इन स्वरों का उपयोग किया जाता है।**

नीचे दो पंक्तियों में इन मात्राओं को गिनने का प्रयास किया गया है–

।। ऽ	।	।। ऽ	ऽ ।	। ऽ।	= 16 मात्राएँ,
अजहूँ	न	निकसे	प्रान	कठोर	

।।।	। ऽ	। । ऽ	। ।	ऽ ऽ,	। ।ऽ	। ऽ	। । ऽ।	= 17, 11 = 28 मात्राएँ
अवधि	गई	अजहूँ	नहि	आए,	कतहुं	रहे	चितचोर	

इसी गणना के आधार पर छंद की पहचान की जाती है। यह 28 मात्रा वाला हरिगीतिका छंद है। इसी प्रकार आप भी मीरा के पदों में मात्राओं की गणना कीजिए और छंद का नाम शिक्षक से पता कीजिए।

योग्यता विस्तार –

1. छत्तीसगढ़ में भी कई महान संत हुए हैं। आप उनकी रचनाओं को संग्रहित कीजिए और मित्रों के साथ उन पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ में से अपनी पसंद के पदों की लय बनाकर संगीतमय प्रस्तुति कीजिए।
3. कबीरदास जी की साखियों को ढूंढ कर पढ़िए व आपस में चर्चा कीजिए।

पाठ – 7.2

मैं लेखक कैसे बना

अमृतलाल नागर

जीवन परिचय

अमृत लाल नागर का जन्म आगरा में 1917 में हुआ था। पारिवारिक पृष्ठभूमि से सम्पन्न अमृतलाल नागर का आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान है, उनके कई उपन्यास जैसे नाच्यो बहुत गोपाल, सुहाग के नूपुर, अमृत और विष, बूँद और समुद्र, मानस का हंस को अनेक संस्थानों से पुरस्कृत किया गया। उन्होंने कहानी, नाटक, यात्रावृत्त, संस्मरण और अनेकानेक विधाओं में रचना की है। उन्होंने लखनऊ आकाशवाणी में लंबे समय तक काम किया और अनेक संस्थानों में प्रमुख पदों पर रहे। उनकी मृत्यु फरवरी 1990 में लखनऊ में हुई।

अपने बचपन और नौजवानी के दिनों का मानसिक वातावरण देखकर यह तो कह सकता हूँ कि अमुक–अमुक परिस्थितियों ने मुझे लेखक बना दिया, परंतु यह अब भी नहीं कह सकता कि मैं लेखक ही क्यों बना। मेरे बाबा जब कभी लाड़ में मुझे आशीर्वाद देते तो कहा करते थे कि ''मेरा अमृत जज बनेगा।'' कालांतर में उनकी यह इच्छा मेरी इच्छा भी बन गई। अपने बाबा के सपने के अनुसार ही मैं भी कहता कि विलायत जाऊँगा और जज बनूँगा।

हमारे घर में सरस्वती और गृहलक्ष्मी नामक दो मासिक पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती थीं। बाद में कलकत्ते से प्रकाशित होने वाला पाक्षिक या साप्ताहिक हिंदू–पंच भी आने लगा था। उत्तर भारतेंदु काल के सुप्रसिद्ध हास्य–व्यंग्य लेखक तथा संपादक पं. शिवनाथजी शर्मा मेरे घर के पास ही रहते थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र से मेरे पिता की घनिष्ठ मैत्री थी। उनके यहाँ से भी मेरे पिता जी पढ़ने के लिए अनेक पत्र–पत्रिकाएँ लाया करते थे। वे भी मैं पढ़ा करता था। हिंदी रंगमंच के उन्नानयक राष्ट्रीय कवि पं. माधव शुक्ल लखनऊ आने पर मेरे ही घर पर ठहरते थे। मुझे उनका बड़ा स्नेह प्राप्त हुआ। आचार्य श्याम सुंदर दास उन दिनों स्थानीय कालीचरण हाई स्कूल के हेडमास्टर थे। उनका एक चित्र मेरे मन में आज तक स्पष्ट है– सुबह–सुबह नीम की दातुन चबाते हुए मेरे घर पर आना। इलाहाबाद बैंक की कोठी (जिसमें हम रहते थे) के सामने ही कंपनी बाग था। उसमें टहलकर दातून करते हुए वे हमारे यहाँ आते, वहीं हाथ–मुँह धोते फिर चाँदी के वर्क में लिपटे हुए आँवले आते, दुग्धपान

होता, तब तक आचार्य प्रवर का चपरासी 'अधीन' उनकी कोठी से हुक्का, लेकर हमारे यहाँ आ पहुँचता। आध–पौन घंटे तक हुक्का गुड़गुड़ाकर वे चले जाते थे। उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि पं. बृजनारायण चकबस्त, के दर्शन भी मैंने अपने यहाँ ही तीन–चार बार पाए। पं. माधव शुक्ल की दबंग आवाज और उनका हाथ बढ़ा–बढ़ाकर कविता सुनाने का ढंग आज भी मेरे मन में उनकी एक दिव्य झाँकी प्रस्तुत कर देता है। जलियाँवाला बाग कांड के बाद शुक्लजी वहाँ की खून से रँगी हुई मिट्टी एक पुड़िया में ले आए थे। उसे दिखाकर उन्होंने जाने क्या–क्या बातें मुझसे कही थीं। वे बातें तो अब तनिक भी याद नहीं पर उनका प्रभाव अब तक मेरे मन में स्पष्ट रूप से अंकित है। उन्होंने जलियाँवाला बाग कांड की एक तिरंगी तस्वीर भी मुझे दी थी। बहुत दिनों तक वो चित्र मेरे पास रहा। एक बार कुछ अंग्रेज अफसर हमारे यहाँ दावत में आने वाले थे, तभी मेरे बाबा ने वह चित्र घर से हटवा दिया। मुझे बड़ा दुख हुआ था। मेरे पिता जी आदि पूज्य माधव जी के निर्देशन में अभिनय कला सीखते थे, वह चित्र भी मेरे मन में स्पष्ट है। हो सकता है कि बचपन में इन महापुरुषों के दर्शनों के पुण्य प्रताप से ही आगे चलकर मैं लेखक बन गया होऊँ। वैसे कलम के क्षेत्र में आने का एक स्पष्ट कारण भी दे सकता हूँ।

सन् 28 में इतिहास प्रसिद्ध साइमन कमीशन दौरा करता हुआ लखनऊ नगर में भी आया था। उसके विरोध में यहाँ एक बहुत बड़ा जुलूस निकला था। पं. जवाहर लाल नेहरू और पं. गोविंद बल्लभ पंत आदि उस जुलूस के अगुवा थे। लड़काई उमर के जोश में मैं भी उस जुलूस में शामिल हुआ था। जुलूस मील डेढ़ मील लंबा था। उसकी अगली पंक्ति पर जब पुलिस की लाठियाँ बरसीं तो भीड़ का रेला पीछे की ओर सरकने लगा। उधर पीछे से भीड़ का रेला आगे की ओर बढ़ रहा था। मुझे अच्छी तरह से याद है कि दो चक्की के पाटों में पिसकर मेरा दम घुटने लगा था। मेरे पैर जमीन से उखड़ गए थे। दाएँ–बाएँ, आगे पीछे, चारों ओर की उन्मत्त भीड़ टक्करों पर टक्करें देती थी। उस दिन घर लौटने पर मानसिक उत्तेजना वश पहली तुकबंदी फूटी। अब उसकी एक ही पंक्ति याद है: 'कब लौं कहौं लाठी खाया करें, कब लौं कहौं जेल सहा करिए।'

वह कविता तीसरे दिन दैनिक आनंद में छप भी गई। छापे के अक्षरों में अपना नाम देखा तो नशा आ गया। बस मैं लेखक बन गया। मेरा खयाल है दो–तीन प्रारंभिक तुकबंदियों के बाद ही मेरा रुझान गद्य की ओर हो गया। कहानियाँ लिखने लगा। पं. रूपनारायण जी पांडेय 'कविरत्न' मेरे घर से थोड़ी दूर पर ही रहते थे। उनके यहाँ अपनी कहानियाँ लेकर पहुँचने लगा। वे मेरी कहानियों पर कलम चलाने के बजाय सुझाव दिया करते थे। उनके प्रारंभिक उपदेशों की एक बात अब तक गाँठ में बँधी है। छोटी कहानियों के संबंध में उन्होंने बतलाया था कि कहानी में एक ही भाव का समावेश करना चाहिए। उसमें अधिक रंग भरने की गुंजाइश नहीं होती।

सन 1929 में निराला जी से परिचय हुआ और तब से लेकर 1939 तक वह परिचय दिनों–दिन घनिष्ठ होता ही चला गया। निराला जी के व्यक्तित्व ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया। आरंभ में यदा–कदा दुलारेलालजी भार्गव के सुधा कार्यालय में भी जाया–आया करता था। मिश्रबंधु बड़े आदमी थे। तीनों भाई एक साथ लखनऊ में रहते थे। तीन–चार बार उनकी कोठी पर भी दर्शनार्थ गया था। अंदरवाले बैठक में एक तखत पर तीन मसनदें और लकड़ी के तीन कैशबाक्स रक्खे थे। मसनदों के सहारे बैठे उन तीन साहित्यिक महापुरुषों की छवि आज तक मेरे मानस पटल पर ज्यों की त्यों अंकित है। रावराजा पंडित श्यामबिहारी मिश्र का एक उपदेश भी उन दिनों मेरे मन में घर कर गया था। उन्होंने कहा था, साहित्य को टके कमाने का साधन कभी नहीं बनाना चाहिए। चूँकि मैं खाते–पीते खुशहाल घर का लड़का था, इसलिए इस सिद्धांत ने मेरे मन पर बड़ी छाप छोड़ी। इस तरह सन 29–30 तक मेरे मन में यह बात एकदम स्पष्ट हो चुकी थी कि मैं लेखक ही बनूँगा।

काशी में उन दिनों अनेक महान साहित्यिक रहा करते थे। वहाँ भी जाना–आना शुरू हुआ। साल में दो चक्कर लगा आता था। शरतचंद्र चट्टोपाध्योय के दर्शन पाकर मैं स्फूर्ति से भर जाता था। शरत बाबू हिंदी मजे की बोल लेते थे। मुझसे कहने लगे, 'स्कूल कॉलेज में पढ़ते समय बहुत से लड़के कविताएँ–कहानियाँ लिखने लगते हैं, लेकिन बाद में उनका यह अभ्यास छूट जाता है। इससे कोई लाभ नहीं। पहले यह निश्चय करो कि तुम आजन्म लेखक ही बने रहोगे।' मैंने सोत्साह हामी भरी। शरत बाबू ने अपना एक पुराना किस्सा सुनाया। 18–19 वर्ष की आयु में उन्होंने लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली थी। क्रमशः उनकी दो–तीन किताबें छपीं और वो चमत्कारिक रूप से प्रसिद्ध हो गए... तब एक दिन रास्ते में शरत बाबू को अपने कॉलेज जीवन के एक अध्यापक मिल गए। उनका नाम बाबू पाँच कौड़ी (दत्त, डे या बनर्जी) था। वे बांग्ला साहित्य के प्रतिष्ठित आलोचक भी थे। अपने पुराने शिष्य को देखकर उन्होंने कहाः 'शरत, मैंने सुना है कि तुम बहुत अच्छे लेखक हो गए हो लेकिन तुमने अपनी किताबें पढ़ने को नहीं दी।' शरत बाबू संकुचित हो गए, विनयपूर्वक बोलेः 'वे पुस्तकें इस योग्य नहीं कि आप जैसे पंडित उन्हें पढ़ें।' पाँच कौड़ी बाबू बोलेः 'खैर, पुस्तकें तो मैं कहीं से लेकर पढ़ लूँगा, पर चूँकि अब तुम लेखक हो गए हो इसलिए मेरी तीन बातें ध्यान में रखना। एक तो जो लिखना सो अपने अनुभव से लिखना। दूसरे अपनी रचना को लिखने के बाद तुरंत ही किसी को दिखाने, सुनाने या सलाह लेने की आदत मत डालना। कहानी लिखकर तीन महीने तक अपनी दराज में डाल दो और फिर ठंडे मन से स्वयं ही उसमें सुधार करते रहो। इससे जब यथेष्ट संतोष मिल जाए, तभी अपनी रचना को दूसरों के सामने लाओ।' पाँच कौड़ी बाबू का तीसरा आदेश यह था कि अपनी कलम से किसी की निंदा मत करो।

अपने गुरु की ये तीन बातें मुझे देते हुए शरत बाबू ने चौथा उपदेश यह दिया कि यदि तुम्हारे पास चार पैसे हों तो तीन पैसे जमा करो और एक खर्च। यदि अधिक खर्चीले हो तो दो जमा करो और दो खर्च। यदि बेहद खर्चीले हो तो एक जमा करो और तीन खर्च। इसके बाद भी यदि तुम्हारा मन न माने तो चारों खर्च कर डालो, मगर फिर पाँचवाँ पैसा किसी से उधार मत माँगो। उधार की वृत्ति लेखक की आत्मा को हीन और मलीन कर देती है।

मैं यह तो नहीं कह सकता कि इन चारों उपदेशों को मैं शतप्रतिशत अमल में ला सकता हूँ, फिर भी यह अवश्य कह सकता हूँ कि प्रायः नब्बे फीसदी मेरे आचरण पर इन उपदेशों का प्रभाव पड़ा है।

सन 30 से लेकर 33 तक का काल लेखक के रूप में मेरे लिए बड़े ही संघर्ष का था। कहानियाँ लिखता, गुरुजनों से पास भी करा लेता परंतु जहाँ कहीं उन्हें छपने भेजता, वे गुम हो जाती थीं। रचना भेजने के बाद मैं दौड़–दौड़कर, पत्र–पत्रिकाओं के स्टाल पर बड़ी आतुरता के साथ यह देखने को जाता था कि मेरी रचना छपी है या नहीं। हर बार निराशा ही हाथ लगती। मुझे बड़ा दुख होता था, उसकी प्रतिक्रिया में कुछ महीनों तक मेरे जी में ऐसी सनक समाई कि लिखता, सुधारता, सुनाता और फिर फाड़ डालता था। सन 1933 में पहली कहानी छपी। सन 1934 में माधुरी पत्रिका ने मुझे प्रोत्साहन दिया। फिर तो बराबर चीजें छपने लगीं। मैंने यह अनुभव किया है कि किसी नए लेखक की रचना का प्रकाशित न हो पाना बहुधा लेखक के ही दोष के कारण न होकर संपादकों की गैर–जिम्मेदारी के कारण भी होता है, इसलिए लेखक को हताश नहीं होना चाहिए।

सन 1935 से 37 तक मैंने अंग्रेजी के माध्यम से अनेक विदेशी कहानियों तथा गुस्ताव लाबेर के एक उपन्यास मादाम बोवेरी का हिंदी में अनुवाद भी किया। यह अनुवाद कार्य मैं छपाने की नियत से उतना नहीं करता था, जितना कि अपना हाथ साधने की नीयत से। अनुवाद करते हुए मुझे उपयुक्त हिन्दी शब्दों की खोज करनी पड़ती थी। इससे मेरा शब्द भंडार बढ़ा। वाक्य गठन भी पहले से अधिक निखरा।

दूसरों की रचनाएँ, विशेष रूप से कर्मठ लोकमान्य लेखकों की रचनाएँ पढ़ने से लेखक को अपनी शक्ति और कमजोरी का पता लगता है। यह हर हालत में बहुत ही अच्छी आदत है। इसने एक विचित्र तड़प भी मेरे मन में जगाई। बार–बार यह अनुभव होता था कि विदेशी साहित्य तो अंग्रेजी के माध्यम से बराबर हमारी दृष्टि में पड़ता रहता है, किंतु देशी साहित्य के संबंध में हम कुछ नहीं जान पाते। उन दिनों हिंदी वालों में बांग्ला पढ़ने का चलन तो किसी हद तक था, लेकिन अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य हमारी जानकारी में प्रायः नहीं के बराबर ही था। इसी तड़प में मैंने अपने देश की चार भाषाएँ सीखीं। आज तो दावे से कह सकता हूँ कि लेखक के रूप में आत्म विश्वास बढ़ाने के लिए मेरी इस आदत ने मेरा बड़ा ही उपकार किया है। विभिन्न वातावरणों को देखना, घूमना, भटकना, बहुश्रुत और बहुपठित होना भी मेरे बड़े काम आता है। यह मेरा अनुभवजन्य मत है कि मैदान में लड़नेवाले सिपाही को चुस्त–दुरुस्त रखने के लिए जिस प्रकार नित्य की कवायद बहुत आवश्यक होती है, उसी प्रकार लेखक के लिए उपरोक्त अभ्यास भी नितांत आवश्यक है। केवल साहित्यिक वातावरण ही में रहनेवाला कथा लेखक मेरे विचार में घाटे में रहता है। उसे निस्संकोच विविध वातावरणों से अपना सीधा संपर्क स्थापित करना ही चाहिए।

(1962, टुकड़े–टुकड़े दास्तान में संकलित)

शब्दार्थ

घनिष्ठ – गहरी; **उन्नायक** – ऊपर उठाने वाले; **साइमन कमीशन** – अंग्रेजों के एक प्रतिनिधि मण्डल का नाम; **गुम** – खो जाना; **अमल में लाना** – व्यवहार में लाना; **सोत्साह** – उत्साह के साथ; **यथेष्ट** – जैसा जरूरी हो; **वृत्ति** – आदत।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक बनने के लिए शरत बाबू के क्या–क्या सुझाव थे?
2. अमृत लाल नागर ने अपने आत्मकथ्य में अपने युग के आंदोलनों का वर्णन किया है। उन आंदोलनों का लेखक पर क्या असर हुआ?
3. इस पाठ में लेखक ने अपने लेखक बनने के पीछे बहुत सारे कारणों को स्वीकार किया है। उन कारणों को लिखिए।
4. "साहित्य को टके कमाने का साधन कभी नहीं बनाना चाहिए।" ये कहने के पीछे क्या विचार हैं? लिखिए।
5. अंग्रेजों के दावत पर आने के पहले बाबा ने कौन सी तसवीर हटवा दी? उन्होंने उस तसवीर को क्यों हटवाया होगा ? अपने विचार लिखिए।

4C649G

पाठ से आगे

1. आप के मन में भी कुछ बनने के विचार आते होंगे। आप अलग–अलग समय पर क्या–क्या बनना चाहते रहे हैं? लिखिए। यह भी बताइए कि अभी आप क्या बनना चाहते हैं और क्यों?
2. लेखक ने बताया है कि उनके आस पास कई ऐसे लोग थे जिनसे वे प्रभावित हुए। आप के जीवन में भी कई लोग होंगे जिनसे आप प्रभावित होंगे। उनमें से किसी एक के बारे में संक्षेप में लिखिए।
3. किसी घटना का वर्णन कीजिए जिसका आप पर बहुत प्रभाव पड़ा हो।
4. पाठ के दूसरे अनुच्छेद में लेखक ने श्री श्यामसुंदर दास का एक चित्र अपने शब्दों से खींचा है। आप भी वैसे ही किसी व्यक्ति के बारे में लिखिए।

भाषा के बारे में

4CEZB4

1. पाठ में कई स्थानों पर अलग–अलग तरह के वाक्य प्रयुक्त हुए हैं। कुछ स्थानों पर क्रिया करने वाला यानी कर्ता महत्त्वपूर्ण है तो कहीं पर कर्म को ज्यादा महत्त्व दिया गया है।

जिस वाक्य में वाच्य बिन्दु 'कर्त्ता' है उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं। जैसे 'राम रोटी खाता है' तथा जिस वाक्य में वाच्य बिन्दु कर्त्ता न होकर कर्म हो वह कर्म वाच्य कहलाता है। जैसे – 'रोटी, राम के द्वारा खाई गई।'

आप पाठ में से खोजकर ऐसे वाक्यों को नीचे दी हुई तालिका के रूप में लिखिए–

क्र.सं.	कर्म वाच्य (काम को महत्त्व)	कर्तृ वाच्य (क्रिया करने वाले (कर्त्ता) को महत्त्व)
1.	इससे मेरा शब्द भंडार बढ़ा।	1. मैं लेखक बन गया।

2. अपने शिक्षक की सहायता से भाव वाच्य की परिभाषा लिखिए तथा उदाहरणों का संकलन कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. साइमन कमीशन के बारे में पता कीजिए। वह क्या था, और लोग उसका विरोध क्यों कर रहे थे? लिखिए।
2. अपने स्कूल के सामाजिक विज्ञान के शिक्षक से मिल कर राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में बात कीजिए और उसमें भाग लेने वाले नेताओं के बारे में लिखिए।
3. पाठ में कई बड़े लेखकों के नाम आए हैं। उनकी एक सूची बनाइए और पुस्तकालय से उनकी रचनाओं के नाम खोज कर लिखिए।

4CNVCR

पाठ – 7.3

जेबकतरा

ज्ञान प्रकाश विवेक

4CXREE

जीवन परिचय

ज्ञान प्रकाश विवेक वर्तमान में हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण नाम हैं। आपने कहानी, कविता और हिन्दी ग़ज़लें लिखी हैं और लघुकथाएँ भी। आपका जन्म हरियाणा के बहादुरगढ़ जिले में 1948 में हुआ था। अपके कई कहानी संग्रह (अलग–अलग दिशाएँ, शहर गवाह है, उसकी ज़मीन, शिकारगाह और मुसाफिरखाना) एक कविता संग्रह (दीवार से झांकती रौशनी) और ग़ज़ल संग्रह (धूप के हस्ताक्षर आँखों में आसमान) प्रकाशित हो चुके हैं। आपका एक उपन्यास 'दिल्ली दरवाज़ा' काफी मशहूर हुआ है। आपको हरियाणा साहित्य अकादमी ने तीन बार पुरस्कृत किया है।

लघु कथाएँ

बस से उतरकर जेब में हाथ डाला। मैं चौंक पड़ा। जेब कट चुकी थी। जेब में था भी क्या? कुल नौ रुपए और एक खत, जो मैंने माँ को लिखा था कि मेरी नौकरी छूट गई है। अभी पैसे नहीं भेज पाऊँगा...। तीन दिनों से वह पोस्ट कार्ड जेब में पड़ा था। पोस्ट करने को मन ही नहीं कर रहा था।

नौ रुपए जा चुके थे। यूँ नौ रुपए कोई बड़ी रकम नहीं थी, लेकिन जिसकी नौकरी छूट चुकी हो, उसके लिए नौ रुपये नौ सौ से कम नहीं होते।

कुछ दिन गुजरे माँ का खत मिला। पढ़ने से पूर्व मैं सहम गया। जरूर पैसे भेजने को लिखा होगा। लेकिन खत पढ़कर मैं हैरान रह गया। माँ ने लिखा था– "बेटा तेरा भेजा पचास रुपये का मनीऑर्डर मिल गया है। तू कितना अच्छा है रे... पैसे भेजने में कभी लापरवाही नहीं बरतता"

मैं इसी उधेड़बुन में लग गया कि आखिर माँ को मनी ऑर्डर किसने भेजा होगा?

कुछ दिन बाद एक और पत्र मिला। चंद लाइने थीं आड़ी तिरछी। बड़ी मुश्किल से खत पढ़ पाया।

लिखा था "भाई नौ रुपये तुम्हारे और इकतालीस रुपये अपनी अपनी ओर से मिला कर मैंने तुम्हारी माँ को मनी ऑर्डर भेज दिया है। फिकर मत करना... माँ तो सबकी एक जैसी होती है। वह क्यों भूखी रहे?"... तुम्हारा 'जेबकतरा।'

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक की माँ को जेबकतरे ने पैसे क्यों भेजे?
2. ''जिसकी नौकरी छूट चुकी हो, उसके लिए नौ रूपये नौ सौ से कम नहीं होते।'' लेखक ने ऐसा क्यो कहा है?
3. जेबकतरा कहानी पढ़ने के बाद मन में कौन से भाव जागृत होते हैं? लिखिए।

पाठ से आगे

4D7MG2

1. आपके हिसाब से कौन–कौन से काम गलत हैं?
2. अगर आपके पैसे खो जाएँ तो आपको कैसा महसूस होगा?
3. बेरोजगारी के कारण क्या–क्या हैं?
4. लेखक ने अपने साथ घटी एक घटना को कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। आप भी अपने साथ घटी किसी घटना को इसी प्रकार प्रस्तुत करें।

भाषा के बारे में

उधेड़बुन– मन की एक स्थिति जिसमें तर्क वितर्क चल रहा होता है। आप ऐसे दो अवसरों के बारे में सोच कर लिखिए जब आपके मन में उधेड़बुन चली हो।

4DGIHP

पाठ – 7.4

गोधूलि

हेक्टर ह्यू मुनरो 'साकी' (1870–1916)

4DQEJC

जीवन परिचय

साकी का जन्म 18 जनवरी, 1870 में बर्मा में हुआ। स्कॉटिश परिवार के हेक्टर साकी प्रारंभ में पत्रकार थे। वे कई वर्षों तक विदेश संवाददाता के रूप में काम करते रहे। 1908 से वे लंदन में बस गए। उनकी कहानियों में तत्कालीन समाज पर तीखा व्यंग्य निहित है। उनकी रचनाएँ अपने प्लॉट और झटकेदार अंत के लिए जानी जाती हैं। साकी का निधन 1916 में फ्रांस में हुआ।

नार्मन गॉर्टस्बी पार्क में एक बेंच पर बैठा हुआ था। उसके दाहिनी ओर शोर–शराबे से भरा हाइड पार्क स्थित था। मार्च का महीना, गोधूलि की बेला थी। सड़क पर अधिक लोग नहीं थे, फिर भी कई लोग विभिन्न मनःस्थितियों में इधर से उधर, एक बेंच से दूसरी तक घूमते नजर आ रहे थे।

गॉर्टस्बी को यह दृश्य पसंद आया, उसकी मौजूदा मनःस्थिति से वह मेल खाता था। गोधूलि, उसके अनुसार पराजय की घड़ी थी, जब पराजित तथा निराश स्त्री–पुरुष अपने को लोगों की नजरों से छिपा कर यहाँ आ बैठते थे। ऐसी घड़ी में उनके हाव–भाव, वेश–भूषा में कोई कृत्रिमता नहीं होती थी। उलटे वे उनकी ओर से उदासीन रहते थे, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उस मनःस्थिति में लोग उन्हें पहचान पाएँ। वहाँ बैठा–बैठा गॉर्टस्बी भी अपने को पराजित लोगों में मानने लगा। उसे धनाभाव नहीं था और यदि वह चाहता, तो अपने को समृद्धिशाली वर्ग में गिनवा सकता था। उसे तो पराजय का अनुभव हुआ था, अपनी किसी महत्वाकांक्षा को लेकर।

बेंच पर उसके बगल में ही एक वृद्ध बैठा था। उसके कपड़े–लत्ते विशेष अच्छे नहीं थे। फिर वह उठा और थोड़ी देर में आँखों से ओझल हो गया। अब उसकी जगह आकर बैठा एक युवक, जिसकी वेश–भूषा तो अच्छी थी, किन्तु जिसके चेहरे पर पहले वाले वृद्ध व्यक्ति की तरह ही खिन्नता तथा रुष्टता झलक रही थी।

– आप बहुत अच्छे मूड में नहीं लगते! गॉर्टस्बी ने उससे कहा। युवक ने बिना झिझक उसकी ओर ऐसे देखा कि वह संभल गया।

– आपका मूड भी अच्छा हरगिज नहीं होता, अगर आप मेरी तरह असहाय बन गए होते। मैंने अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी मूर्खता कर डाली है।

– ऐसा? गॉर्टस्बी ने उदासीनता से कहा।

– इस दोपहर में वर्कशायर स्क्वायर के पैंटागोनियन होटल में ठहरने के ख्याल से आया था। वहाँ पहुँचा, तो क्या देखता हूँ कि उसकी जगह पर एक थियेटर खड़ा है। टैक्सी ड्राइवर ने कुछ दूर पर एक दूसरे होटल की सिफारिश की। वहाँ पहुँच कर मैने घर पर होटल का पता देते हुए एक पत्र लिखा और साबुन की एक टिकिया खरीदने के विचार से निकला। साबुन साथ लाना मैं भूल गया था और होटल का साबुन इस्तेमाल में लाना मुझे पसंद नहीं। साबुन खरीद कर जब होटल लौटने को हुआ, तो सहसा खयाल आया कि न तो मुझे होटल का नाम याद है और न ही उस सड़क का, जिस पर वह स्थित है। मैं एक शिलिंग लेकर बाहर निकला था और साबुन की टिकिया खरीदने के बाद एक ही पेंस मेरे पास रह गया है। अब मैं रात को कहाँ जा सकता हूँ।

यह कहानी सुनाई जाने के बाद निस्तब्धता छाई रही।

– शायद आप सोच रहे हैं कि मैंने एक अनहोनी बात आपसे कह सुनाई है! युवक ने कुछ झुँझलाहट भरे स्वर में कहा।

– बिलकुल असंभव तो नही! गॉर्टस्बी ने दार्शनिक ढंग से कहा'– मुझे याद है कि कुछ वर्ष पहले एक विदेशी राजधानी में मैंने भी ऐसा ही किया था।

अब युवक उत्साहित होकर बोला– विदेशी नगर में यह परेशानी नहीं। यहाँ अपने ही देश में ऐसा हो जाने पर बात बिल्कुल भिन्न हो जाती है। जब तक कोई ऐसा भद्र व्यक्ति नहीं मिल जाता, जो मेरी आपबीती को सत्य

समझ कर मुझे कुछ रकम कर्ज के तौर पर दे, तब तक मुझे रात खुले आकाश में गुजारनी पड़ेगी। मुझे खुशी है कि आप मेरी आपबीती को सफेद झूठ नहीं मान रहे हैं।

– बात तो ठीक है, किन्तु आपकी कहानी का सबसे कमजोर मुद्दा यह है कि आप वह साबुन की टिकिया नहीं पेश कर सकते।

युवक जल्दी से आगे को सरक कर बैठ गया, जल्दी–जल्दी उसने जेबें टटोलीं और फुसफसाया–मैंने उसे खो दिया लगता है।

– होटल और साबुन की टिकिया, दोनों को एक ही अपराह्न में खो देना तो लापरवाही का ही सूचक माना जाएगा। किन्तु वह युवक उसकी अंतिम बात सुनने के लिए रुका नहीं।

बेचारा! गॉर्टस्बी ने सोचा, सारी कहानी में अपने लिए साबुन की टिकिया लेने जाना ही सच्चाई को प्रकट करने वाली एकमात्र बात थी और उसी ने बेचारे को दुखी कर दिया।

इन विचारों के साथ वहाँ से जाने के लिए गॉर्टस्बी उठा ही था कि ठिठक कर रह गया। क्या देखता है कि बेंच के बगल में नए रैपर में लिपटी हुई कोई वस्तु जमीन पर पड़ी है। वह वस्तु साबुन की टिकिया है, उसने सोचा। युवक की खोज में वह तेजी से लपका। अभी वह कुछ ही दूर चल पाया होगा कि उसने उस युवक को एक स्थान पर विमूढ़ावस्था में खड़ा पाया।

– आपकी कहानी का महत्वपूर्ण गवाह मिल गया है। गॉर्टस्बी ने रेपर में लिपटी टिकिया उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा– आप मुझे मेरे अविश्वास के लिए क्षमा करें। यदि एक गिनी से आपका काम चल सके, तो.....

युवक ने उसके द्वारा बढ़ाई गई गिनी को जेब में रखते हुए उसके संदेह को तत्काल दूर कर दिया।

'यह लीजिए मेरा कार्ड, पते के साथ'। इस सप्ताह में किसी भी दिन मेरा कर्ज आप लौटा सकते हैं। हाँ यह टिकिया भी लीजिए।

'भाग्यवश ही यह आपको मिल पाई!' कहने के साथ ही युवक नाइट ब्रिज की दिशा में तेजी से लुप्त हो गया।

'बेचारा!' गॉर्टस्बी ने सोचा।

अभी वापस लौटकर वह अपनी बेंच पर, जहाँ उपरोक्त नाटक घटित हुआ था, बैठने ही वाला था कि उसने एक वृद्ध को बेंच के चारों ओर झुककर कुछ तलाश करते पाया। उसने यह जान लिया कि वह वही वृद्ध था, जो कुछ देर पहले उस बेंच का सहभागी था।

क्या आपका कुछ खो गया है? उसने सहानुभूतिपूर्वक पूछा।

हाँ, साबुन की एक टिकिया।

अभ्यास

पाठ से

1. युवक की बात पर गार्टस्बी को विश्वास क्यों नहीं हुआ?
2. गॉर्टस्बी को कैसे विश्वास हुआ कि युवक सच बोल रहा है?
3. कहानी सुनाए जाने के बाद निस्तब्धता क्यों छा गई?
4. साबुन की टिकिया वास्तव में किसकी थी? और क्यों?
5. कहानी में से वे बिन्दु छाँट कर लिखिए जहाँ पर परिस्थिति बदलती है।

पाठ से आगे

1. गॉर्टस्बी को एक दृश्य पसंद आया। उसका वर्णन कहानी में मिलता है। आपको भी कई बार कुछ दृश्य पसंद आए होंगे। उनमें से किसी एक दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. कहानी के घटनाक्रम में स्थिति कई बार बदलती है। ऐसा जीवन में भी होता है। आप भी ऐसा कोई उदाहरण लिखिए।

4Q4HZH

इकाई 8 हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिंदी साहित्य का इतिहास

साहित्य के इतिहास का अध्ययन विभिन्न काल की परिस्थितियों और प्रवृत्तियों के आधार पर किया जाता है इसलिए काल विभाजन की प्रक्रिया द्वारा प्रत्येक काल की सीमा का निर्धारण किया जाता है। विभिन्न युगों में साहित्यिक प्रवृत्तियों की शुरुआत, उनका उतार—चढ़ाव उनकी सीमा का निर्धारण करती हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि किसी काल विशेष में जो प्रवृत्तियाँ हैं, वे एकदम खत्म हो जाती हैं या उनमें एकदम परिवर्तन आ जाता है। काल विशेष में चलने वाली प्रवृत्तियाँ कमोबेश होती हुयी विलुप्त होने लगती हैं, और अन्य प्रवृत्तियाँ मुख्य रूप धारण करने लगती हैं।

हिंदी साहित्य के आरम्भ काल को स्थिर करने की समस्या सदा से रही है। काल—सीमा— निर्धारण के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। जार्ज ग्रियर्सन, मिश्रबंधु, रामकुमार वर्मा आदि इतिहासकार अपभ्रंश भाषा के उत्तरवर्ती रूप को हिंदी का आदिम रूप मानकर उसकी शुरुआत संवत 700 से मानते हैं। जार्ज ग्रियर्सन ने हिंदी साहित्य का क्षेत्र भाषा की दृष्टि से निर्धारित किया जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि हिंदी साहित्य में संस्कृत, प्राकृत, अरबी, फारसी मिश्रित उर्दू को समाहित किया जा सकता है।

'जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ—साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।' जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है। कारण स्वरूप इन परिस्थितियों का किंचित् दिग्दर्शन भी साथ ही साथ आवश्यक होता है। इस दृष्टि से हिंदी साहित्य का विवेचन करने में यह बात ध्यान में रखनी होगी कि किसी विशेष समय में लोगों में रुचिविशेष का संचार और पोषण किधर से और किस प्रकार हुआ। उपर्युक्त व्यवस्था के अनुसार हिंदी साहित्य के 900 वर्षों के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया जा सकता है –

आदिकाल (वीरगाथाकाल संवत् 1050–1375)

मध्यकाल (भक्तिकाल, संवत् 1375–1700)

उत्तरमध्य काल (रीतिकाल, संवत् 1700–1900)

आधुनिक काल (गद्य काल, संवत् 1900–1984)

यद्यपि इन कालों की रचनाओं की विशेष प्रवृत्ति के अनुसार ही इनका नामकरण किया गया है, पर यह न समझना चाहिए कि किसी विशेष काल में और प्रकार की रचनाएँ होती ही नहीं थीं। जैसे भक्तिकाल या रीतिकाल को लें तो उसमें वीररस के अनेक काव्य मिलेंगे जिनमें राजाओं की प्रशंसा उसी ढंग से की गई हैं जिस ढंग की वीरगाथाकाल में हुआ करती थी। अतः प्रत्येक काल का वर्णन इस प्रणाली पर किया जाएगा कि पहले तो उक्त काल की विशेष प्रवृत्ति सूचक उन रचनाओं का वर्णन होगा जो उस काल के लक्षण के अंतर्गत होंगी, उसके बाद संक्षेप में उनके अतिरिक्त और प्रकार की रचनाओं का ध्यान देने योग्य उल्लेख किया जाना प्रासंगिक प्रतीत होता है।

आदिकाल (वीरगाथाकाल संवत् 1050–1375)

आदिकाल को हिंदी साहित्य के अन्य इतिहासकारों ने कई और नाम दिए हैं, जिनमें मुख्य रूप से डॉ० रामकुमार वर्मा ने इस काल को संधि काल नाम से अभिहित किया है। राहुल सांस्कृत्यायन इस काल को सिद्ध सामंत काल कहते हुए यह मानते हैं कि सिद्ध काव्य हिंदी का काव्य ही है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने जब इस काल का नामकरण किया था, उस समय इस काल की अनेक रचनाएँ और ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध थी। जिन बारह रचनाओं को शुक्ल जी ने नामकरण का आधार बनाया, उनमे से कुछ संदिग्ध हैं तथा कुछ परवर्ती रचनाएँ हैं। इन रचनाओं के आधार पर इस काल की साहित्यिक प्रवृत्तियो की रूप रेखा स्पष्ट नहीं है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी और डॉ० धीरेन्द्र वर्मा इस काल को अपभ्रंश काल कहते हैं। उनके द्वारा रखा गया यह नाम भाषा की प्रधानता पर आधारित है जबकि साहित्य के किसी काल का नामकरण उस काल की विशेष साहित्यिक प्रवृत्तियों या वर्णित प्रतिपाद्य विषय के आधार पर होना चाहिए। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस काल को आदिकाल कहना उचित समझते हैं।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस काल को बीजवपन काल के नाम से पुकारा है। कुछ विद्वानों ने इस काल को प्रारंभिक काल, आविर्भाव काल भी कहा है। ये नाम वास्तव में 'आदिकाल' नाम में ही समाहित हो जाते हैं। इस प्रकार सामान्यतः इस कालखंड को आदिकाल के नाम से जाना जाता है।

आदिकालीन साहित्य की प्रवृतियाँ –

ग्यारहवीं सदी में लगभग देशभाषा हिंदी का रूप अधिक स्फुट होने लगा। उस समय पश्चिमी हिंदी प्रदेश में अनेक छोटे छोटे राजपूत राज्य स्थापित हो गए थे। ये परस्पर अथवा विदेशी आक्रमणकारियों से प्रायः युद्धरत रहा करते थे। इन्हीं राजाओं के संरक्षण में रहनेवाले चारणों और भाटों का राजप्रशस्तिमूलक काव्य वीरगाथा के नाम से अभिहित किया गया। इन वीरगाथाओं को रासो कहा जाता है। इनमें आश्रयदाता राजाओं के शौर्य और

पराक्रम का ओजस्वी वर्णन करने के साथ ही उनके प्रेम–प्रसंगों का भी उल्लेख है। रासो ग्रन्थों में संघर्ष का कारण प्रायः प्रेम दिखाया गया है। इन रचनाओं में इतिहास और कल्पना का मिश्रण है। रासो वीरगीत (बीसलदेवरासो और आल्हा आदि) और प्रबंधकाव्य (पृथ्वीराजरासो, खुमाणरासो आदि)– इन दो रूपों में लिखे गए। इन रासो ग्रन्थों में से अनेक की उपलब्ध प्रतियाँ चाहे ऐतिहासिक दृष्टि से संदिग्ध हों पर इन वीरगाथाओं की मौखिक परंपरा अंसदिग्ध है। इनमें शौर्य और प्रेम की ओजस्वी और सरस अभिव्यक्ति हुई है।

इसी कालावधि में मैथिल कोकिल विद्यापति हुए जिनकी पदावली में मानवीय सौंदर्य ओर प्रेम की अनुपम व्यंजना मिलती है। कीर्तिलता और कीर्तिपताका इनके दो अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। अमीर खुसरो का भी यही समय है। इन्होंने ठेठ खड़ी बोली में अनेक पहेलियाँ, मुकरियाँ रचे हैं। इनके गीतों, दोहों की भाषा ब्रजभाषा है।

इसके आलावा आदिकाल में अन्य प्रमुख साहित्य धाराएँ रहीं हैं –

- जैन साहित्य
- सिद्ध साहित्य
- नाथ साहित्य
- लोक साहित्य

भक्तिकाल (1300 से 1643 ई.)

यद्यपि अन्य युगों की भाँति भक्ति–काल में भी भक्ति–काव्य के साथ–साथ अन्य प्रकार की रचनाएँ होती रहीं, तथापि प्रधानता भक्तिपरक रचनाओं की ही रही। इसलिए भक्ति की प्रधानता के कारण चौदहवीं शती के मध्य से लेकर सत्रहवीं शती के मध्य तक के काल को भक्ति–काल कहना सर्वथा युक्तियुक्त है।

भारतीय इतिहास का मध्यकाल कई मायनों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों का काल रहा है यह परिवर्तन न केवल राजनीति बल्कि समाज, संस्कृति, कला और साहित्य इत्यादि के क्षेत्र में भी असरकारी रहा। इस काल अवधि को युग परिवर्तक कहा जाता है। वह यही समय है मुगल सल्तनत भारत में स्थापित हो गया और इस्लाम के आने और फैलने के साथ–साथ हिन्दू–मुस्लिम जनता के बीच आपसी सौहार्द, सद्भाव, सामाजिक और सांस्कृतिक संपर्क भी बढ़ा इसी समय समाज के हाशिये से उठकर संत कवि मुख्य धारा में अपनी वाणियों के साथ आये, जिनमें ऊँच–नीच और जाति–पाति के भेद का नकार था। उन्होंने धार्मिक कट्टरवाद का भी मुखर विरोध किया। सामाजिक तौर पर इतने बड़े पैमाने पर बदलाव के आने के पीछे एक बड़ी वैचारिक पृष्ठभूमि का होना स्वाभाविक था क्योंकि सामाजिक तौर पर ऐसा प्रखर स्वर किसी एक दिन के विचार प्रक्रिया की उपज नहीं हो सकती, न ही आम जनता के लिए शंकराचार्य का ज्ञान मार्ग और अद्वैतवाद बहुत सहज और सरल रह गया था। भक्ति आन्दोलन सामाजिक जड़ता से निकलने की बेचौनी से उपजा आन्दोलन था, जो अपने सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों से उपजा

लोक का, आमजन का अपना आन्दोलन था. इसीलिए मध्य काल का यह आंदोलन अपने मूल रुप में एक धार्मिक–सांस्कृतिक आंदोलन है।

के. दामोदरन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारतीय चिंतन परंपरा' में इस विषय पर बात करते हुए लिखते हैं "भक्ति आन्दोलन उस समय आरम्भ हुआ था, जब हिन्दू और मुसलमान पुरोहितों और उनके द्वारा समर्पित और समृद्ध किये गए निहित स्वार्थों के खिलाफ संघर्ष एक ऐतिहासिक आवश्यकता बन गया था। जनता को, जो अब तक क्षेत्रीय और स्थानीय निष्ठाओं से आबद्ध थी और युगों पुराने अन्धविश्वास और दमन–शोषण के बावजूद हतोत्साह नहीं हुई थी को जगाया जाना और अपने हितों तथा आत्म–सम्मान की भावना के लिए उसे एक किया जाना आवश्यक था। स्थानीय बोलियों और क्षेत्रीय भाषाओं को, एकता स्थापित करने वाली राष्ट्र भाषाओं के स्तर पर उठाना था। इस आंदोलन के चरित्र पर दामोदरन आगे भी लिखते हैं। "भक्ति आंदोलन ने देश के भिन्न–भिन्न भागों में, भिन्न–भिन्न मात्राओं में तीव्रता और वेग ग्रहण किया. यह आंदोलन विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ. किन्तु कुछ मूलभूत सिद्धांत ऐसे थे, जो समग्र रूप से पूरे आन्दोलन पर लागू होते थे। **पहला–** धार्मिक विचारों के बावजूद जनता की एकता को स्वीकार करना **दूसरा–**ईश्वर के समक्ष सबकी समानता **तीसरा–**जाति प्रथा का विरोध **चौथा–**यह विश्वास कि मनुष्य और ईश्वर के बीच तादात्म्य, प्रत्येक मनुष्य के सद्‌गुणों पर निर्भर करता है, न कि उसकी ऊँची जाति अथवा धन–सम्पति पर। **पांचवा–**इस विचार पर जोर कि भक्ति ही आराधना का उच्चतम स्वरुप है और अंत में कर्मकांडों, मूर्तिपूजा, तीर्थाटनों और अपने को दी जाने वाली यंत्रणाओं की निंदा। भक्ति आन्दोलन मनुष्य की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता था।"

भक्तिकाल को रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास में विभाजित किया जो निम्न प्रकार से हैं–

- निर्गुण काव्यधारा
- ज्ञानमार्गी शाखा या संत काव्यधारा
- प्रेममार्गी शाखा या सूफी काव्यधारा

सगुण काव्यधारा

- रामभक्ति शाखा
- कृष्णभक्तिशाखा

निर्गुण शाखा

भक्ति की इस शाखा में केवल ज्ञान–प्रधान निराकार ब्रह्म की उपासना की प्रधानता है। इसमें प्रायः मुक्तक काव्य रचे गये। दोहा और पद आदि स्फुट छंदों का प्रयोग हुआ है। ये कवि अक्सर देश के तमाम हिस्सों में भ्रमण

करते रहते थे और आम जन से मिलते जुलते रहते थे इसलिए इनकी भाषा में अनेक भाषाओं का पुट मिलता है जिसे रामचंद्र ने खिचड़ी एवं सधुक्कड़ी भाषा कहा है। इन रचनाकारों की रचनाओं का प्रमुख रस शांत है। इस काल के प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ निम्न हैं–

प्रमुख कवि– रचनाएँ

- कबीरदास– बीजक (साखी, सबद, रमैनी)
- दादू दयाल– साखी, पद
- रैदास– पद
- गुरु नानक– गुरु ग्रन्थ साहब में महला

प्रेममार्गी या सूफी काव्यधारा

इस शाखा में प्रेम–प्रधान निराकार ब्रह्म की उपासना का प्राधान्य था। इस काल में सूफी कवियों ने आत्मा को प्रियतम मानकर हिन्दू प्रेम कहानियों का वर्णन किया है। हिन्दू–मुस्लिम एकता इस शाखा की प्रमुखता है। इस काल के सभी महाकाव्य प्रेमकथाओं पर आधारित हैं,जो शास्त्रीय कसौटी पर खरे उतरते हैं। इस शाखा के प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ निम्न हैं–

प्रमुख कवि रचनाएँ

- मलिक मोहम्मद जायसी – पद्‌मावत, अखरावट, आखरी कलाम
- कुतुबन – मृगावती
- मंझन – मधुमालती
- उसमान – चित्रावली

सगुण रामभक्ति शाखा

इस काल में भगवान श्रीराम के सत्य, शील एवं सौन्दर्य प्रधान अवतार की उपासना की गयी है। इस काल में प्रबंध एवं मुक्तक दोनों प्रकार की काव्यों की रचना की गयी। इस काल में प्रमुख रूप से अवधी और ब्रजभाषा का उपयोग हुआ और कई छन्दों में रचनाएँ हुई। इस काल के काव्य में सभी रसों का समावेश हुआ, किन्तु शांत और श्रृंगार प्रधान रस है। इस शाखा के प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ निम्न हैं–

प्रमुख कवि रचनाएँ

गोस्वामी तुलसीदास – रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली

नाभादास – भक्तमाल

स्वामी अग्रदास – रामध्यान मंजरी

रघुराज सिंह – राम स्वयंवर

सगुण कृष्णभक्ति शाखा–

इस शाखा के कवियों ने भगवान कृष्ण की उपासना की है। इस शाखा में केवल मुक्तक काव्यों की रचना हुई। कृष्ण भक्ति के सभी पद ब्रजभाषा की माधुर्य भाव से ओत–प्रोत है।इस शाखा के कवियों ने मुख्यतः मुक्त छंद में रचनाएँ की हैं। इस काल में कवि सूरदास ने वात्सल्य रस को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। इस शाखा के प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ निम्न हैं–

प्रमुख कवि – रचनाएँ

- सूरदास – सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी
- नंददास – पंचाध्यायी
- कृष्णदास – भ्रमर–गीत, प्रेमतत्त्व
- परमानन्ददास – ध्रुवचरित, दानलीला
- चतुर्भुजदास – भक्तिप्रताप, द्वादश–यश
- नरोत्तमदास – सुदामा चरित
- रहीम– दोहावली, सतसई
- मीरा – नरसी का माहरा, गीत गोविन्द की टीका, पद

भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताएँ–

- ईश्वर के सगुण तथा निर्गुण रूप की उपासना
- गुरु की महिमा का गुणगान

- ईश्वर के नाम की महिमा।
- लोक की भाषाओं–ब्रज एवं अवधी का काव्य में प्रयोग।
- ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना।
- दीनता की अभिव्यक्ति।
- बाह्याडम्बरों का विरोध।
- मानवतावादी धर्म की महत्ता।
- व्यंग्यात्मक उपालम्भ शैली का प्रयोग।
- कविता में स्वान्तः सुखाय की भावना।

उत्तरमध्य काल (रीतिकाल, संवत् 1643–1857)

हिंदी साहित्य में उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल के नाम से जानते हैं, इसकी समय सीमा सन1643 से 1857तक ठहरती है। रीति शास्त्र के प्रमुख आचार्य वामन ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्यालंकार' में रीति को काव्य की आत्मा कहा– 'रीतिर्रात्मा काव्यस्य' इसे और स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि विशिष्ट पद रचना रीति अर्थात काव्य में यदि विशिष्ट रचना का उपयोग किया गया है, तो वह रीति काव्य है आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसका कार्यकाल सम्वत 1650 से 1900 तक बताया है। लेकिन उससे पहले ही राष्ट्रीय आंदोलन का आरम्भ हो गया था और भारतेन्दु आदि रचनाकारों के लेखन में आधुनिक प्रवृत्तियां दिखने लगीं थीं, इसलिए इस काल को 1857 तक ही मानना चाहिए। रीति काल के ग्रंथों का अवलोकन करने पर शृंगार रस की प्रधानता, अलंकारों की बहुलता, मुक्तक शैली की प्रधानता, नारी का भोग्या स्वरुप, लक्षण ग्रंथों की बहुलता, प्रकृति का उद्दीपन रूप, सामन्ती अभिरुचि, भक्ति एवं वैराग्य का मिश्रण, आश्रयदाता की प्रशंसा रूप आदि प्राप्त होते हैं।

रीतिकाल के नामकरण को लेकर हिंदी साहित्य आलोचकों में बहुत मतभेद रहा है।अपने अध्ययन और समझ के अनुसार विभिन्न विद्वानों ने इसे नये–नये नाम से पुकारा. उन्होंने अपने नामकरण के पीछे निहित तथ्यों को भी बताया. जो इस प्रकार है–

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल – रीतिकाल
- आचार्य मिश्र बन्धु – अलंकृत काल
- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – श्रृंगार काल

- डॉ. रसाल – कला काल

रीतिकाल की रचनाओं को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1.रीतिबद्ध काव्य धारा– इस काव्यधारा के अंतर्गत आने वाले कवि मुख्य रूप से आचार्य हैं. उन्होंने अपनी कविताओं में शास्त्रीय ढंग का उपयोग किया है. इन सभी ने कविता के साथ–साथ लक्षण ग्रंथों की भी रचना की है.

उदाहरण

गोर गात, पातरी, न लोचन समात मुख,

उर उरजातन को बात अवरो हिये,

हंसति कहत बात, फूल से झरत जात,

ओठ अवदात राति, देखि मन मोहिये

रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि चिंतामणि, केशवदास, मतिराम, देव, कुलपति, भिखारीदास, पद्माकर, ग्वाल आदि हैं।

2. रीतिसिद्ध काव्यधारा – इस काव्यधारा के अंतर्गत आने वाले कवियों ने लक्षण ग्रंथों की रचना तो नहीं की लेकिन लक्षण ग्रंथों का खूब गहराई से अध्ययन किया, जिसके कारण जब उन्होंने काव्य रचना कार्य शुरू किया तो लक्षण ग्रन्थ द्वारा निर्धारित सीमाओं का ध्यान रखा।

रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि बिहारी, रसनिधि, सेनापति आदि हैं।

उदाहरण

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहीं कोय,

ज्यों–ज्यों बूड़े श्याम रंग, त्यों–त्यों उज्जवल होय।

3.रीतिमुक्त काव्यधारा– इस काव्यधारा के कवियों ने लक्षण ग्रंथों द्वारा निर्धारित काव्य रचने की परिपाटी का ख्याल नहीं रखा। स्वच्छंद होकर काव्य रचना की। जिसके कारण उनके कविताओं का स्वरुप जनमानस के अधिक करीब रहा। इनकी रचनाओं में विशुद्ध प्रेम का उत्कृष्ट रूप मिलता है।

उदाहरण

भये अति निठुर, मिटाय पहिचान डारी,

याही दुःख हमें जक, लागी हाय–हाय है,

तुम तो निपट निरदई, गयी भूलि सुधि,

हमें शूल–सेलनि सो क्यूँ ही न भुलाय है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि नामकरण के रूप में आचार्य रामचंद शुक्ल का नामकरण ज्यादा समीचीन है। उन्होंने नामकरण के लिए केवल शास्त्रीय सहारा नहीं लिया है, बल्कि अध्ययन और उस काल के ग्रंथों की वैज्ञानिकता को भी तरजीह दी है। इसी तरह तीनों धाराओं के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इसे पूर्णता ही प्रदान की है।

रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि घनानंद, बोधा, ठाकुर, आलम, द्विजदेव आदि हैं।

आधुनिक काल (गद्य काल, संवत् 1857 से अब तक)

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल भारत के इतिहास के बदलते हुए स्वरूप से प्रभावित था। स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना का प्रभाव साहित्य में भी आया। भारत में औद्योगीकरण का प्रारंभ होने लगा था। आवागमन के साधनों का विकास हुआ। अंग्रेजी और पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव बढ़ा और जीवन में बदलाव आने लगा। ईश्वर के साथ–साथ मानव को समान महत्व दिया गया। भावना के साथ–साथ विचारों को पर्याप्त प्रधानता मिली। पद्य के साथ–साथ गद्य का भी विकास हुआ और छापेखाने के आते ही साहित्य के संसार में एक नयी क्रांति हुई।

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल अपने पिछले तीनों कालों से सर्वथा भिन्न है। आदिकाल में डिंगल, भक्तिकाल में अवधी और रीतिकाल में ब्रज भाषा का बोल–बाला रहा, वहीं इस काल में आकर खड़ी बोली का वर्चस्व स्थापित हो गया। अब तक के तीनों कालों में जहां पद्य का ही विकास हुआ था,वहीं इस युग में गद्य और पद्य समान रूप से व्यवहृत होने लगे। प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से भी इस युग में नवीनता का समावेश हुआ। जहां पुराने काल के कवियों का दृष्टिकोण एक सीमित क्षेत्र में बँधा हुआ रहता था, वहाँ आधुनिक युग के कवियों ने समाज के व्यवहारिक जीवन का व्यापक चित्रण करना शुरु किया। इसलिए इस युग की कविता का फलक काफी विस्तृत हो गया। राजनीतिक चेतना,समाज सुधार की भावना, अध्यात्मवाद का संदेश आदि विविध विषय इस काल की कविता के आधार बनते गए हैं ।

आधुनिक युग की विस्तृत कविता–धारा की रूप रेखा जानने के लिए उसे प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर छः प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है

1. भारतेन्दु युग (सन् 1857 से 1902) ।
2. द्विवेदी युग (सन् 1902 से 1916) ।
3. छायावादी युग (सन् 1916 से 1936) ।
4. प्रगतिवादी युग (सन् 1936 से 1943) ।
5. प्रयोगवादी और नवकाव्य युग (1943 से 1990)।
6. उत्तर आधुनिक युग (1990 से आज तक) ।

यद्यपि आधुनिक काल का आरम्भ सन 1857 से माना जाता है। किंतु आरम्भिक 15–18 वर्ष की कविता को संक्रांति युग की कविता कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें रीतिकालीन श्रृंगारिक तथा भारतेंदु कालीन प्रवृत्तियों का समन्वय–सा दिखाई पड़ता है।

भारतेन्दु युग–

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1855–85) को हिन्दी–साहित्य के आधुनिक युग का प्रतिनिधि माना जाता है। भारतेंदु युग ने हिंदी कविता को रीतिकाल के श्रृंगारपूर्ण और राज–आश्रय के वातावरण से निकाल कर राष्ट्रप्रेम, समाज–सुधार आदि की स्वस्थ भावनाओं से ओत–प्रेत कर उसे सामान्य जन से जोड़ दिया उन्होंने कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन और हरिश्चंद्र पत्रिका निकाली। साथ ही अनेक नाटकों की रचना की। उनके प्रसिद्ध नाटक हैं– चंद्रावली, भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी। ये नाटक रंगमंच पर भी बहुत लोकप्रिय हुए। इस काल में निबंध, नाटक, उपन्यास तथा कहानियों की रचना हुई। इस काल के लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधा चरण गोस्वामी, उपाध्याय बदरीनाथ चौधरी 'प्रेमघन', लाला श्रीनिवास दास, बाबू देवकी नंदन खत्री, और किशोरी लाल गोस्वामी आदि उल्लेखनीय हैं। इनमें से अधिकांश लेखक होने के साथ–साथ पत्रकार भी थे।

लाल श्रीनिवासदास के उपन्यास परीक्षागुरू को हिन्दी का पहला उपन्यास कहा जाता है। कुछ विद्वान श्रद्धाराम फुल्लौरी के उपन्यास भाग्यवती को हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं। बाबू देवकीनंदन खत्री का चंद्रकांता तथा चंद्रकांता संतति आदि इस युग के प्रमुख उपन्यास हैं। ये उपन्यास इतने लोकप्रिय हुए कि इनको पढ़ने के लिये बहुत से अहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी। इस युग की कहानियों में राजा शिवप्रसाद, सितारे–हिन्द की राजा भोज का सपना महत्त्वपूर्ण है।

द्विवेदी युग–

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम पर ही इस युग का नाम द्विवेदी युग रखा गया। सन १६०३ ईस्वी में द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका के संपादन का भार संभाला। उन्होंने खड़ी बोली गद्य के स्वरूप को स्थिर किया और पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों के एक बड़े समुदाय को खड़ी बोली में लिखने को प्रेरित किया। इस काल में निबंध, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं समालोचना का अच्छा विकास हुआ।

इस युग के निबंधकारों में पं महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, श्याम सुंदर दास, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाल मुकंद गुप्त और अध्यापक पूर्ण सिंह आदि उल्लेखनीय हैं। इनके निबंध गंभीर, ललित एवं विचारात्मक हैं, किशोरीलाल गोस्वामी और बाबू गोपाल राम गहमरी के उपन्यासों में मनोरंजन और घटनाओं की रोचकता है। हिंदी

कहानी का वास्तविक विकास द्विवेदी युग से ही शुरू हुआ। किशोरी लाल गोस्वामी की इंदुमती कहानी को कुछ विद्वान हिंदी की पहली कहानी मानते हैं। अन्य कहानियों में बंग महिला की दुलाई वाली, शुक्ल जी की ग्यारह वर्ष का समय, प्रसाद जी की ग्राम और चंद्रधर शर्मा गुलेरी की उसने कहा था महत्त्वपूर्ण हैं। समालोचना के क्षेत्र में पद्मसिंह शर्मा उल्लेखनीय हैं। हरिऔध, शिवनंदन सहाय तथा राय देवीप्रसाद पूर्ण द्वारा कुछ नाटक लिखे गए।

छायावाद युग

कविता की दृष्टि से इस काल में एक दूसरी धारा भी थी जो सीधे सीधे स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ी थी। इसमें माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, नरेंद्र शर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, आदि के नाम उल्लेखनीय है।

इस युग की प्रमुख कृतियों में जय शंकर प्रसाद की कामायनी और आँसू सुमित्रानंदन पन्त का पल्लव, गुंजन और वीणा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की गीतिका और अनामिका, तथा महादेवी वर्मा की यामा, दीपशिखा और सांध्यगीत आदि कृतियां महत्वपूर्ण हैं। कामायनी को आधुनिक काल का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कहा जाता है।

छायावादोत्तर काल में हरिवंशराय बच्चन का नाम उल्लेखनीय है। छायावादी काव्य में आत्मपरकता, प्रकृति के अनेक रूपों का सजीव चित्रण, विश्व मानवता के प्रति प्रेम आदि की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रगतिवाद

सन 1936 के आसपास से कविता के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन दिखाई पड़ा प्रगतिवाद ने कविता को जीवन के यथार्थ से जोड़ा। प्रगतिवादी कवि कार्ल मार्क्स की समाजवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। इस काल में मानव मन के सूक्ष्म भावों को प्रकट करने की क्षमता हिंदी भाषा में विकसित हुई।

युग की मांग के अनुरूप छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपनी बाद की रचनाओं में प्रगतिवाद का साथ दिया। नरेंद्र शर्मा और दिनकर ने भी अनेक प्रगतिवादी रचनाएं कीं। प्रगतिवाद के प्रति समर्पित कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह, रामविलास शर्मा, त्रिलोचन शास्त्री और मुक्तिबोध के नाम उल्लेखनीय हैं। इस धारा में समाज के शोषित वर्ग –मजदूर और किसानों–के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गयी, धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक विषमता पर चोट की गयी और हिंदी कविता एक बार फिर खेतों और खलिहानों से जुड़ी, लेकिन एक नये अंदाज में।

प्रयोगवाद

प्रगतिवाद के समानांतर प्रयोगवाद की धारा भी प्रवाहित हुई। अज्ञेय को इस धारा का प्रवर्तक स्वीकर किया गया। सन 1943 में अज्ञेय ने तार सप्तक का प्रकाशन किया। इसके सात कवियों में प्रगतिवादी कवि अधिक थे। रामविलास शर्मा, प्रभाकर माचवे, नेमिचंद जैन, गजानन माधव मुक्तिबोध, गिरिजा कुमार माथुर और भारतभूषण अग्रवाल ये सभी कवि प्रगतिवादी हैं। इन कवियों ने कथ्य और अभिव्यक्ति की दृष्टि से अनेक नए नए प्रयोग किये। अतः तारसप्तक को प्रयोगवाद का आधार ग्रंथ माना गया। अज्ञेय द्वारा संपादित प्रतीक में इन कवियों की अनेक रचनाएं प्रकाशित हुई।

नई कविता और समकालीन कविता

सन 1953 ईस्वी में इलाहाबाद से नई कविता पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका में नई कविता को प्रयोगवाद से भिन्न रूप में प्रतिष्ठित किया गया। दूसरा सप्तक(1951), तीसरा सप्तक (1959) तथा चौथे सप्तक के कवियों को भी नए कवि कहा गया। वस्तुतः नई कविता को प्रयोगवाद का ही भिन्न रूप माना जाता है। इसमें भी दो धराएं परिलक्षित होती हैं।

व्यक्ति की निजता को सुरक्षित रखने का प्रयत्न करने वाली धारा जिसमें अज्ञेय, धर्मवीर भारती, कुंवर नारायण, श्रीकांत वर्मा,जगदीश गुप्त प्रमुख हैं तथा प्रगतिशील धारा जिसमें गजानन माधव मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन शास्त्री, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह तथा सुदामा पांडेय धूमिल आदि उल्लेखनीय हैं। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना में इन दोनों धराओं का मेल दिखाई पड़ता है। इन दोनो ही धाराओं में अनुभव की प्रामाणिकता, लघुमानव की प्रतिष्ठा तथा बौधिकता का आग्रह आदि प्रमुख प्रवृत्तियां हैं। साधारण बोलचाल की शब्दावली में असाधारण अर्थ भर देना इनकी भाषा की विशेषता है।

समकालीन कविता में गीत नवगीत और गजल की ओर रूझान बढ़ा है। आज हिंदी निरंतर गतिशील और व्यापक होती हुई काव्यधारा में संपूर्ण भारत के सभी प्रदेशों के साथ ही साथ संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय हो रही है। इसमें आज देश विदेश में रहने वाले अनेक नागरिकताओं के असंख्य विद्वानों और प्रवासी भारतीयों का योगदान निरंतर जारी है।

गद्य साहित्य के विकास के एक सामान्य सी समझ के लिए साहित्य इतिहास की इन धाराओं से रूबरू होना भी आवश्यक है।

रामचंद्र शुक्ल एवं प्रेमचंद युग

गद्य के विकास में इस युग का विशेष महत्त्व है। पं. रामचंद्र शुक्ल (1884–1941) ने निबंध, हिन्दी साहित्य के इतिहास और समालोचना के क्षेत्र में गंभीर लेखन किया। उन्होंने मनोविकारों पर हिंदी में पहली बार निबंध लेखन किया। साहित्य समीक्षा से संबंधित निबंधों की भी रचना की। उनके निबंधों में भाव और विचार अर्थात् बुद्धि और हृदय दोनों का समन्वय है। हिंदी शब्दसागर की भूमिका के रूप में लिखा गया उनका इतिहास आज भी अपनी सार्थकता बनाए हुए है। जायसी, तुलसीदास और सूरदास पर लिखी गयी उनकी आलोचनाओं ने भावी आलोचकों का मार्गदर्शन किया। इस काल के अन्य निबंधकारों में जैनेन्द्र कुमार जैन, सियारामशरण गुप्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी और जयशंकर प्रसाद आदि उल्लेखनीय हैं।

कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद ने क्रांति ही कर डाली। अब कथा साहित्य केवल मनोरंजन, कौतूहल और नीति का विषय ही नहीं रहा बल्कि सीधे जीवन की समस्याओं से जुड़ गया। उन्होंने सेवा सदन, रंगभूमि, निर्मला, गबन एवं गोदान आदि उपन्यासों की रचना की। उनकी तीन सौ से अधिक कहानियां मानसरोवर के आठ भागों में तथा गुप्तधन के दो भागों में संग्रहित हैं। पूस की रात, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, नमक का दरोगा तथा ईदगाह आदि उनकी कहानियां खूब लोकप्रिय हुई। इसकाल के अन्य कथाकारों में विश्वंभरनाथ शर्मा

कौशिक, वृंदावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, उपेन्द्रनाथ अश्क, जयशंकर प्रसाद, भगवतीचरण वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद का विशेष स्थान है। इनके चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जैसे ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास और कल्पना तथा भारतीय और पाश्चात्य नाट्य पद्यतियों का समन्वय हुआ है। लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, जगदीशचंद्र माथुर आदि इस काल के उल्लेखनीय नाटककार हैं।

अद्यतन काल

इस काल में गद्य का चहुंमुखी विकास हुआ। पं हजारी प्रसाद द्विवेदी, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, नंददुलारे वाजपेयी, नगेंद्र, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा डॉ. रामविलास शर्मा आदि ने विचारात्मक निबंधों की रचना की है। हजारी प्रसाद द्विवेदी,विद्यानिवास मिश्र, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, विवेकी राय, और कुबेरनाथ राय ने ललित निबंधों की रचना की है।हरिशंकर परसांई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, रवींन्द्रनाथ त्यागी, तथा के पी सक्सेना के व्यंग्य आज के जीवन की विद्रूपताओं के उद्घाटन में सफल हुए हैं।

जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, इलाचंद्र जोशी, अमृतलाल नागर, रांगेय राघव और भगवती चरण वर्मा ने उल्लेखनीय उपन्यासों की रचना की। नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, अमृतराय, तथा राही मासूम रजा ने लोकप्रिय आंचलिक उपन्यास लिखे हैं। मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मन्नू भंडारी, कमलेश्वर, भीष्म साहनी, भैरव प्रसाद गुप्त, आदि ने आधुनिक भाव बोध वाले अनेक उपन्यासों और कहानियों की रचना की है। अमरकांत, निर्मल वर्मा तथा ज्ञानरंजन आदि भी नए कथा साहित्य के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।

प्रसादोत्तर नाटकों के क्षेत्र में लक्ष्मीनारायण लाल, लक्ष्मीकांत वर्मा, तथा मोहन राकेश के नाम उल्लेखनीय हैं। कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा बनारसीदास चतुर्वेदी आदि ने संस्मरण रेखाचित्र व जीवनी आदि की रचना की है। शुक्ल जी के बाद पं हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंद दुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र,रामविलास शर्मा तथा नामवर सिंह ने हिंदी समालोचना को समृद्ध किया।

वर्तमान में समय के बदलने के साथ ही विधाओं में भी बदलाव आया है। कहानी, कविता, रिपोर्ताज, डायरी, यात्रा वृतान्त व अन्य विधाएं भी अपने कलेवर और रूप में बदल रही हैं। अनेक रचनाकारों की बहुविध रचनाएं अनेकानेक माध्यमों से प्रकाशित हो रही हैं और चर्चा में आ रही हैं। हमारे अपने समय के रचनाकारों में विमल कुमार, विनोद कुमार शुक्ल, कात्यायनी, राजेश जोशी, उदय प्रकाश, संजय, जितेन्द्र, जया जादवानी, आदि महत्वपूर्ण हैं। इन रचनाकारों की रचनाएं इंटरनेट पर कविताकोश और गद्यकोश पर खोजी और पढ़ी जा सकती हैं।

4QHF47

-: वाहन चलाते समय वाहन में रखे जाने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेज :-

चालक अनुज्ञा पत्र :- वाहन चलाते समय चालक को वैद्य अनुज्ञा पत्र (ड्रायविंग लायसेंस) साथ रखना अनिवार्य होता है।

पंजीयन प्रमाण- पत्र :- सभी प्रकार के डीजल/पेट्रोल/इलेक्ट्रिक पावर से चलने वाले वाहनों के लिए परिवहन विभाग द्वारा जारी पंजीयन प्रमाण-पत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) रखना आवश्यक होता है।

फिटनेस प्रमाण-पत्र :- व्यवसायिक प्रयोग में आने वाले वाहनों के सभी कलपुर्जों को दुरूस्त रखना अतिआवश्यक है। अतः ऐसे वाहनों को फिटनेस प्रमाण-पत्र की आवश्यकता होती है।

बीमा प्रमाण-पत्र :- सभी प्रकार के डीजल/पेट्रोल/इलेक्ट्रिक पावर से चलने वाले वाहनों के लिए बीमा प्रमाण-पत्र (इंश्योरेंस सर्टिफिकेट) रखना आवश्यक होता है।

प्रदूषण प्रमाण-पत्र :- डीजल/पेट्रोल चलित वाहनों के लिए कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित रखने तथा पर्यावरण को बनाये रखने हेतु पदूषण नियंत्रण प्रमाण-पत्र रखना आवश्यक होता है।